दैनिक
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्
नवप्रदेश
प्रदेश के साथ पूरा देश...

अंदर के पृष्ठों पर
3 राजधानी — मुख्यमंत्री ने स्व-सहायता ...
4 अभिव्यक्ति — छात्रों की 'क्षात्रवृत्ति' के सवाल?
9 मनोरंजन/व्यापार — काम के प्रति इमानदार हैं कार्तिक...
11 खेल — वर्ल्ड कप टीम के लिए आईपीएल...

www.navpradesh.com
रायपुर, शनिवार 4 जनवरी, 2020, पौष शुक्ल पक्ष-नवमी, विक्रम संवत-2075 वर्ष-08 अंक-320 पृष्ठ-12 मूल्य-3 रुपए
छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, झारखंड, से एक साथ प्रकाशित

आज बेबाक

राजस्थान के कोटा स्थित सरकारी अस्पताल में सौ मासूम बच्चों ने दम तोड़ दिया। किन्तु वहां की सरकार की संदेनशीलता नहीं जागी। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत यह कुतर्क दे रहे है कि भाजपा शासनकाल में हर साल एक हजार बच्चों की मौत होती थी लेकिन उनके कार्यकाल में सिर्फ 900 बच्चे ही मरे है। वहीं दूसरी तरफ उक्त अस्पताल का दौरा करने जब स्वास्थ्य मंत्री के आने की खबर मिली तो प्रशासन ने उनके स्वागत के लिए अस्पताल प्रांगण में ग्रीन कार्पेट बिछा दिया। नौनिहालों की मौत पर भी जिनका दिल नहीं पसीजता ऐसे असंवेदनशील और अकर्मण्य नेताओं को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।

खास खबर

इलाहाबाद कुलपति के खिलाफ राष्ट्रपति ने दिए जांच के आदेश

नई दिल्ली, (वार्ता)। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इलाहाबाद केंद्रीय विश्विद्यालय के कुलपति आर एल हंगलू का इस्तीफा मंजूर कर लिया है और उनके खिलाफ जांच शुरू करने के आदेश भी दिए हैं। गौरतलब है कि श्री हंगलू ने 31 दिसम्बर को ही निजी कारणों से इस्तीफा दे दिया था। उनपर वित्तीय अनियमितता और अकादमिक भ्रष्टाचार के भी आरोप थे और राष्ट्रीय महिला आयोग ने भी उनके खिलाफ रिपोर्ट दी थी।

दुनिया की सबसे ऊंची पटेल की दूसरी प्रतिमा का अनावरण

अहमदाबाद, (वार्ता)। दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा 182 मीटर ऊंची स्टेच्यू ऑफयूनिटी के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल की दूसरी सबसे ऊंची प्रतिमा का गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने आज यहां पाटीदार समुदाय की संस्था सरदारधाम के यहां वैष्णोदेवी सर्किल के समीप स्थित परिसर में अनावरण किया। 70 हजार किलो वजन और 50 फुट ऊंची यह प्रतिमा हालांकि स्टेच्यू ऑफ यूनिटी की तुलना में खासी छोटी है पर यह सरदार पटेल की दुनिया भर में दूसरी सबसे ऊंची प्रतिमा है।

पिनाराई ने 11 राज्यों के सीएम को लिखा पत्र

नई दिल्ली। नागरिकता संशोधन कानून को लेकर केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने 11 राज्यों झारखंड, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, महाराष्ट्र, बिहार, आंध्र प्रदेश, पुदुचेरी, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान और ओडिशा के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखा है। इस पत्र में उन्होंने कहा है कि धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र को बचाने की जरूरत है।

गरजे सीएम भूपेश और बन गए आदिवासियों की आवाज, कईयों की सिट्टी-पिट्टी गुम

जंगल वनवासियों का है, वन अफसर और एनजीओ का नहीं

- बोले वन अधिकारी-एनजीओ खुद को इसका मालिक न समझें
- जंगल अफसरों और एनजीओ की भूमिका को भी आड़े हाथों लिया

नवप्रदेश संवाददाता

रायपुर। वन विभाग के सम्मेलन में आमंत्रित मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ऐसे दहाड़े कि जंगल विभाग के आला अफसर भी सहम गए और जंगल से जुड़ी एनजीओ को भी दिन में तारे नजर आ गए। छत्तीसगढ़ के जल, जंगल, जमीन का असली मालिक सीएम ने वनवासियों को बताया। यही नहीं जंगल में रह रहे आदिवासियों को काबिज बताए जाने पर इतने तल्ख हुए कि वे वन विभाग के अफसरों को हिदायती लहजे में बोले आप लोग जंगल के मालिक नहीं है। उन्हों ने यहीं चुप्पी नहीं साधी बल्कि एनजीओ को भी आड़े हाथों लेते हुए कहा एनजीओ से भी सरकार को समुचित सहयोग नहीं मिल रहा है। सम्मेलन में आदिवासियों की आवाज बनकर दहाड़े सीएम भूपेश बघेल को सुनकर कईयों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने वन पर काबिज आदिवासियों की आवाज उठाते हुए वन विभाग के अधिकारियों के प्रति तल्खी दिखाते हुए कहा कि वे जंगल के मालिक नहीं है। वहां रहने वाले वनवासी हैं। अधिकारी इस बात को न भूलें। उन्होंने एनजीओ को भी आड़े हाथों लेते हुए कहा कि एनजीओ से भी सहयोग सरकार को नहीं मिल रहा है। वन आधारित जलवायु सक्षम आजीविका की दिशा में क्रांतिकारी शेष पृष्ठ 8 पर

सम्मेलन में ये भी थे मौजूद

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के अलावा मंत्री प्रेमसाय टेकाम के अलावा वन अमला, पर्यावरण विशेषज्ञ, जल विशेषज्ञ के साथ समिति के अनेक सदस्य मौजूद थे।

पट्टा नहीं लिखवाया तो क्या गलत हो गए...

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी जिम्मेदारी की उनकी जीवन शैली बेहतर हो। जंगल के लोगों की प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने हमारा लक्ष्य है। आज जंगल में इंसान तो क्या जानवर भी नहीं रहना चाहते। हाथी, बन्दर, शेर जंगल छोड़ते जा रहे हैं। उनकी आवश्यकता की पूर्ति जंगल में नहीं हो पा रही। जलवायु परिवर्तन, दोहन जैसी वजह है। इनकी आवश्यकता कि पूर्ति की जिम्मेदारी हमारी है। उन्होंने कहा कि जशपुर में चायपत्ती का उत्पादन और बस्तर में भी चाय व काफी का उत्पादन की कोशिश करें। गौठान होगा तो लोग ज्यादा से ज्यादा दूसरे कामों में लग सकेंगे। जंगल में रहने वाले लोगों ने अपने नाम पट्टा नहीं लिखवाया तो क्या ये उनकी गलती है। आदिवासियों के खेतों में भी सिंचाई की व्यवस्था होनी चाहिए।

बदली-बारिश ने बिगाड़ा मौसम का मिजाज, और बढ़ेगी ठंड

नश्तर सी चल रहीं सर्द हवाएं, घरों और गर्म कपड़ों में कैद प्रदेश

स्कूलों की छुट्टियां अब 4 से बढ़ाकर 6 जनवरी तक

नवप्रदेश संवाददाता

रायपुर। पश्चिमी विक्षोभ के असर से मौसम में आए बदलाव के बीच कल प्रदेश में चौतरफा बेमौसम बारिश रिकार्ड की गई है। इससे मौसम का मिजाज पूरी तरह से बिगड़ गया है। इधर मौसम विभाग ने आज के लिए भी यलो अलर्ट घोषित किया हुआ है। इस बीच कड़ाके की ठंड जारी है और अब बारिश थमने के बाद गहरा धुंध छाने की उम्मीद है। इधर प्रशासन ने भी मौसम के बदले रूख को देखते हुए प्रदेश में स्कूल की छुट्टियां 4 जनवरी तक बढ़ाने का आदेश गुरुवार को जारी किया था। अब मौसम में तब्दीलियां नहीं होती देख यह आदेश 6 जनवरी तक बढ़ाने का आदेश आज जारी किया गया है। ज्ञात हो कि कल गुजरात के ऊपर एक चक्रवाती सिस्टम तैयार हो गया था। यह सिस्टम पश्चिमी मध्यप्रदेश तक पहुंच गया और इसका कुछ असर उत्तरी छत्तीसगढ़ में भी दर्ज किया गया। चक्रवाती शेष पृष्ठ8 पर

बीएसपी के ब्लास्ट फर्नेस में गैस रिसाव, डीजीएम सहित 5 गम्भीर

- मौत का ठिकाना बन गया है बीएसपी प्लांट
- सभी प्रभवितो को सेक्टर9 अस्पताल में किया गया भर्ती

नवप्रदेश संवाददाता

भिलाई। उत्पादन की दृष्टि से एशिया के सबसे बड़े स्टील प्लांट में से एक छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के भिलाई इस्पात संयंत्र में गैस रिसाव की खबर सामने आ रही है। गैस रिसाव शेष पृष्ठ 8 पर

2014 हादसे में 6 लोगों की जान गई थी

भिलाई इस्पात संयंत्र में जून-2014 में जहरीली गैस के रिसाव से दो उप महाप्रबंधकों समेत छह लोगों की मौत हो गई थी और करीब 40 लोग घायल हो गए थे। अगस्त 2018 में भी स्टील प्लांट में हादसे हुए थे।

2018 में गैस पाइप लाइन ब्लास्ट में 12 की गई जान

भिलाई स्टील प्लांट (बीएसपी) के इतिहास में अब तक के सबसे बड़े हादसे में एक अधिकारी समेत 12 लोगों की मौत हो गई। हादसा उस वक्त हुआ जब क्षतिग्रस्त गैस पाइप लाइन का मेंटेनेंस किया जा रहा था।

राजनांदगांव की मेयर बनीं कांग्रेस की हेमा देशमुख

- भाजपा से हुई क्रॉस वोटिंग पार्टी प्रत्याशी शोभा सोनी हारीं

राजनांदगांव। राजनांदगांव नगर निगम के महापौर पद का चुनाव शुक्रवार को संपन्न हो गया। नवनिर्वाचित पार्षदों ने कांग्रेस की हेमा देशमुख को महापौर चुन लिया। हेमा ने भाजपा से अपनी प्रतिद्वंद्वी शोभा सोनी को 11 वोटों से पराजित कर दिया। चुनाव इसलिए खास रहा क्योंकि इसमें भाजपा पार्षदों की ओर से क्रॉस वाटिंग की गई। हाल ही में संपन्न नगरीय निकाय चुनाव में कांग्रेस के 22 पार्षद चुनकर आए थे। इन 22 पार्षदों के साथ ही हेमा देशमुख को शेष पृष्ठ 8 पर

सभापति पद भी कांग्रेस को

सभापति पद के चुनाव में कांग्रेस के हरिनारायण धकेता ने भाजपा के शिव वर्मा को पराजित कर दिया। महापौर चुने जाने से पहले पार्षदों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। इस दौरान जिले के प्रभारी मंत्री मोहम्मद अकबर, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष मोहन मरकाम समेत अन्य नेता मौजूद रहे।

सीसीए पर बोले अमित शाह

पूरा विपक्ष एक हो जाए, फैसले से पीछे नहीं हटेंगे

- कांग्रेस को लग रही माताओं की हाय, कोटा के बच्चों की चिंता करें सीएम गहलोत

जोधपुर(ए.)। केन्द्रीय गृहमंत्री एवं बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने शुक्रवार को राजस्थान के जोधपुर में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के समर्थन में एक रैली को संबोधित किया।

रैली के दौरान शाह ने कहा कि सीएए पर कांग्रेस ने वोट बैंक के लिए दुष्प्रचार किया, इसलिए बीजेपी को कानून के समर्थन में जनजागरण अभियान की शुरुआत करनी पड़ी। रैली में शाह ने लोगों से बीजेपी के द्वारा सीएए का समर्थन जताने के लिए जारी किए गए टोल-फ्री नंबर पर मिस्ट कॉल भी कराई। इस दौरान शाह ने कोटा के जेके लोन अस्पताल में बच्चों की मौत को लेकर राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत पर भी निशाना साधा। साथ ही शाह ने कांग्रेस पर सावरकर के अपमान का आरोप भी लगाया। शाह ने रैली के दौरान कांग्रेस पर स्वतंत्रता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर के अपमान का आरोप लगाते हुए हमला शेष पृष्ठ 8 पर

'कोटा में बच्चे रोज मर रहे हैं चिंता कीजिए'

गृहमंत्री ने कहा, 'गहलोत साहब, हमने तो आपके घोषणा पत्र से एक पॉइंट उठाकर उसपर अमल कर लिया, और आप उसका विरोध कर रहे हैं। ये सब बाद में करिएगा, कोटा में जो बच्चे हर रोज मर रहे हैं उसकी चिंता कर लीजिए, माताओं की हाय लग रही है।'

नागरिकता देने का कानून है सीएए

शाह ने विपक्ष को चुनौती देते हुए कहा कि आज कांग्रेस, ममता दीदी, एसपी, बीएसपी, केजरीवाल और कम्युनिस्ट सारे लोग सीएए का विरोध कर रहे हैं। मैं इन सारी पार्टियों को चुनौती देता हूं कि कहीं पर भी इस कानून पर चर्चा करने के लिए आ जाओ।

अमेरिकी हमले में मेजर सहित सात की मौत

बगदाद, (स्पूतनिक)(वार्ता)। इराक के बगदाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर शुक्रवार को हुये रॉकेट हमले में ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स के क्वाड्स फोर्स के कमांडर मेजर जनरल कासिम सोलेमानी सहित सात लोग मारे गये। अमेरिकी दूतावास के जनसंपर्क के प्रभारी वरिष्ठ अधिकारी मोहम्मद जाबरी ने कहा कि बगदाद हवाई अड्डे पर किये गये हमले में इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स के क्वाड्स फोर्स के कमांडर मेजर

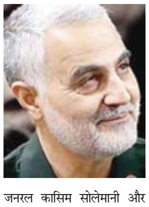

जनरल कासिम सोलेमानी और इराकी विद्रोहियों के चार सदस्य और 'दो मेहमान ' मारे गये है।

हत्या का बदला लेकर रहेंगे : खमनेई

तेहरान, (वार्ता)। ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता अयातुल्लाह अली खमनेई ने शुक्रवार को अमेरिका के इराक में रॉकेट हमले पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि अपराधियों से इसका बदला जरूर लिया जायेगा। अमेरिकी सुरक्षा बलों ने बगदाद के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास शुक्रवार को रॉकेट हमले कर ईरान के शेष पृष्ठ 8 पर

विकास विज्ञान, प्रौद्योगिकी की सफलता पर निर्भर : मोदी

बेंगलुरु (वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकविदों से भारत के ग्रामीण समुदाय को सशक्त बनाने की दिशा में कड़ी मेहनत का शुक्रवार को आह्वान किया और कहा कि देश का भावी विकास विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सफ्लता पर निर्भर होगा। मोदी ने यहां गांधी कृषि विजन्ना केंद्र परिसर में आयोजित पांच दिवसीय 10वें भारतीय विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि विकास में तेजी लाने के लिए भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के परिदृश्य को बदले जाने की आवश्यकता है।

सीएम योगी ने ट्वीट की कविता, गहलोत बोले- गेमचेंजर होगा प्रियंका का 'भगवा'

लखनऊ(ए.)। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी के भगवा वाले बयान को लेकर पक्ष-विपक्ष की बयानबाजी थमने का नाम नहीं ले रही है। एक ओर जहां यूपी के सीएम योगी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की कविता को पोस्ट करते हुए भगवा के महत्व को बताने की कोशिश की है, वहीं राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि प्रियंका का भगवा पर कॉमेंट गेमचेंजर साबित होगा। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ के ऑफिस की ओर से किए गए ट्वीट में भगवा को लेकर एक कविता पोस्ट की गई है। इस कविता के साथ

भगवा की शान योगीजी हैशटैग भी लगाया गया है। एक के बाद लगातार किए गए कई सारे ट्वीट्स में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की 'मेरी इक्यावन कविताएं' नामक पुस्तक से 'गगन में लहरता है भगवा हमारा' कविता के भी अंश लिए गए हैं।

गरमा-गरम

निकाय चुनाव

दावेदार हैं तीन तो किसके हाथ आएगी राजधानी की चाबी, तेज हुई अटकलें, मेयर के रेसकोर्स में थ्री डार्क हॉर्स केंडिडेट्स भी शामिल

प्रमोद बेहतर प्रबंधक, एजाज दिलेर तो ज्ञानेश जानकार

सुकांत राजपूत

रायपुर। अगले 48 घंटे बाद साफ हो जाएगा कि राजधानी रायपुर की चाबी किसके हाथों में होगी। 6 जनवरी को महापौर का ताज किसके सिर होगा और कौन शहर का प्रथम नागरिक कहलाएगा यह तय हो जाएगा। लेकिन, 48 घंटे पूर्व ही तीन खास नामदारों पर अटकलें तेज हो गई हैं। सियासी कयासों के बीच नाम का ऐलान होने से पहले ही चाल, चरित्र और चेहरे की चर्चा होने लगी है। तीन खास दावेदारों के अलावा भी शेष पृष्ठ 8 पर

संभावित मेयरों पर लोगों का आंकलन

प्रमोद बनाम बेहतर मैनेजमेंट

पं. रविशंकर विश्वविद्यालय परिसर के कैफेट ऐरिया में लोगों का कहना था कि सीटिंग मेयर प्रमोद दुबे उन्हें बेहतर प्रबंधक लगते हैं। रायपुर महापौर की भूमिका में उनका मैनेजमेंट ही था कि राजधानी की चारों दिशाओ में वह नजर आया है। कांसेप्ट, रायपुरिया की पसंद और पुराने ताल-तलैया का सौंदर्यीकरण वाला प्रबंधन सराहनीय रहा है। प्रमोद दुबे को अच्छे प्रबंधनकर्ता के तौर पर स्वीकारते हैं और सभी का परसेप्शन है कि राजधानी के लिए ऐसे व्यक्ति को ही कमान मिलनी चाहिए जो अनुभव, उम्र, प्रबंधन के अलावा जीते पार्षदों के बीच ब्रिज का काम कर सके। नए वार्ड से उनकी जीत भी यही दर्शाती है।

ज्ञानेश प्रशासनिक ज्ञान के भंडार

एक केबिनेट मंत्री के रिश्तेदार, संगठन और नगरीय निकाय में कई अहम जिम्मेदारियां निभा चुके ज्ञानेश शर्मा के संबंध में पुराने कांग्रेस कार्यालय से लेकर नए प्रदेश कार्यालय राजीव भवन में पार्टी के लोगों ने अपने अंदाज में उनका आंकलन किया। कुल मिलाकर अधिकांश ने ज्ञानेश शर्मा को बेहतर जानकार, प्रशासनिक और नगरीय निकाय का अनुभवी बताया है। वरिष्ठता के साथ ही सीधी-सपाट बातों के लिए भी उन्हें लोगों ने सराहा है। रायपुर से बेहतर वाकिफ ज्ञानेश शर्मा को भी महापौर पद के लिए कारगार उम्मीदवार मानते हैं सब।

एजाज युवा, जोशीले और दिलेर

उम्र में भले ही एजाज दोनों खाटी कांग्रेसियों से कम हैं, लेकिन यूथ वाला जोश और नफा-नुक्सान सोचे बिना दिलेरी से खर्च करने वाले पार्षदों में वे टॉप पर माने जाते हैं। बैजनाथपारा, छोटापारा, बैरनबाजार के सार्वजनिक ठियों पर लोगों से बेतकल्लुफ चर्चा में एजाज ढेबर को मेयर के लिए बेहतर माना है। कईयों ने उनका विधानसभा चुनाव के वक्त दिलेरी से प्रदेश प्रभारी व स्क्रिनिंग कमेट से भिड़ जाने और सहीं को सहीं, गलत को गलत बताने वाला नेता मानते हैं। हालाकि पार्टी के कई जीते पार्षदों से उनकी नजदीकियां कम हैं पर लोग यह मानते हैं की सीएम भूपेश के वे सबसे करीब हैं।

श्रीकुमार, आकाशदीप, अजीत भी हैं

श्रीकुमार मेनन वरिष्ठता, अनुभव और शहर के अलावा कांग्रेस संगठन में भी अच्छी पकड़ रखते हैं। पार्टी के पार्षदों और विपक्षी दलों के बीच भी वे लोकप्रिय हैं पर मेयर जैसे पद के लिए जो मैनेजमेंट चाहिए उसमें वे पीछे हैं। जबकि मैनेजमेंट में संगठन के अहम पदाधिकारी आनंद कुकरेजा के सुपुत्र अजीत कुकरेजा का नाम आता है। मेयर पोस्ट के लिए रेस में डार्क हार्स के तौर पर अजीत युवा, फ्रेश चेहरा और जीत दर्ज करने वाले नेता बन गए हैं। परंतु राजधानी का महापौर बनने लायक कमांडिंग पॉवर में उनपर भरोसा उनके वार्ड के लोग ही नहीं करते। कांग्रेस के सबसे वरिष्ठ नेता व पूर्व मंत्री के करीबी आकाशदीप शर्मा के समर्थक उन्हें मेयर पद के लिए मजबूत प्रत्याशी मानते हैं और सोशल मीडिया में मुहिम भी छेड़े हुए हैं, लेकिन पहली बार पार्षद बने आकाशदीप के लिए मेयर की रेस में टिक पाना मुश्किल मानते हैं चाहने वाले।

पुलिस हुई सख्त तो एक साल में 46 हजार लोगों ने बनाया ड्राईविंग लाइसेंस

गाजियाबाद(ए.)। चालान कटने के डर से 2019 में 2018 की तुलना में 46 हजार लोगों के अधिक लाइसेंस बने हैं। वहीं अभी भी दस हजार से अधिक आवेदन लंबित हैं, जिनके टाइम स्लॉट अगले वर्ष के मिले हैं। वर्ष 2019 में एक लाख 22 लोगों के ड्राइविंग लाइसेंस बने हैं। इसमें अधिकांश वह लोग हैं, जो 10-15 साल से बिना लाइसेंस के वाहन चला रहे थे।

ट्रैफिक नियमों के अनुसार, वाहन चलाते समय चालक के पास ड्राइविंग लाइसेंस होना आनिवार्य है, लेकिन इसमें कुछ लोग लापरवाही भी बरतते थे। कुछ लोग बिना डीएल के गाड़ी चलाते हैं। इसमें कुछ नौसिखिया और नाबालिग किशोर होते हैं। इससे उनकी और सड़कों पर चलने वाले अन्य लोगों की जान को खतरा रहता है। यातायात नियम के अनुसार 18 वर्ष से अधिक उम्र, प्रशिक्षित और स्वस्थ व्यक्ति का वाहन चला सकता है।

अप्रैल 2019 में प्रदेश सरकार की ओर से यातायात नियमों के नियमों को उल्लंघन करने वालों के खिलाफ जुर्माना शुल्क में दो से तीन गुनी बढ़ोतरी कर दी थी। वहीं सितंबर माह में केंद्र सरकार की ओर से पूरे देश में ड्राइविंग लाइसेंस के वाहन चलाने में जुर्माना शुल्क पांच गुना बढ़ाकर पांच हजार रुपये कर दिया गया है, जिसको लेकर लोग अधिक सतर्क हो गए। इसको लेकर लाइसेंस बनवाने के लिए लोगों की मारामारी शुरू हो गई। लाइसेंस के आवेदन एक साथ बढ़ने से लाइसेंस की वेबसाइट भी प्रभावित हो गई थी।

अभी भी औसतन एक दिन में एक हजार से अधिक लोग आवेदन कर हैं। इस कारण निर्धारित तिथि का मिलने वाला टाइम स्लॉट भी रुक गया और अधिकांश लोगों को वह नहीं मिल पा रहा। इसके चलते परिवहन विभाग ने टाइम स्लॉट को 240 से बढ़ाकर 400 कर दिया है।

सितंबर के बाद दोगुनी संख्या

केंद्र सरकार की ओर से एक सितंबर से प्रमशन शुल्क में बढ़ोतरी कर दी गई थी। हालांकि यह गाजियाबाद में लागू नहीं हुआ। गाजियाबाद में प्रदेश सरकार की ओर से अप्रैल माह में जुर्माना शुल्क में बढ़ोतरी की थी। लोगों ने लाइसेंस बनवाने शुरू कर दिए। सितंबर माह में लाइसेंस आवदेनों की संख्या दोगुनी बढ़ गई थी।

आंकड़ा एक लाख के पार

अभी तक गाजियाबाद में एक साल में औसतन 50 से 60 हजार लोगों के ड्राइविंग लाइसेंस बनते थे।वहीं इस वर्ष सभी सालों का रिकॉर्ड टूट गया। इस साल गाजियाबाद परिवहन विभाग में इस वर्ष 10 दिसंबर को ही एक लाख लाइसेंस बनने का आंकड़ा पार हो गया था। एक दिन में औसतन 450-500 लाइसेंस बनते हैं, जिसमें लर्निंग, रिन्यूअल लाइसेंस हैं।

ममता बनर्जी का पीएम मोदी पर बड़ा हमला: आप भारत के प्रधानमंत्री हैं या पाकिस्तान के एंबेसडर?

कोलकाता(ए.)। नागरिकता संशोधन कानून और एनआरसी पर मचे बवाल के बीच पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर बड़ा हमला बोला है। सिलीगुड़ी में एक

जनसभा को संबोधित करते वक्त ममता बनर्जी ने पीएम मोदी से सवाल किया कि आप भारत के प्रधानमंत्री हैं या पाकिस्तान के एंबेस्डर? गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कर्नाटक में एक जनसबा को संबोधित करते वक्त पाकिस्तान का जिक्र किया था और कहा था कि जो लोग संसद के खिलाफ नारेबाजी कर रहे हैं, उन्हें पाकिस्तान में हो रहे अत्याचार के खिलाफ लगाने का सुझाव दिया था। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्य के सिलीगुड़ी में रैली के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से सवाल किया, ''भारत एक बड़ा देश है जिसकी संस्कृति और विरासत समृद्ध है, आप हमारे देश की पाकिस्तान से क्यों बार-बार तुलना करते हैं? ममता ने मोदी से सवाल किया कि आप भारत के प्रधानमंत्री हैं या पाकिस्तान के राजदूत (एंबेस्डर)? आप हर मामले पर पाकिस्तान का महिमामंडन क्यों करते हैं?

उत्तर प्रदेश: नोएडा SSP वैभव कृष्ण से आईजी मेरठ रेंज ने मांगी सफाई, वायरल हुआ था कथित अश्लील वीडियो

नई दिल्ली(ए.)। नोएडा एसएसपी वैभव कृष्ण के कथित अश्लील वीडियो वायरल होने के बाद आज उत्तर प्रदेश के डीजीपी ओपी सिंह

और अपर मुख्य सचिव अवनीश अवस्थी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने कहा कि एसएसपी वैभव कृष्ण ने कथित वायरल वीडियो होने पर मुकदमा दर्ज करा दिया है। इस मामले की जांच आईजी मेरठ रेंज आलोक सिंह की निगरानी में एसपी मेरठ संजीव सुमन कर रहे हैं। कई अन्य एजेंसियां भी जांच में सहयोग कर रही हैं। डीजीपी ओपी सिंह ने कहा कि सरकार से पत्राचार की गोपनीयता अनधिकृत तरीके से लीक करने के मामले में एसएसपी नोएडा वैभव कृष्ण से स्पष्टीकरण तलब किया किया गया है। आईजी मेरठ रेंज ने उनसे स्पष्टीकरण मांगा है।

कोटा में बच्चों की मौत पर सियासत: मायावती ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को बर्खास्त करने की मांग की

लखनऊ(ए.)। राजस्थान के कोटा के एक अस्पताल में करीब 104 बच्चों की मौत पर सियासी बयानबाजी भी जारी है। कोटा में

बच्चों की मौत पर गलहोत सरकार को निशाने पर लेने वाली बसपा प्रमुख मायावती ने मुख्यमंत्री को बर्खास्त करने की मांग की है। बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती ने राजस्थान के कोटा के जेके लोन अस्पताल में बच्चों की मौत के लिए राज्य के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को जिम्मेदार ठहराते हुये उन्हें पद से हटाये जाने की मांग की है। मायावती ने शुक्रवार को ट्वीट कर कहा कि राजस्थान में 100 माताओं की कोख उजड़ने के मामले में कांग्रेस को केवल अपनी नाराजगी जताना ही काफी नहीं है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को चाहिए कि वह वहां के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को तुरंत हटा कर वहां अपने किसी सही व्यक्ति को सत्ता में बैठाना चाहिए।

कोटा: 100 बच्चों की मौत वाले जेके लोन अस्पताल में मंत्री के स्वागत में बिछा कालीन, मीडिया को देखकर हटाया

कोटा। राजस्थान में कोटा के जेके लोन अस्पताल में 100 मासूमों की मौत के बाद अब राज्य सरकार हरकत में आई है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री रघु शर्मा आज अस्पताल पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। हालांकि मंत्री के अस्पताल पहुंचने से पहले उनके लिए कालीन बिछाया गया था लेकिन मीडिया के जमावड़े के बाद प्रशासन ने कालीन को हटवा दिया ताकि किसी प्रकार की किरकिरी से बचा जा सके।

सीधे ट्रंप ने दिया था आदेश, बगदाद एयरपोर्ट पर मारे गए ईरानी जनरल कासिम सुलेमानी

- ईरान की ताकतवर कुद्स फोर्स के जनरल कासिम सुलेमानी S हमले में मारे गए
- इस हमले में सुलेमानी समेत 8 लोग मारे गए

वॉशिंगटन(ए.)। ईरान के बेहद ताकतवर जनरल कासिम सुलेमानी के खिलाफ ऐक्शन की इजाजत खुद अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने दी थी। अपने गृह राज्य फ्लोरिडा में समुद्र किनारे बड़े फॉर्म हाउस में छुट्टियां मना रहे ट्रंप ने अपनी सेना को हमला करने की इजाजत दी थी और अमेरिकी हमले में ईरान का यह बाहुबली जनरल मारे गए।

वाइट बोला- सीधे ट्रंप ने दिया था आदेश

वाइट हाउस ने एक बयान जारी कर बताया कि राष्ट्रपति ट्रंप के आदेश के बाद अमेरिकी सेना ने विदेशों में मौजूद अपने जवानों की सुरक्षा के लिए निर्याणक कार्रवाई करते हुए कासिम सुलेमानी को मार डाला। सुलेमानी रिवॉल्यूशनरी गार्ड कॉर्प के 'कुद्स फोर्स' के चीफ थे। अमेरिका इस बल को आतंकी संगठन घोषित कर चुका है। अमेरिका ने कहा कि जनरल सुलेमानी इराक लगातार अमेरिकी राजनयिकों और जवानों पर हमले की योजना बना रहे थे।

सुलेमानी की मौत के बाद ट्रंप का 'फ्लैग ट्वीट'

सुलेमानी की मौत के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने बिना टेक्स्ट वाला एक ट्वीट किया। इस ट्वीट में अमेरिकी झंडा लगा है। ट्रंप के इस ट्वीट को एक संदेश के तौर पर देखा जा रहा है। बता दें कि सुलेमानी कई बार ट्रंप को चेतावनी दे चुके थे। इराक में अमेरिकी दूतावस पर ईरान समर्थित मिलिशिया द्वारा हमला करने के बाद अमेरिका आगबबूला हो गया था। ट्रंप ने साल के पहले दिन ही ट्वीट कर ईरान को अंजाम भुगतने की चेतावनी दी थी।

एयरपोर्ट पर किया गया हमला

अल मुहांदिस एक काफिले के साथ कुछ अन्य लोगों के साथ बगदाद एयरपोर्ट पर सुलेमानी को रिसीव करने पहुंचे थे। सुलेमानी का विमान लेबनान या सीरिया से आया था। कार्गो एरिया के पास सुलेमानी प्लेन से उतर लोगों से मिल ही रहे थे कि तभी अमेरिका के हमले में सुलेमानी समेत 8 लोग मारे गए।

हमले में उड़ गए चीथड़े

इराक के पॉप्युलर मोबलाइजेशन फोर्स के दो अधिकारियों ने बताया कि इस हमले में सुलेमानी के शरीर के चीथड़े उड़ गए जबकि उन्हें मुहांदिस का शव ही नहीं मिला। एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि सुलेमानी के शव की पहचान उनके द्वारा पहनने वाली अंगूठी से हुई।

ईरान की धमकी, होंगे बुरे परिणाम

अपने बाहुबली कमांडर के मारे जाने से बौखलाए ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह अली खमैनी ने चेतावनी देते हुए कहा कि अमेरिका को इसका खामियाजा भुगतना होगा। ईरान ने सुलेमानी की मौत पर तीन दिन के राजकीय शोक की घोषणा की है। खबरों के मुताबिक, ईरान ने सिक्यॉरिटी बॉडी की आपात बैठक भी बुलाई है।

ईरान के लिए कितने अहम थे अमेरिकी हमले में मारे गए मेजर जनरल कासिम सुलेमानी

बगदाद(ए.)। फ्लोरिडा में अपने घर पर छुट्टियां मना रहे अमेरिकी राष्ट्रपति ने गुरुवार आधी रात (भारतीय समयानुसार शुक्रवार सुबह 8 बजे) एक ट्वीट किया। इसमें ट्रंप ने एक शब्द नहीं लिखा, बस अमेरिका के झंडे को पोस्ट भर कर दिया। दरअसल ट्रंप के इस ट्वीट की क्रोनोलॉजी इराक के बगदाद में अमेरिकी सेना के उस एयर स्ट्राइक से जुड़ी थी, जिसमें उसने ईरान के सबसे ताकतवर जनरल कासिम सुलेमानी को मार डाला।

4 दशकों से अमेरिका के लिए सिरदर्द थे कासिम सुलेमानी

खासतौर पर इराक में उनकी अहम भूमिका थी। बगदाद को इस्लामिक स्टेट के आतंक से बचाने के लिए उनके ही नेतृत्व में ईरान समर्थक फोर्स का गठन हुआ था, जिसका नाम पॉप्युलर मोबिलाइजेशन फोर्स था। सुलेमानी अमेरिका के कितने पुराने दुश्मन थे, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 1980 के दशक में ईरान और इराक के बीच खूनी जंग में उनकी अहम भूमिका थी।

इराक में बनाई थी ईरान समर्थक मिलिशिया

इराक और सीरिया में इस्लामिक स्टेट जैसे खूंखार आतंकी संगठन के मुकाबले उन्होंने कुर्द लड़ाकों और शिया मिलिशिया को एकजुट करने का काम किया था। इराक में ईरान के समर्थन से तैयार पॉप्युलर मोबिलाइजेशन फोर्स को कासिम ने ही तैयार किया था। कासिम सुलेमानी का मारा जाना ईरान के लिए बड़े झटके की तरह है, जो इराक और सीरिया में अमेरिकी दखल के खिलाफहै।

दुश्मनों को कुचलने के लिए मशहूर थे सुलेमानी

ईरान के सुदूर दक्षिणपूर्व इलाके के एक गरीब परिवार से आने वाले सुलेमानी इस्लामिक रिवॅल्यूशनरी गार्ड में शामिल हुए थे। इस गार्ड का गठन देश की सुरक्षा और विचारधारा को कड़ाई से लागू करने के लिए किया गया था। पड़ोसी इराक के साथ 1980 और 1988 में हुए युद्ध के दौरान रिवॅल्यूशनरी गार्ड के पास राजनीतिक और आर्थिक शक्ति भी आई।

अमेरिकी दूतावास पर हमले का लिया बदला

कासिम सुलेमानी को अमेरिका ने ऐसे वक्त में मारा है, जब कुछ दिनों पहले ही बगदाद स्थित उसके दूतावास पर हुए हमले में ईरान का हाथ होने की बात सामने आ रही थी। इस हमले के बाद अमेरिका रक्षा मंत्री मार्क एस्पर ने कहा था कि खेल अब बदल चुका है।

गणतंत्र दिवस की परेड के लिए चुनी गई 22 झांकियां

- महाराष्ट्र, केरल, बिहार और पश्चिम बंगाल को नहीं मिली जगह

नई दिल्ली(वार्ता)। गणतंत्र दिवस की परेड में 22 झांकियों को रक्षा मंत्रालय से मंजूरी मिल गई है। परेड में 16 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की झांकियां दिखाई जाएंगी जबकि 6 झांकियां केंद्रीय मंत्रालयों से संबंधित होंगी। मंत्रालय को कुल 56 प्रस्ताव मिले थे जिनमें से 22 को मंजूरी दी गई है। रक्षा मंत्रालय ने बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और केरल के प्रस्तावों को खारिज कर दिया है।

रक्षा मंत्रालय के इस कदम पर राजनीति भी शुरू हो गई है। केरल के कानून मंत्री ने इसे लेकर केंद्र सरकार पर आरोप लगाया कि यह फैसला केरल के प्रति उसके व्यवहार को दर्शाता है। वहीं, पश्चिम बंगाल ने केंद्र पर बदले की भावना से ग्रस्त होने का आरोप लगाया। हालांकि, रक्षा मंत्रालय का कहना है कि देशभर से आए झांकियों के प्रस्तावों को एक समिति के पास भेजा जाता है और किसे मंजूरी देनी है, किसे नहीं यह उसी समिति का फैसला होता है।

इन 6 केंद्रीय मंत्रालयों को मिली जगह

केंद्रीय मंत्रालयों की बात की जाए तो वित्त मंत्रालय, पेयजल एवं शौचालय विभाग, उद्योग मंत्रालय, गृह मंत्रालय, केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय और जहाजरानी मंत्रालय की झांकियों को भी रिपब्लिक परेड में शामिल किया गया है।

सावरकर के सम्मान के लिए कांग्रेस के खिलाफ कूद पड़े संजय राउत

नई दिल्ली(वार्ता)। कांग्रेस सेवादल की 'वीर सावरकर कितने वीर' बुकलेट में दावा किया गया है कि दक्षिणपंथी विचारक वीर सावरकर और महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोड्से के बीच समलैंगिक संबंध थे। इस पर शिवसेना के नेता संजय राउत ने सावरकर पर कांग्रेस की बुललेट में छपे दावे की आलोचना की है और कहा है कि यह उनके दिमाग में गंदगी को दिखाता है।

संजय राउत ने कहा है कि वीर सावरकर एक महान व्यक्ति थे और एक महान व्यक्ति रहेंगे। एक वर्ग उसके खिलाफ बात करता रहता है, यह उनके दिमाग में गंदगी को दिखाता है, जो भी वे हो सकते हैं। आपको बता दें कि बुकलेट में वीर सावरकर के बारे में कई विवादति दावे किए गए हैं। लिखा गया है- 'ब्रह्मचर्य का व्रत लेने से पहले नाथूराम गोडसे के एक ही शारीरकि संबंध का ब्योरा मिलता है वीर सावरकर से।' बुकलेट में यह दावा भी किया गया है कि सावरकर ने अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं पर यौन हिंसा को बढ़ावा दिया और मुस्लिमों की मौत पर उत्सव मनाते थे। पुस्तिका में यह दावा भी है कि अंडमान की सेल्यूलर जेल से रिहा होने के बाद सावरकर ने अंग्रेजों से पैसे तक लिए थे। इससे पहले कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा था कि 'मेरा नाम राहुल सावरकर' नहीं है। इस पर संजय राउत ने कहा था कि हिंदुत्व विचारक के प्रति श्रद्धा को लेकर कोई ÷समझौता÷ नहीं किया जा सकता। राउत ने कहा कि हम महात्मा गांधी और पंडित नेहरू का सम्मान करते हैं। कृपया वीर सावरकर का अपमान न करें। जो समझदार होता है उसे ज्यादा बताने कि जरूरत नहीं होती।

अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट से संजय राउत ने मराठी भाषा में ट्वीट किया, जिसका मतलब था- 'वीर सावरकर न केवल महाराष्ट्र बल्कि देश के भी देवता हैं।

नितिन गडकरी का शिवसेना पर हमला, कहा-

मुख्यमंत्री पद के लिए विचारधारा से किया समझौता

नई दिल्ली (ए.)। केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने महाराष्ट्र में कांग्रेस-एनसीपी के साथ गठबंधन की सरकार बनाने को

लेकर शुक्रवार को शिवसेना पर बड़ा हमला बोला। गडकरी ने शिवसेना पर मुख्यमंत्री पद को लेकर अपनी विचाराधारा के साथ समझौता करने का आरोप लगाया है। केन्द्रीय मंत्री ने कहा- शिवसेना ने मुख्यमंत्री पद के लिए अपनी विचारधारा के साथ समझौता किया है, और सत्ता के लिए कांग्रेस-एनसीपी-शिवसेना एक साथ आई है। उन्होंने आगे कहा कि शिवसेना सिर्फभगवा होने का दावा करती है लेकिन वास्तविकता ये है कि वे कांग्रेस के रंग में रंग चुकी है।

सियासी खेल | मध्य प्रदेश कांग्रेस सेवादल की ओर से विनायक दामोदर सावरकर को लेकर बांटी गई किताब पर राजनीतिक घमासान मचा

कांग्रेस सेवादल की किताब- 'गोडसे-सावरकर में समलैंगिक संबंध', संजय राउत, चक्रपाणि का हमला

नई दिल्ली/भोपाल/मुंबई (ए.)। मध्य प्रदेश कांग्रेस सेवादल की ओर से स्वतंत्रता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर को लेकर बांटी गई किताब पर सियासी संग्राम छिड़ गया है। किताब में दावा किया गया है कि सावरकर के महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे के साथ अवैध संबंध थे। बीजेपी के सवाल उठाने के बाद अब शिवसेना ने भी मामले पर चुप्पी तोड़ते हुए इसे सावरकर का अपमान करार दिया है। शिवसेना सांसद संजय राउत ने कहा कि सावरकर महान थे और महान रहेंगे। उन्होंने कहा कि जो उनकी आलोचना करते हैं उनके दिमाग में गंदगी भरी हुई है। वहीं, हिंदू महासभा के अध्यक्ष चक्रपाणि ने इसे बेहूदा बताया और राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए उन्हें होमोसेक्शुअल (समलैंगिक) तक बोल दिया।

अखिल भारतीय हिंदू महासभा के अध्यक्ष स्वामी चक्रपाणि ने इस मुद्दे पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, 'यह हिंदू महासभा के पूर्व अध्यक्ष सावरकरजी के खिलाफ बिल्कुल बेहूदे आरोप हैं। इसी तरह हमने भी सुना है कि राहुल गांधी होमोसेक्शुअल हैं।' सावरकर पर मचे घमासान पर महाराष्ट्र में कांग्रेस की सहयोगी शिवसेना ने भी कांग्रेस को आड़े हाथों लिया। शिवसेना सांसद संजय राउत ने कहा, 'वीर सावरकर एक महान व्यक्तित्व थे और हमेशा रहेंगे। एक वर्ग उनके खिलाफ बोलता रहता है जो उनके दिमाग की गंदगी को दिखाता है कि कितना हद तक वे गिर सकते हैं।'

उमा बोलीं- कांग्रेस का दिमागी संतुलन बिगड़ा

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा, 'वह दिन दूर नहीं जब वे (कांग्रेस) यह किताब पढ़ेंगे- जिन्ना कैसे नेता थे। कांग्रेस के आदर्श जिन्ना हैं इसलिए वे सावरकर को गाली देते हैं।' उमा भारती ने कांग्रेस के साथ-साथ राहुल गांधी पर भी निशाना साधा। उमा भारती ने कहा, 'वह दिन दूर नहीं जब गांधी परिवार जय श्रीराम और भारत माता की जय बोलेगा। महापुरुषों का अपमान करना कांग्रेस की आदत है। कांग्रेस का दिमागी संतुलन खो गया है।' उन्होंने कहा कि उद्धव को मुख्यमंत्री पद प्यारा है। क्या उद्धव इस्तीफा देंगे?

भोपाल में बांटी गई थी बुकलेट

दरअसल पूरा विवाद कांग्रेस सेवादल की ओर से बांटी गई किताब के बाद शुरू हुआ। इस बुकलेट पर लिखा है- 'वीर सावरकर कितने वीर।' भोपाल में आयोजित 10 दिवसीय ट्रेनिंग कैंप में इस किताब को बांटा गया, जिसमें महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे का भी जिक्र है। किताब में लिखा है कि गोडसे और सावरकर के बीच शारीरिक संबंध थे।

कांग्रेस के आदर्श जिन्ना हैं: गिरिराज सिंह

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने भी कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि वे सावरकर को गाली देते हैं क्योंकि उनके आदर्श जिन्ना हैं। बीजेपी की वरिष्ठ नेता उमा भारती ने सावरकर को लेकर सोनिया और राहुल गांधी पर निशाना साधा है। उन्होंने मामले में महाराष्ट्र के सीएम उद्धव ठाकरे की चुप्पी पर भी सवाल उठाए।

न्यूज गैलरी

सीएम का बिलासपुर दौरा अपरिहार्य कारणों से निरस्त

रायपुर। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का आज बिलासपुर दौरा रद्द कर दिया गया है। इसके अलावा उनका कांकेर दौरा भी अपरिहार्य कारणों से रद्द कर दिया गया है। सूत्रों ने बताया कि बिलासपुर दौरे के करीब आधे घंटे पहले ही सूचना आई कि अपरिहार्य कारणों से मुख्यमंत्री श्री बघेल बिलासपुर नहीं जा पाएंगे। इसी तरह आज उनका कांकेर में भी कार्यक्रम था, जिसे रद्द कर दिया गया है। ज्ञात हो कि बिलासपुर में आज मुख्यमंत्री श्री बघेल का कई कार्यक्रम तय हो चुका था।

गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू जगदलपुर प्रवास पर

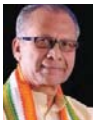

रायपुर। गृह मंत्री श्री ताम्रध्वज साहू आज जगदलपुर प्रवास पर हैं। वे विभागीय बैठकों के साथ ही विभिन्न स्थानीय कार्यक्रमों में शामिल होने के बाद 4 जनवरी को शाम 6.40 बजे रायपुर लौटेंगे। श्री साहू आज अपरान्ह तीन बजे से शाम चार बजे तक सर्किट हाऊस जगदलपुर में लोक निर्माण विभाग और गृह विभाग की समीक्षा बैठक लेंगे। वे जगदलपुर में रात्रि विश्राम करेंगे और अगले दिन विभिन्न स्थानीय कार्यक्रमों में शामिल होने के बाद रायपुर लौटेंगे।

केंद्र सरकार की श्रमिक विरोधी नीतियों के खिलाफ 8 को राष्ट्रव्यापी हड़ताल

रायपुर। केंद्र में पदस्थ मोदी सरकार द्वारा किसान श्रमिक जनविरोधी विरोधी नीतियों के खिलाफ अनेक संगठनों द्वारा 8 जनवरी को राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आव्हान किया गया है। उक्त हड़ताल में सीटू इंटक, एक्टू इंटक एटक एचएमएस बैंक बीमा बीएसएनएल बालको एवं अनेक संगठनों द्वारा बूढ़ापारा धरनास्थल में धरना दिया जाएगा। सामूहिक संघ के अध्यक्ष हरनाथ सिंह अतुल देशमुख, बृजेंद्र तिवारी एवं नरेश देवांगन ने जानकारी देते हुए बताया कि ट्रेड यूनियन प्रदेश अध्यक्ष एससी भट्टाचार्य के नेतृत्व में 12 सूत्रीय मांगों को लेकर विशाल प्रदर्शन किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ उरांव आदिवासी समाज का युवक-युवती परिचय सम्मेलन 12 को

रायपुर। प्रति वर्ष की भांति छत्तीसगढ़ उरांव समाज द्वारा आदिवासी विकास परिषद के बैनरतले 12 जनवरी को युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन टिकरापारा गोंडवाना भवन में किया गया है। उक्त सम्मेलन में समाज के युवक युवती सुबह 10. 30 बजे से 1 बजे के मध्य प्रारंभिक सत्र में शामिल होंगे। भोजनावकाश के बाद द्वितीय सत्र दो से पांच बजे के मध्य चलेगा जिसमें समाज की युवक युवती मंच पर आकर अपने बारे में विस्तारपूर्वक परिचय देंगे। पंजीयन के लिए युवक युवतियों से दो पासपोर्ट साइज का रंगीन फोटो और शैक्षणिक प्रमाण पत्र जमा करना अनिवार्य है।

बारिश के कारण किसानों को 2 और 3 जनवरी को जारी टोकन के पुनर्व्यवस्थापन की व्यवस्था की गई

रायपुर। प्रदेश में खरीफ विपणन वर्ष 2019-20 में किसानों से अब तक 32.63 लाख मेट्रिक टन धान का उपार्जन किया जा चुका है। गत दिनों प्रदेश के कुछ हिस्सों में आकस्मिक बारिश की स्थिति उत्पन्न हुई है। इसके कारण कुछ खरीदी केन्द्रों के फड़ के गीले होने की स्थिति निर्मित हुई है। इस स्थिति से निपटने के लिए किसानों को 2 और 3 जनवरी को धान बेचने हेतु जारी टोकन के पुर्नव्यवस्थापन की व्यवस्था की गई है। शासन द्वारा पंजीकृत किसानों के धान की निर्धारित पात्रता अनुसार खरीदी की समुचित व्यवस्था की गई है।

जिले के आंगनबाड़ी केन्द्रों में अवकाश

रायपुर। राज्य में पड़ रही कड़ाके की ठंड और शीतलहर के चलते जिला प्रशासन ने जिले के समस्त आंगनबागड़ी केन्द्रों को 4 जनवरी तक बंद रखने का आदेश जारी किया है।

मुख्यमंत्री ने स्व-सहायता समूहों द्वारा वनोपज से तैयार उत्पादों को सराहा

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने आज नवा रायपुर स्थित अरण्य भवन में विभिन्न वनमण्डलों के स्व-सहायता समूहों द्वारा वनोपजों से तैयार विभिन्न उत्पादों का अवलोकन किया और सराहा। जशपुर, कवर्धा, सूरजपुर वनमण्डलों के स्व-सहायता समूहों के उत्पादों में लाख से बनी चूड़ियां, जशपुर की चाय, शहद, च्यवनप्राश, विभिन्न वनौषधियों, जैविक चावल और जैविक उत्पादों आदि की प्रदर्शनी लगाई गई थी। जशपुर वनमंडल की वनप्रबंधन समिति सारुडीह, मरवाही वनमंडल के दानीकुंडी समिति, वन-धन स्व-सहायता समूह दानीकुंडी, सूरजपुर वनमण्डल, कवर्धा वनमण्डल की कुकदूर वन समिति द्वारा स्टॉल लगाए गए थे। झिटकू-मिटकू वन हस्तशिल्प कला समिति रायपुर के स्टॉल में बेलमेटल और लौहशिल्प की कलाकृतियां रखी गयी थी। मुख्यमंत्री स्टॉलों पर उत्पादों के संबंध में समूह के सदस्यों से जानकारी भी ली।

आदिमजाति विकास मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह, मुख्यमंत्री के सलाहकार द्वय श्री प्रदीप शर्मा और श्री विनोद वर्मा, वन विभाग के प्रमुख सचिव श्री मनोज कुमार पिंगुआ, प्रधान मुख्य वन संरक्षक श्री राकेश चतुर्वेदी सहित स्व-सहायता समूहों के सदस्य इस अवसर पर उपस्थित थे। मुख्यमंत्री 'वन आधारित जलवायु सक्षम आजीविका की दिशा में क्रांतिकारी बदलाव' विषय पर आयोजित एक दिवसीय परिचर्चा में शामिल होने अरण्य भवन पहुंचे थे।

तीन दिनों में सबसे गंभीर अपराधों का मूक गवाह बना टिकरापारा थाना

- बेरहम पिटाई, गोलीबारी और चाकूबाजी में दो मौत
- थाना क्षेत्र में गरीब का बहता रहा खून पुलिस बाद में पहुंची
- प्रेमी ने प्रेमिका को चाकू से गोदकर मारा, फिर लगा लिया फांसी

नवप्रदेश संवाददाता

रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के टिकरापारा थाना में महज चंद घंटों में ही खतरनाक जरायम घटित हुआ। 72 घंटे में पहली वारदात में एक गरीब फर्नीचर कारीगर को सरेआम गुंडा तत्वों में बेतहाशा पीटा, आरोपी गिरफ्तार नहीं हुए। फिर 24 घंटे पहले ही देर रात एक नारियल बेचने वाले गरीब की गोली मारकर हत्या कर दी गई। हत्यारे ने जान लेने के बाद मृतक के पैसों और पर्स पर भी हाथ साफ किया। इन दोनों ही मामलों में आरोपियों तक थाना पुलिस पहुंच भी नहीं पाई है कि एक प्रेमी ने थानातंर्गत प्रेमिका की चाकू से गोदकर हत्या कर दी फिर खुद भी फांसी के फंदे पर झूल गया। चौंकाने वाली बात यह कि लूट, हत्या, मारपीट और प्रेम संबंध में हत्या-आत्महत्या के ये चौंकाने वाले केस नए साल की शुरुआत में ही हुए हैं। इससे ज्यादा चौकाने वाली बात यह कि 48 घंटे पहले ही एसएसपी आरिफ हुसैन शेख ने राजधानी रायपुर में हुए अपराधों का आंकड़ा मीडिया के सामने पेश किया था।

मिली जानकारी के मुताबिक मृतक सुनील थापा नेपाल के काठमांडू के खोखरी गांव का राहने वाला है। जबकि मृतिका युवती रामेश्वरी ध्रुव महासमुंद के पिथौरा की रहने वाली है। दोनों एक फैमली ढाबा में शेफ का काम किया करते थे। बताया जाता है कि बीती रात ढाबा के करीब स्थित घर में दोनों के बीच देर रात तक वाद विवाद होता रहा। देखते ही देखते विवाद इतना बढ़ गया कि सुनील ने रामेश्वरी की धारदार हथियार से हत्या कर दी। बताया जाता है कि रामेश्वरी के सीने और पेट पर सुनील ने चाकू से की वार किया और मौके पर ही फांसी लगा ली। सुबह जब परिचितों ने उनके घर पर नजर दौड़ाई तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। घर में बिखरा खून और फांसी पर लटकती सुनील की लाश किसी बड़ी अनहोनी की ओर इशारा कर रही थी। हालांकि सुनील ने किस वजह से हत्या के बाद खुदकुशी की है इसका पता नहीं चल सका है

इस संबंध में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रफुल्ल ठाकुर ने बताया कि दोनों शवों को पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। उनके मुताबिक पीएम रिपोर्ट आने के बाद ही मामले का पता चल पाएगा, हालांकि पुलिस होटल-ढाबा कर्मियों से पूछताछ में जुटी है। गौरतलब है कि इसी इलाके में एक दिन पूर्व नारियल पानी बेचने वाले एक व्यापारी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

मुख्यमंत्री के निर्देश पर किसानों के लिए राज्य स्तरीय हेल्प लाइन नम्बर शुरू

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के निर्देश पर खरीफ वर्ष 2019-20 में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के संबंध में किसानों की शिकायत, सुझाव एवं पूछताछ के लिए राज्य स्तरीय किसान हेल्पलाइन नम्बर शुरू कर दिया गया है। साथ ही प्रदेश के किसानों को पुलिस हेल्पलाइन नम्बर 112 पर भी जानकारी लेने, शिकायत करने अथवा सुझाव देने की सुविधा दी गई है। प्रदेश के किसान हेल्पलाइन नम्बर 112 एवं 1967 तथा 1800-233-3663 पर जानकारी प्राप्त कर सकते है। यह हेल्पलाइन नम्बर सुबह 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक संचालित होंगे। हेल्पलाइन शुरू करने के संबंध में यहां मंत्रालय महानदी भवन से खाद्य विभाग के सचिव डॉ. कमलप्रीत सिंह द्वारा आदेश जारी कर दी गई है। जारी आदेश के अनुसार राज्य स्तरीय किसान हेल्पलाइन नम्बर पर कोई भी किसान धान उपार्जन केन्द्र से संबंधित जानकारी ले सकता है और अपनी शिकायत एवं सुझाव भी दर्ज करा सकता है। हेल्पलाइन के अलावा किसान अपनी शिकायत एवं सुझाव जनभागीदारी वेबसाइट httpÑ/ /khadya.cg.nic.in/ citizen/ citizenhome. asp& पर आनलाइन दर्ज करा सकते है।

रायपुर। सीएए व एनआरसी के विरोध में शुक्रवार को मुस्लिम बंधुओं ने विशाल रैली निकाली। बूढ़ा तालाब से निकली रैली कलेक्ट्रेट जाकर खत्म हुई, जहां कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा गया।

घटना-दुर्घटना/ क्राईम

प्रेमिका की हत्या करने के बाद युवक ने की आत्महत्या

रायपुर। राजधानी रायपुर के टिकरापारा इलाके में एक होटल के एक कमरे में एक युवक ने पहले अपनी प्रेमिका की चाकू से गोदकर हत्या कर दी फिर खुद भी फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

राजधानी के टिकरापारा इलाके में एक कारोबारी की गोली मारकर हत्या की घटना को कुछ घंटे ही हुए थे कि इस इलाके में फिर एक बड़ी वारदात हो गयी। घटना पचपेढ़ी स्थित एक होटल की है। बताया जा रहा है कि प्रेमी होटल का शेफ बताया जा रहा है, जिसका होटल की ही एक कर्मचारी के साथ प्रेम संबंध था। होटल के मालिक ने कर्मचारियों को होटल में ही कमरा दे रखा था। प्रेमी जोड़ा भी होटल के ही कमरे में रहते थे। ऐसी जानकारी मिली है कि आज तड़के युवक अपनी प्रेमिका के कमरे में आया। इसी दौरान दोनों के बीच किसी बात पर विवाद हो गया, जिसके बाद तैश में आकर युवक ने प्रेमिका को धारदार हथियार (चाकू) से गोदकर उसकी हत्या कर दी। इसके बाद खुद भी प्रेमिका के शव के बगल में ही फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस शवों को पीएम के लिए भेज कर घटना की जांच कर रही है।

सार्वजनिक स्थान पर शराब पीने से मना करने पर चाकू से हमला, जुर्म दर्ज

रायपुर। राजधानी के खमतराई इलाके में एक सार्वजनिक स्थान पर शराब पीने से मना करने की बात पर आरोपी ने एक युवक को चाकू से मारकर घायल कर दिया। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के

अनुसार खमतराई स्थित एक सुलभ शौचालय के पास आरोपी सलमान निवासी खमतराई वहां शराब पीने के लिए पहुंचा। प्रार्थी विवित सिंह 34 वर्ष ने जब उसे यहां शराब पीने से मना किया तो इस बात पर आरोपी विवित से झगड़ा करते हुए उसके जांघ पर चाकू से मारकर घायल कर दिया। प्रार्थी की रिपोर्ट पर पुलिस ने मामले में आरोपी के खिलाफ धारा 324 के तहत अपराध दर्ज किया है।

जेल रोड के पास विक्षिप्त व्यक्ति का शव मिला

रायपुर। राजधानी रायपुर के जेल रोड स्थित कृष्णा काम्पलेक्स के सामने एक विक्षिप्त वृद्ध का शव मिला है। उसकी मौत कड़ाके की ठंड से होने की आशंका जतायी जा रही है।

पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार आज सुबह राहगिरों ने पुलिस को सूचना दी कि कृष्णा काम्पलेक्स के पास एक वृद्ध मृत पड़ा हुआ है। पुलिस मौके पर पहुंचकर शव बरामद कर पीएम के लिए भेज दिया है। पुलिस के अनुसार मृतक कोई विक्षिप्त है जिसे कचहरी चौक के आसपास के इलाके में घूमते हुए देखा गया है। जिस स्थिति में वृद्ध का शव मिला है उससे यहीं आशंका जतायी जा रही है कि उसकी मौत कड़ाके की ठंड से हुई होगी। बहरहाल पुलिस ने शव को पीएम के लिए भेज दिया है।

कांग्रेस की चिंता किसानों की समस्याओं का करें त्वरित निराकरण

धान खरीदी केन्द्रों का निरीक्षण करें जनप्रतिनिधि : मोहन मरकाम

नवप्रदेश संवाददाता

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री एवं संचार विभाग के अध्यक्ष शैलेश नितिन त्रिवेदी ने बताया कि बेमौसम बारिश से किसानों को हुई परेशानियों को देखते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मोहन मरकाम ने सभी कांग्रेस के विधायकों, विधानसभा प्रत्याशियों, जिला कांग्रेस अध्यक्षों, ब्लाक कांग्रेस अध्यक्षों को निर्देश दिया है कि धान खरीदी में किसानों की समस्याओं का निराकरण करने के लिये सभी धान खरीदी केन्द्रों का दौरा करें और किसानों की समस्याओं का अविलंब निराकरण करें। कांग्रेस द्वारा धान खरीदी केन्द्रों हेतु बनाई गयी निगरानी समितियों को पूरी सक्रियता से किसानों के साथ खड़े होकर उनकी समस्याओं के निराकरण करें। किसी भी किसान की समस्याओं का निराकरण नहीं होने पर प्रदेश कांग्रेस के कंट्रोल रूम में इसकी सूचना देने के लिये निर्देशित किया गया है। ऐसे ही निर्देश कांग्रेस के मोर्चा संगठन और विभागों को भी दिये जा रहे है। कांग्रेस कंट्रोल रूम आज से इस कार्य में जुट जायेगा और लगातार सभी कांग्रेस विधायकों, जिला कांग्रेस अध्यक्षों और ब्लाक कांग्रेस अध्यक्षों से सतत् संपर्क में रहेगा।

किसान को भूपेश सरकार पर भरोसा है। किसान की कठिनाइयों में कांग्रेस सरकार किसानों के साथ है।

असाधारण आसूचना कुशलता पदक से नवाजे जाएंगे राज्य के तीन पुलिस अफसर

नवप्रदेश संवाददाता

रायपुर। राज्य पुलिस के तीन पुलिस अफसरों को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत किया जाएगा। केन्द्र सरकार छत्तीसगढ़ के तीन पुलिस कर्मियों को असाधारण आसूचना कुशलता पदक से सम्मानित करेगा। जिन तीन पुलिस कर्मियों को सम्मानित किया जाएगा।उनके एसआईबी की एएसपी गायत्री सिंह, विशेष शाखा के डीएसपी नजमुस साकिब और बिलापुर के विशेष शाखा में पदस्थ इंस्पेक्टर चित्रसेन सिंह खरसन का नाम शामिल है। डीजीपी डीएम अवस्थी ने तीनों पुलिस अफसरों को अपनी बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। डीजीपी श्री अवस्थी ने उम्मीद जताई है कि तीनों पुलिस अफसर भविष्य में भी और बेहतर काम करेंगे।

दैनिक नव प्रदेश
अभिव्यक्ति
रायपुर, शनिवार, 04 जनवरी 2020

संपादकीय

मासूमों की मौत का जिम्मेदार कौन

देश के सरकारी अस्पतालों की दूरदशा किसी से छिपी नहीं है। सरकारी अस्पताल में सिर्फ ये गरीब लोग उपचार कराने जाते है जो महंगे निजी अस्पतालों का खर्च वहन नहीं कर पाते। कमोवेश देश के हर राज्यों की चिकित्सा व्यवस्था खराब हो चली है। पहले उत्तर प्रदेश में सैकड़ो बच्चों को समय पर उपचार और आक्सीजन न मिल पाने के कारण काल का ग्रास बनना पड़ा था और अब राजस्थान के कोटा शहर स्थिति सरकारी अस्पताल में सौ से अधिक मासूम बच्चों की मौत हो गई। इस पर राजस्थान सरकार का असंवेदनशील रवैया शर्मनाक है। वहां के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत आंकड़ो की बाजीगरी दिखाने का काम कर रहे है। पहले उन्होने इस मासूम बच्चों की मौत को सामान्य घटना बताया था उसके बाद उन्होने कुतर्क दिया है कि पूर्ववर्ती भाजपा शासनकाल में प्रतिवर्ष 1000 बच्चों को मौत होती थी लेकिन उनके एक साल के कार्यकाल के दौरान 900 बच्चो की मौत हुई है जो भाजपा सरकार के शासनकाल से कम है। वहीं राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री रघु शर्मा जब उस अस्पताल के दौरे पर गए तो प्रशासन ने उनके स्वागत के लिए अस्पताल प्रंगण में ग्रीन कार्पेट बिछा दिया। जब यह खबर मीडिया में उछली तो आनन फानन में ग्रीन कार्पेट हटा दिया गया। मासूम बच्चों की मौत के मामले को लेकर विपक्ष ने अशोक गहलोत सरकार पर जमकर निशाना साधा है। बसपा प्रमुख मायावती ने तो कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा को आड़े हाथो लिया है, उन्होने कहा है कि प्रियंका गांधी वाड्रा उत्तर प्रदेश में तो गरीब पीड़ित परिवारों के बीच पहुंच जाती है लेकिन उन्होने न तो कोटा में उन माताओं से मिनला गवारा किया जिनकी गोद उजड़ गई है, यहां तक की उन्होने 100 बच्चों की मौत पर कोई बयान तक नहीं दिया। इस बीच कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने बच्चों की मौत पर राजस्थान सरकार से रिपोर्ट मांगी है और इस मामले को लेकर राज्य सरकार के प्रति अपनी नाराजगी व्यक्त की है। अब वहां के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सफाई देते फिर रहे है कि अस्पताल में उपचार के पर्याप्त प्रबंध किए गए है। सवाल यह उठता है कि आखिर सौ मासूम बच्चों की असमय मौत का जिम्मेदार कौन है। इस मामले में संबंधित लोगों की जिम्मेदारी तय करनी होगी और उन्हे दंडित करना होगा तभी इस तरह की हृहद विदारक घटनाओं की पुनरावृत्ती रोकी जा सकेगी।

विचार

विदेश नीतिः नरम-गरम, दोनों

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

कई लोग पूछ रहे हैं कि विदेश नीति के हिसाब से पिछला साल कैसा रहा ? मैं कहूंगा कि खट्टा-मीठा और नरम-गरम दोनों रहा। कश्मीर के पूर्ण विलय को चीन के अलावा सभी महाशक्तियों ने भारत का आतंरिक मामला मान लिया। सउदी अरब और संयुक्त अरब अमारात (यूएई) ने भी भारत का स्पष्ट समर्थन किया। कश्मीर में धारा 370 खत्म करने और उसके पूर्ण विलय ने दुनिया में यह संदेश भेजा कि भारत सरकार का रवैया पहले की तरह ढीला-ढाला नहीं रहेगा। कश्मीर के पूर्ण विलय पर तुर्की और मलेशिया-जैसे देशों ने थोड़ी बहुत आलोचना की लेकिन दुनिया के अधिकतर राष्ट्रों ने मौन धारण कर लिया था। भारत के पड़ौसी मुस्लिम राष्ट्रों- बांग्लादेश, मालदीव और अफगानिस्तान ने भी भारत का समर्थन किया। जहां तक पाकिस्तान का सवाल है, उसे तो कड़ा विरोध करना ही था। उसने किया भी लेकिन अंतरराष्ट्रीय जगत तब भी कश्मीर के सवाल पर तटस्थ ही रहा।

उसके पहले बालाकोट पर हुए भारत के हमले को चाहे पाकिस्तान ने 'हवाई' करार दे दिया हो लेकिन उसने मोदी सरकार की छवि में चार चांद लगा दिए। भारत-पाक संबंधों में इतना तनाव पैदा हो गया कि मोदी ने नए साल की शुभकामनाएं सभी पड़ौसी नेताओं को दी लेकिन इमरान को नहीं दीं। उधर इमरान ने करतारपुर साहब में सिखों के अलावा किसी के भी जाने पर पाबंदी लगा दी। यह हमारे उस नए नागरिकता कानून का जवाब मालूम पड़ता है, जिसमें पड़ौसी देशों के मुसलमानों के अलावा सबको शरण देने की बात कही गई है। इस कानून का सारी दुनिया में विरोध हो रहा है। इसने भारत में सारे विरोधी दलों को एक कर दिया है और सभी नौजवानों में जोश भर दिया है।

यही वह कारण है, जिसके चलते अब इस्लामी सहयोग संगठन पाकिस्तान में कश्मीर के बहाने सम्मेलन करके इस मुद्दे को उठाएगा। दुनिया की कई संस्थाएं मानव अधिकार के मामले को कश्मीर और नागरिकता के संदर्भ में उठा रही हैं। अमेरिका के साथ हमारी व्यापारिक गुत्थी अभी तक उलझी हुई है और चीन के साथ व्यापारिक असंतुलन बढ़ता ही जा रहा है। सीमा का सवाल ज्यों का त्यों है। हमारे नागरिकता पैंतरे से बांग्लादेश नाराज है। हमारे पड़ौसी देशों में चीन की घेराबंदी बढ़ रही है। अफगान-संकट के बारे में भारत की उदासीनता आश्चर्यजनक है। हमारी विदेश नीति में कोई दूरगामी और गहन व्यापक दृष्टि अभी तक दिखाई नहीं पड़ रही है।

छात्रों की 'क्षात्रवृत्ति' के सवाल?

कनक तिवारी

सामाजिक एकता सत्ता के कूड़ाघरों का तोहफा नहीं होती। हर लड़ाई में सत्ताधीश आखिर में हारता ही है। जनमत जानता है कि पुलिसिया मुकाबिले में लड्डू नहीं बंटते। नागरिकों की हड्डियां लोकतंत्र का ढांचा होती हैं। उन पर नेताओं और सत्ता का गोश्त चढ़ता है। उस पर चिकने चुपड़े कॉरपोरेटी स्नो पाउडर, इत्र फुलेल मलते हैं। ज़ाहिर है शुरुआती झटके तो लगेंगे। कांग्रेस और क्रांतिकारियों को भी जद्दोजहद करते 62 वर्ष बीते, तब अंगरेज गया। संविधान सभा में पत्थर की लकीर बने पूर्वजवचन दर्ज हैं कि धर्म के आधार पर नागरिकता का दावा नहीं हो सकता।

भारत का लोकतंत्र विधायिकाओं में करीब आधे अपराधी या आरोपी जनप्रतिनिधियों के मार्फत विधायन, अट्टहास, कर्तव्यहीनता, अवामपरस्ती, शाइस्तगी वगैरह का कोलाज़ वक्त की छाती पर लिखता रहता है। 2019 के आखिरी कुछ महीनों में केन्द्र सरकार की ताबड़तोड़ गति के चलते संविधान में कई अधिनियमों को सुधार लेने कदम उठाए गए। कानून की इबारतें कई बार धुली हुई पोशाकों की तरह हो जाती हैं जिनमें सिकुड़न रह जाती है। गृह मंत्रालय के पौरुष की मुद्रा को ऐसा लगा कि उसने इस्तरी चलाकर कानून और जनता की कमर दोनों को सीधा कर दिया। पहले कश्मीर और फिर कई अधिनियमों सहित नागरिकता अधिनियम को संसदीय बहुमत के रौब ने अपने विवादास्पद संशोधनों से औकात दिखा दी। दुनिया में पाठ्यपुस्तकें मासूमियत और सद्भावना में कहती रहती हैं भारत का आईन और ज़म्हूरियत नागरिक अधिकारों का नया, नायाब और माकूल फलसफा हैं।

संविधान के अनुच्छेद 370 की प्रक्रिया में राष्ट्रपति के अधिकारों का ब्यौरा है। बदलाव तो हुआ अनुछेद 35-ए में। वह जम्मू कश्मीर के नागरिकों को ऐतिहासिक कारणों और पेचीदे रिश्तों से उपजकर अनुरक्षा देता भरोसेमंद अहसास कराता रहा था। संविधान मादरी हुकूमत है। सैकड़ों अधिनियम बर्थ कंट्रोल कानूनों से परे बड़ी संख्या में उपजती संतान हैसियत में हैं। आज़ादी की दहलीज़ पर हिन्दू-मुसलमान नफरत का दावानल उनमें भर गए ज़हर के कारण जल रहा था। वैसी नफरत तो मिथकों के जातीय युद्ध में भी नहीं पढ़ी सुनी गई। लाशें जलती रहीं। सड़कों पर बलात्कार होता रहा। यूरो-अमेरिकी गोरे देश धमकाते रहे। खाने के अनाज का टोटा हो। सदियों से पस्तहिम्मत देश की पैरों पर खड़ा होने की लड़खड़ाते कदमों पर फिर भी हौसलामंद कोशिश हो। ऐसे में भी संविधान सभा ने सर्वसम्मति से ऐलान किया कि कोई भी हिन्दू या सिख या अन्य मतावलंबी धर्म के आधार पर अन्य देश से आकर भारत की नागरिकता का स्वयमेव हकदार नहीं होगा।

भलमनसाहत में संतान पीढ़ी पर भरोसा करना कभी कभी त्रासदियों का कारण भी होता है। सरकार और संसद को अनुच्छेद 11 में पुरखों की पीढ़ी ने संसद संतानों का अधिकार-विलेख लिख दिया। कहा नागरिकता जिसे दे देनी हो दे दो। छीननी हो छीन लो। यह भी तो कहा था कि केवल धर्म के आधार कोई भी भारत की नागरिकता पाने का अधिकारी नहीं होगा। मतदाताओं के मतिभ्रम के कारण संसद में बहुमत तो जुगाड़ा जाता है। सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट निकट दृष्टि और दूर दृष्टि की बीमारियों को दूर करने के चश्माघर हैं। दृष्टिबाधित, कलर ब्लाइंड, आंखों की रोशनी से रहित हो जाएं, जन्मांध हों तो चश्माघर चिकित्सालय नहीं होता। हमवतन मुसलमान अज्ञात ग्रहों से आए एलियन नहीं हैं। सदियों से हिन्दुस्तान की संस्कृति, भाषा, मजहब, राष्ट्रीयता, इंसानियत और देशसेवा में जज़्ब हो गए हैं। लौह अयस्क जैसे इस्पात में तब्दील होता है या दूध पनीर में।

सदियों से हिन्दुस्तान की संस्कृति, भाषा, मजहब, राष्ट्रीयता, इंसानियत और देशसेवा में जज़्ब हो गए हैं। लौह अयस्क जैसे इस्पात में तब्दील होता है या दूध पनीर में। बंगाल की खाड़ी में डूबती गंगा को गंगोत्री जाने का फरमान सुनाना संविधान विरोधी फतवा है। पहली बार किसी राष्ट्रीय मुद्दे पर विद्यार्थियों ने मोर्चा संभाला। सियासी पार्टियों की तरह चंदा नहीं बटोरा। किराए के झंडाबरदार और गालबजाऊ गुंडे नहीं बुलाए। पूरी सब्जियों के पैकेट, रिक्शे और बस का भाड़ा और रटाए गए फिकरे छात्रों की हिकमत में नहीं हैं। वे हिन्दुस्तानी कौम की दिल की मुनासिब अनुपात में चल रही धड़कनें हैं। वे औसत नागरिकों बल्कि अपने अभिभावकों से ज़्यादा तेज़ गति से उन्नत होते मानव विश्वविद्यालय हैं।

बंगाल की खाड़ी में डूबती गंगा को गंगोत्री जाने का फरमान सुनाना संविधान विरोधी फतवा है। पहली बार किसी राष्ट्रीय मुद्दे पर विद्यार्थियों ने मोर्चा संभाला। सियासी पार्टियों की तरह चंदा नहीं बटोरा। किराए के झंडाबरदार और गालबजाऊ गुंडे नहीं बुलाए। पूरी सब्जियों के पैकेट, रिक्शे और बस का भाड़ा और रटाए गए फिकरे छात्रों की हिकमत में नहीं हैं। वे हिन्दुस्तानी कौम की दिल की मुनासिब अनुपात में चल रही धड़कनें हैं। वे औसत नागरिकों बल्कि अपने अभिभावकों से ज़्यादा तेज़ गति से उन्नत होते मानव विश्वविद्यालय हैं। उन्होंने संविधान की आयतों को केवल घोखा नहीं है। उनकी फितरत को ज़ेहन में जज़्ब भी किया है। उनके लिए दिल्ली, लखनऊ, लंदन, टोक्यो, सिंगापुर, करांची, ढाका, कोलकाता किसी क्रिकेट टीम के विश्व एकादश खिलाड़ियों जैसा संकुल हैं। सियासतदां विद्यार्थियों ने सोचा इनके साथ हो लो, अपनी दुकानें भी चल निकलेगी। ये बच्चे एक नए हिन्दुस्तान का भ्रूण रचते लग रहे हैं। वह तवारीख के पन्नों पर इसी तरह कुछ नया दर्ज करने की ललक रखते हैं। आज बदलता हुआ हिन्दुस्तान है। वेनेजुएला, पेरू, चिली, मेक्सिको जैसे लातिनी अमेरिकी देशों में छात्रों को कमतर समझने से वहां राष्ट्रीय राजनीति का चरित्र, चाल और चेहरा बदला। सत्ता के हर कौरव पक्ष को अपने जयद्रथ के साथ होने का गुमान होता है। अभिमन्यु यदि चक्रव्यूह तोड़ ही दे तो? संविधान की किस इबारत में लिखा है कि गांधी प्रणीत सिविलनाफरमानी, असहयोग और अहिंसात्मक प्रतिरोध के मुकाबिल संविधान की शपथ लेकर कहेंगे कि हम बदला लेंगे। लोकतंत्र रनिवासों की अय्याशियों और राजदरबार के अट्टहास की सिम्फनी नहीं होता। वह प्रथमतः और अंततः भी जनताघर है। अगर पहले वाला यही कानून कायम रहता कि जो भी भारत आएगा उसे गुण दोष के आधार पर नागरिकता मिलेगी, तो कौन सा कहर टूटने वाला था? उसमें मुस्लिमों को भी शामिल किया ही गया था कि गुण दोष के आधार पर वे भारत में रह पाएंगे।

लोकतंत्र में खोपड़ियां गिनी जाती हैं, तोड़ी नहीं जातीं। चिंगारियां कब क्या कर देंगी, केवल आग का चरित्र जानता है। एक नए किस्म का सामाजिक समीकरण केन्द्र सरकार के फैसले के कारण वक्त की नागरिक स्लेट पर छात्र लिख रहे हैं। शाहीन बाग में सैकड़ों हजारों मुस्लिम महिलाएं बच्चों के भविष्य के लिए लड़ाई में जिद की मुद्रा में हैं। सामाजिक एकता सत्ता के कूड़ाघरों का तोहफा नहीं होती। हर लड़ाई में सत्ताधीश आखिर में हारता ही है। जनमत जानता है कि पुलिसिया मुकाबिले में लड्डू नहीं बंटते।

नागरिकों की हड्डियां लोकतंत्र का ढांचा होती हैं। उन पर नेताओं और सत्ता का गोश्त चढ़ता है। उस पर चिकने चुपड़े कॉरपोरेटी स्नो पाउडर, इत्र फुलेल मलते हैं। ज़ाहिर है शुरुआती झटके तो लगेंगे। कांग्रेस और क्रांतिकारियों को भी जद्दोजहद करते 62 वर्ष बीते, तब अंगरेज गया। संविधान सभा में पत्थर की लकीर बने पूर्वजवचन दर्ज हैं कि धर्म के आधार पर नागरिकता का दावा नहीं हो सकता। अनुच्छेद 11 में संसद को नागरिकता कानून बनाने का अधिकार कोई ब्लैंक चेक नहीं है जिसमें संसद के हस्ताक्षर कर पूर्वज विश्वासों की दौलत ही छीन ली जाए। नौजवान पहली बार एकजुट होकर संविधान की इबारत ज़ेहन में रखकर अहिंसक इंकलाब करने की नीयत में दिखाई तो देते हैं। सत्ता में अहंकार नहीं हो, जनसंवाद का मौसम हो, तो लोकतंत्र की हैसियत में इजाफा होता है।

भारत को लग रहा है तेल कीमतों का झटका

अब सारी उम्मीद बाजार की स्थिरता पर

के रवीन्द्रन

प्रतिक्रिया स्वरूप मोदी सरकार ने गैर-उपनगरीय ट्रेन किराए को लगभग 25 प्रतिशत बढ़ा दिया, हालांकि वास्तविक कीमत के मामले में प्रति किलोमीटर लागत केवल 4 पैसे है। सामान्य मूल्य की स्थिति पर बढ़ोतरी का समग्र प्रभाव व्यक्तिगत वस्तुओं की कीमतों की वृद्धि की तुलना में बहुत अधिक होगा क्योंकि अर्थव्यवस्था में विश्वास का स्तर पहले ही कम हो गया है, जिससे अर्थव्यवस्था के लगभग हर क्षेत्र में मांग कमजोर हो रही है। कच्चे तेल की कीमतों में उछाल का समय भारत के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि अर्थव्यवस्था ने कुछ क्षेत्रों में सुधार के संकेत देने शुरू कर दिए थे।

वैश्विक तेल की कीमतों में उछाल भारत के लिए इससे ज्यादा बुरे समय में नहीं आ सकता था। इंटरकॉन्टिनेंटल एक्सचेंज वायदा बाजार में बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड पिछले सप्ताह के मुकाबले 0.22 प्रतिशत बढ़कर सप्ताह की शुरुआत में 67.02 डॉलर प्रति बैरल हो गया।

नतीजतन, तेल विपणन कंपनियां (ओएमसी) पेट्रोल की कीमतों में रोजाना बढ़ोतरी कर रही हैं, डीजल और केरोसिन में भी इसी तरह की बढ़ोतरी हो रही है। गैर-सब्सिडी रसोई गैस की कीमत में 19 रुपये प्रति सिलेंडर की बढ़ोतरी की गई है, जो पांचवीं मासिक बढ़ोतरी है। वह सितंबर से 139.50 रुपये बढ़ी। विमानन टरबाइन ईंधन (एटीएफ) की कीमत में भी 2.65 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो पिछले साल जून के बाद से उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। यह एक महीने में दूसरी सीधी वृद्धि है, क्योंकि 1 दिसंबर को पहले कीमत बढ़ाई गई थी। विमानन ईंधन की उच्च लागत का असर एयरलाइंस कंपनियों, और उद्योग के भविष्य पर पड़ेगा, जो पहले से ही गंभीर संकट से गुजर रहा है। प्रतिक्रिया स्वरूप मोदी सरकार ने गैर-उपनगरीय ट्रेन किराए को लगभग 25 प्रतिशत बढ़ा दिया, हालांकि वास्तविक कीमत के मामले में प्रति किलोमीटर लागत केवल 4 पैसे है।

सामान्य मूल्य की स्थिति पर बढ़ोतरी का समग्र प्रभाव व्यक्तिगत वस्तुओं की कीमतों की वृद्धि की तुलना में बहुत अधिक होगा क्योंकि अर्थव्यवस्था में विश्वास का स्तर पहले ही कम हो गया है, जिससे अर्थव्यवस्था के लगभग हर क्षेत्र में मांग कमजोर हो रही है। कच्चे तेल की कीमतों में उछाल का समय भारत के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि

यह एक संभावित बदलाव के लिए आशावाद को कम करता है क्योंकि जीएसटी संग्रह के नवीनतम आंकड़ों ने दूसरी मासिक वृद्धि को दिखाया है, जो उपभोग की मांग में मामूली गिरावट का संकेत देता है। दिसंबर में जीएसटी राजस्व का कुल संग्रह 1.03 लाख करोड़ रुपये आया है, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में लगभग नौ प्रतिशत अधिक है। कच्चे तेल की कीमतें 14 देशों के ओपेक ब्लॉक, रूस और ओपेक प्लस देशों की मेजबानी में 6 दिसंबर 2019 को समूह की हुई बैठक में तेल-उत्पादन कटौती करने का फैसला हुआ।

अर्थव्यवस्था ने कुछ क्षेत्रों में सुधार के संकेत देने शुरू कर दिए थे। यह एक संभावित बदलाव के लिए आशावाद को कम करता है क्योंकि जीएसटी संग्रह के नवीनतम आंकड़ों ने दूसरी मासिक वृद्धि को दिखाया है, जो उपभोग की मांग में मामूली गिरावट का संकेत देता है। दिसंबर में जीएसटी राजस्व का कुल संग्रह 1.03 लाख करोड़ रुपये आया है, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में लगभग नौ प्रतिशत अधिक है। कच्चे तेल की कीमतें 14 देशों के ओपेक ब्लॉक, रूस और ओपेक प्लस देशों की मेजबानी में 6 दिसंबर 2019 को समूह की हुई बैठक में तेल-उत्पादन कटौती करने का फैसला हुआ। कटौती 50 लाख बैरल प्रतिदिन की जानी है और इस फैसले को लागू करने का दिन 1 जनवरी तय किया गया।

सच तो यह है कि गत एक जनवरी से यह कटौती लागू भी हो गई है और तेल का उत्पादन कम कर दिया गया है। उत्पादन में कटौती तो 1 जनवरी को हुई, लेकिन उस निर्णय ने तुरंत क्रूड की कीमतों पर अपना असर दिखाना शुरू कर दिया। उसके बाद कच्चे तेल की कीमतें लगातार बढ़ रही है। स्वाभाविक रूप से, भारत जैसे उपभोग करने वाले देशों में इसका नतीजा नकारात्मक है,, जो पहले से ही अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्रों द्वारा उदासीन प्रदर्शन के कारण संकटग्रस्त है। यदि तेल विशेषज्ञों की मानें तो भारत के लिए खुश होने की बात यह है कि लंबे समय तक उत्पादन में कटौती करके तेल की कीमतों को बहुत ऊंचा बनाए नहीं रखा जा सकता। लेकिन सारा दारोमदार तेल बाजार की स्थिरता पर निर्भर करत है। **(संवाद)**

पाठकों की बात

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

लालटेन घासलेट से

लालटेन घासलेट से सुलगती थी कभी आलों , तिखालों में अब खामोश क्यूं है ? तेरे? उजाले में कई उपन्यास गढ़ डाले तुझेआज भी सहेजा है किसी गाँव की यादों में तू अब भी लुभाती है जब मां की याद आती है नई रोशनी जगमगाती है शहर की चार दिवारी में। - **अर्विना गहलोत**

20-20 की स्टार्ट

20-20 की स्टार्ट हुई न्यू इनिंग जरा संभलकर करना हर नये दिन की बैटिंग हिम्मत से नई बॉल का सामना कभी लगाना फेर तो कभी जमा देना सिक्सर पर, न करना जल्दबाजी टिके रहना अंतिम ओवर की अंतिम गेंद तक... रचना नये-नये कीर्तिमान यही शुभकामना देते इस साल।

- **सुश्री इंदु सिंह**

खास पाती | बेरोजगारों को मिले रोजगार

बेरोजगारों को मिले रोजगार मजदूर छले न जाएं अबकी बार हलाकान न हों कोई किसान फांसी पर न झूले कोई जान सुसंस्कृत हो हर नवजवान नारी का न करें कोई अपमान लीडर अपना भाषण आश्वासन अक्षरशः करें जनहित में पालन संविधान में सब समान हर धर्म का हों सम्मान भेद मिटाने आया यह वर्ष सबको मिले हक का हर्ष मुबारक आप सबको मित्रवर नव वर्ष 20 ,20 बराबर।

- **परमेश्वर वैष्णव**

क्योकि बच्चे मतदाता नही है

क्योकि बच्चे मतदाता नही है ,क्योकि बच्चे हिन्दू,मुसलमान,ब्राह्मण, क्षत्रिय ,वैश्य,शुद्र नही बच्चे रोहिंग्या भी नही शायद इसी लिए कोटा ,राजस्थान में 100 से अधिक बच्चे नक्कारेपन और लापरवाही के वजह असमय काल के गाल में समा गए। श्रद्धांजलि बच्चों हो सके तो फिर न काया लेना भारतवासी की।

- **एड. अरूण कुमार साहिल**

कैसे महफूज रहती होगी वह

कैसे महफूज रहती होगी वह उनके बीच यह सोचने पर मजबूर कर दिया कल शाम ढ़लते सूर्य के साथ जब एक हिरणी को भेड़ियों के झुण्ड से सकुशल वापस आते देखा तो बादलों की बनती बिगड़ती आकृतियों सी मन उठने बाली भाव भंगिमायें जिसके धूमिल चन्द्रमुख पर स्पष्ट दिखाई दे रहीं थीं जो श्रमित थकित कदमों से डग भरती चली जा रही थी आँखों में ममता को समेटे। - **देवयानी भारद्वाज**

कहीं कुछ नहीं बदलता बदलते हैं कैलेंडर

कहीं कुछ नहीं बदलता बदलते हैं बस कैलेंडर चालबाजियाँ नहीं बदलती पाप और पुण्य भी नहीं बदलते सूर्य और चंद्र भी तो वहीं दिन रात अपनी ही परिधि में निरंतर गतिमान रहते हैं इंसानियत बदलती है रक्त का रंग नहीं बदलता चेहरे बदलते हैं मुखौटों में कैलेंडर के पन्नों की तरह साल दर साल नए रंग में तारीख और दिन नहीं बदलते बस साल बदलते हैं इतिहास के हर्फ़ों में। - **प्रतिमा शर्मा**

साल नया आया सोचा कुछ पुरानी

साल नया आया सोचा कुछ पुरानी नज़्म उधेड़कर देखूँ... हाए !! कुछ भी तो बदला नहीं... आज भी वहीं हूँ जहाँ से चली थी... वही ज़मीं है... वही आसमां... चाँद सितारे भी तो वही है... आज भी देखती हूँ मैं मेरे चाँद को दूर उसी आसमां में... वो तब भी मुझसे दूर था!! वो आज भी मुझसे दूर है!! - **शिल्पी अग्रवाल**

नरेंद्र मोदी जी से कितना भी असहमत हों

आप नरेंद्र मोदी जी से कितना भी असहमत हों, पर इस एक बात से तो ज़रूर सहमत होंगे कि इस आदमी ने अकेले दम पर भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय के नाम पर चल रही गुंडई , भ्रष्टाचार पर ब्रेक लगा दिया और धर्मनिरपेक्षता की हिप्पोक्रेसी का भी बाजा बजा दिया। - **सचिन चौधरी**

गत वर्ष के नींव पर ही आगत वर्ष

गत वर्ष के नींव पर ही आगत वर्ष मुस्कुराता है। सजाए हैं ख्वाब तेरे आंखों में खूब ख्वाइश यूँ कि जन्नत मिल जाता है। साँसों में चाहत, महकी सी जिंदगी दरम्यान हमारे, हार जीत नही होता है। दिसंबर का आज हो रहा है विदाई प्यार,अरमान,इश्क सब दिखा जाता है। - **सुरेश वैष्णव**

लघु कथा- असली सांता क्लॉज

एक समय की बात है, इंदौर शहर के समीप राजेंद्रनगर की एक बस?ती में किरण नामक लड़का अपने पिताजी के साथ रहता था । उसकी परवरिश मध्यम परिवार में हुई, उसके पिताजी दिनानाथ के पास अधिक धन या संपत्ति नहीं थी और न ही ज्यादा अमीर थे, पर हां फैक्ट्री में काम करके इतना तो कमा ही लेते थे कि गुजर-बसर हो जाती, और हां उन्हें स्वयं पर पूर्ण विश्वास था कि वे अपने बलबूते पर बेटे को उचित रूप से शिक्षित कर एक काबिल इंसान अवश्य ही बनाएंगे। उनकी पत्नी का तो पहले ही स्वर्गवास हो चुका था, पर दोनों की जिंदगी हंसी-खुशी से व्यतीत हो रही थी। किरण बहुत होनहार था, लेकिन उसका कोई नजदीकी मित्र नहीं था! हमेशा वह सोचता? कि कोई तो ऐसा मित्र बने, जिसके साथ वह अपने मन की बात साझा कर सके, खेल सके, खुशियां बांट सके और कोई भी दु:ख मुसीबत आए तो एक-दूसरे का सहारा बन सके । किरण की कक्षा में प्रकाश भी पढ़ता था, वह बहुत शानो-शौकत हमेशा ही दिखाता ! अपने पिता के कमाए पैसे बड़ी आसानी से खर्च कर देता । प्रकाश के पिता प्रसिद्ध व्यापारी थे । किरण का कोई मित्र नहीं होने के कारण वह उदास रहता था। वह अकेला स?कूल जाता और अकेला ही वापस आ जाता । वह हमेशा कक्षा में प्रथम ही आता, जिससे प्रकाश और उसके मित्र उससे चिढ़ते थे। एक दिन किरण ने सोचा कि क्यों न प्रकाश से मित्रता करने के लिए मैं ही पहल करूं और उसने प्रकाश के पास जाकर दोस्ती के लिए हाथ आगे बढ़ाया।

आज का इतिहास

नई दिल्ली (वार्ता)। 1642 - इंग्लैंड के किंग चार्ल्स ने 400 सैनिकों के साथ संसद पर हमला किया। 1643 - मशहूर भौतिक विज्ञानी आइजक न्यूटन का जन्म। 1762 - इंग्लैंड ने स्पेन और नेपल्स पर युद्ध की घोषणा की। 1809 - नेत्रहीनों के लिये ब्रेल लिपि का आविष्कार करने वाले लुई ब्रेल का जन्म। 1887 - प्रसिद्ध साहित्यकार लोचन प्रसाद पाण्डेय का जन्म। 1892 - भारत के अर्थशास्त्री जे.सी. कुमारप्पा का जन्म । 1906 - दक्षिण अफ्रीका ने इंग्लैंड को एक विकेट से हराकर अपनी पहली टेस्ट जीत हासिल की। 1906 - किंग जार्ज पंचम ने कलकत्ता (अब कोलकाता) के विक्टोरिया मेमोरियल हॉल की आधारशिला रखी। 1925 - कवि गोपाल दास नीरज का जन्म।

अमेरिका-ईरान के बीच युद्ध की आशंका

यूपी में हिंसा के लिए कांग्रेस जिम्मेदार : सिंह

यूपी सरकार के कैबिनेट मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा एनआरसी व सीएए के खिलाफ विपक्षी दल कर रहे हैं दुष्प्रचार

नवप्रदेश संवाददाता

दुर्ग। उत्तरप्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह दुर्ग पहुंचे। उन्होने जिला भाजपा कार्यालय में एनआरसी व सीएए को लेकर देश में छिड़े विवाद पर मीडिया से चर्चा की। मीडिया के एक सवाल के जवाब में कैबिनेट मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि एनआरसी व सीएए लोगों को जोड़ने के लिए है न कि तोड़ने के लिए। विपक्षी दल बौखलाहट में आकर साजिश के तहत इस कानून का दुष्प्रचार कर रही है। केन्द्र सरकार की मंशा है कि देश में 31 दिसंबर 2014 के पहले के शरणार्थियों को नागरिकता प्रदान की जाए। नागरिकता के लिए कोई भी व्यक्ति आवेदन कर सकता है। आवेदन करना बहुत आसान है। इसमें किसी दस्तावेज की आवश्यकता भी नहीं है। यह नागरिकता संशोधन कानून भारत के लिए वरदान है। कानून को नागरिकता देने के लिए बनाया गया है। इसमें नागरिकता वापस लेने का कोई स्थान नहीं है यहीं कानून का मूल उद्देश्य है। कैबिनेट मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि इस कानून से भारत में निवासरत अल्पसंख्यकों को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। वे पूरे सम्मान के साथ देश में रहेंगे। राष्ट्रीय जनगणना देश में 1951-52 में शुरु हुई थी। हर 10 वर्ष के अंतराल में यह जनगणना की जाती है। देश के लोगों की सामान्य जानकारी रखना आवश्यक है। लेकिन इसे लेकर विपक्षी दलों द्वारा भ्रम फैलाया जा रहा है कि यह कानून आगे चलकर नुकसानदायक होगा। जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है। नागरिकता संशोधन कानून को लेकर उत्तरप्रदेश में हुए हिंसा पर कैबिनेट मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि इसके पीछे कांग्रेस का हाथ है। हिंसा में शामिल लोगों को चिन्हित कर कार्यवाही की गई है। मीडिया से चर्चा के दौरान सांसद विजय बघेल, वैशाली नगर विधायक विद्यारतन भसीन, पूर्व भाजयुमों प्रदेश अध्यक्ष संजय श्रीवास्तव, जिला भाजपा अध्यक्ष उषा टावरी, पूर्व संसदीय सचिव लाभचंद बाफना, महापौर चंद्रिका चंद्राकर, जिला भाजपा महामंत्री देवेन्द्र सिंह चंदेल, डोमार सिंह वर्मा, जिला भाजपा मीडिया प्रभारी सतीश समर्थ, प्रदेश भाजयुमों कार्यकारिणी सदस्य ललित चंद्राकर भी मौजूद थे।

विजेता बनी विचक्षण जैन विद्यापीठ की दो छात्राएं

नवप्रदेश संवाददाता

कुम्हारी। राष्ट्रीय स्कूल स्तरीय 65 वें खेलकूद प्रतियोगिता में विचक्षण जैन विद्यापीठ की दो छात्राओं मौली व मिली कक्षा. नवमी ने भोपाल में क्रमशः रजत व कांस्य पदक जीत कर संस्था सहित छत्तीसगढ़ को भी गौरवान्वित किया है। दोनों छात्राओं की इस उपलब्धि से संस्था के विद्यार्थियों सहित समस्त पदाधिकारियों व स्टाफ ने मौली लूनावत, मिली रांका को बधाई दी है। भोपाल के शारदा विहार विद्या भारती स्कूल में आयोजित उक्त प्रतियोगिता में संस्था के खेल प्रशिक्षक अरुण मिश्रा के मार्गदर्शन में जीत, कुंडों, मार्शल आर्ट व मिनी गोल्फ में दोनों छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन कर पदक हासिल किया। उल्लेखनीय है कि विचक्षण जैन विद्यापीठ के विधार्थियों ने इस वर्ष विकासखंड स्तर से राष्ट्रीय स्तर पर अनेक खेल विधाओं में अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सफ्लता के नये आयाम तय किये व पुरस्कृत हुए हैं।

न्यूज गैलरी

कल आरडी बर्मन नाईट कार्यक्रम

भिलाई। खेल एवं मनोरंजन विभाग भिलाई स्टील प्लांट के तत्वाधान में पल्स हॉस्पिटल नेहरू नगर के सौजन्य से मैत्री एजुकेशनल एंड कल्चरल एसोसिएशन द्वारा प्रायोजित आर डी बर्मन नाईट मशहूर संगीतकार पंचम दा के पुण्यतिथि के अवसर पर 5 जनवरी 2020 को कला मंदिर सिविक सेन्टर में आयोजित किया गया है। भिलाई के प्रसिद्ध संगीत कलाकार दिपान्कर दास, अमित पाल, रविन्द्र करमाकर, के बी, लिलेश साहु, अनुब्रत रोय, भगवत साहू आदि मुख्य रूप से प्रस्तुति देगें। कार्यक्रम शाम ठीक 7 बजे प्रारंभ हो जाएगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विजय बघेल सांसद एवं विशेष अतिथि दिलीप वासनिकर आईएएसए संभागीय कमिश्नर उपस्थित होंगे।

अतिक्रमण पर टीम ने लगाया जुर्माना

भिलाईनगर। निगम की उड़नदस्ता टीम ने आज कोहका रोड, सुपेला बाजार, हार्डवेयर लाइन, वैशालीनगर, गोल मार्केट सहित निगम के विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले व्यवसासियों से प्रतिबंधित पानी पाउच तथा प्रतिबंधित प्लास्टिक कैरीबैग, एक्सपायरी पेय एवं खाद्य पदार्थ बेचने वालों पर कार्यवाही करते हुए 3500 रूपए का अर्थदण्ड वसूलते हुए साथ ही दोबारा इस प्रकार से न करने की समझाईस दी गई। निगम क्षेत्रांर्गत अनाज मंडी सुपेला स्थित अमित ट्रेडर्स के यहां से प्रतिबंधित प्लास्टिक पाए जाने पर उसे जप्त कर उड़नदस्ता की टीम ने जुर्माना वसूला गया। सुपेला बाजार में सघन दौरा कर सड़क पर सामान बढ़ाकर व्यवसाय करने वालो को समझाइश देते हुए हटवाया।

साइंस कॉलेज में इंस्पायर प्रोग्राम का उद्घाटन

नवप्रदेश संवाददाता

दुर्ग। डीएसटी इंस्पायर कैम्प का मुख्य उद्देष्य विद्यार्थियों के मन में विचार मंथन तथा विज्ञान के प्रति रूचि जागृत करना है। शालेय स्तर पर विज्ञान की अवधारणाओं को सीखने तथा उनका प्रायोगिक विष्लेषण ही इंस्पायर कैम्प की प्रमुख अवधारणा है। उक्त उद्गार आईआईटी कानपुर के पूर्व प्राध्यापक एवं डॉ. हरिसिंह गौर विष्वविद्यालय सागर के पूर्व कुलपति डॉ. एनएस गजभिये ने आज शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय में व्यक्त किये। डॉ. गजभिये आज डीएसटी नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 5 दिवसीय इंस्पायर इंटर्नषिप साईंस कैम्प के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बड़ी संख्या में छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से पधारे शालेय विद्यार्थियों एवं महाविद्यालय के प्राध्यापकों तथा गणमान्य नागरिकों को संबोधित कर रहे थे। इंस्पायर प्रोग्राम की महत्ता पर प्रकाष डालते हुए डॉ. गजभिये ने कहा कि विद्यार्थियों को सदैव चिंतन कर किसी भी विषय की गहराई तक पहुंचने का प्रयास करना चाहिए। जब तक हम किसी तथ्य का विष्लेषण नही कर लेते तब तक उस पर विष्वास कर कठिन होता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए हेमचंद यादव विवि की कुलपति डॉ. अरूणा पल्टा ने कहा कि छत्तीसगढ़ अंचल के सर्वश्रेष्ठ महाविद्यालय साइंस कालेज में इंस्पायर प्रोग्राम का आयोजन हेमचंद यादव विवि के लिए भी गर्व का विषय है। डॉ. पल्टा ने कहा कि विज्ञान के साथ-साथ हम सभी को मानवता एवं नैतिक मूल्यों को सदैव याद रखना चाहिए। छत्तीसगढ़ के दूरस्थ अंचलों से आए शालेय विद्यार्थियों को डॉ. पल्टा ने सलाह दी कि वे इंस्पायर कैम्प के दौरान प्रायोगिक कक्षाओं में भरपूर रूचि लें।

प्रसिध्द वैज्ञानिक एवं इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफसाईंस से पीएचडी की उपाधि प्राप्त कार्यक्रम के विषिष्ट अतिथि डॉ. टीएन राव ने प्रतिभागी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विज्ञान को समझने में भाषा कोई बाधक नही होती। यदि विद्यार्थी में इच्छा शक्ति हो तो वह कठिन से कठिन विषय को आसानी से समझ सकता है। कार्यक्रम के संचालक एवं इंस्पायर कैम्प के आयोजन समिति सहायक समन्वयक डॉ. प्रषांत श्रीवास्तव ने बताया कि इस इंस्पायर कैम्प में शामिल 200 शालेय विद्यार्थियों में छत्तीसगढ़ प्रदेष के लगभग 15 से अधिक जिलों के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के छात्र-छात्रायें शामिल हो रहे है।

इन प्रतिभागी विद्यार्थी में 10वीं बोर्ड की परीक्षा में सभी के अंक 85 प्रतिषत से उपर है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि देष के ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों के भाषण से हमारे छत्तीसगढ़ अंचल के विद्यार्थी लाभांवित होंगे तथा यह इंस्पायर प्रोग्राम इन विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रूचि जागृत करने के साथ-साथ अनेक नवीनतम जानकारियां भी उपलब्ध करायेगा। डॉ. सिंह ने देष के विभिन्न हिस्सों से पधारे विषय-विषेषज्ञों का स्वागत भी किया। डॉ. सिंह ने केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा विद्यार्थियों हित में चलायी जा रही योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने का विद्यार्थियों से आग्रह किया।

राजनांदगांव में पिछड़ा वर्ग महापौर बनने से दुर्ग में मिलेगा सामान्य को मौका

दुर्ग। राजनांदगांव नगर निगम में पिछड़ा वर्ग से महापौर बनने के बाद दुर्ग नगर निगम में पिछड़ा वर्ग से महापौर बनाने की मुहिम कमजोर पड़ गई है। माना जा रहा है कि अनारक्षित सीट से अब सामान्य वर्ग का महापौर शहर को मिल सकता है। सूत्रो का कहना है कि सभापति का पद किसी पिछड़ा वर्ग महिला को दिया जा सकता है। महापौर का चयन आगामी 6 जनवरी को होना है। पार्टी चयन प्रक्रिया शुरु होने के घंटे भर पहले प्रत्याशी की घोषणा करेगी। कांग्रेस के सभी पार्षदो को पर्यवेक्षक धनेन्द्र साहू हाईकमान के निर्णय की स्वीकार करने की सीख देकर गए है। इस परिस्थिति में यह अनुमान लगाया जा रहा है कि कोई भी पार्षद पार्टी से बाहर जाने की गलती नही करेगा। नगर निगम के 60 वार्डो में कांग्रेस के 30 पार्षद चुनकर आए है। कांग्रेस को एक पार्षद के समर्थन की जरुरत है।

प्रादेशिक अधिवेशन का आगाज

दुर्ग। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा स्थानीय सुराना कॉलेज ग्राउंड में आयोजित तीन दिवसीय 52वें प्रादेशिक अधिवेशन का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के अलावा अभाविप कार्यकर्त्तागण शामिल हुए। इसके पहले सांसद विजय बघेल ने कार्यक्रम स्थल पर लगाए गए जीवंत प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनियों में बस्तर के घोटुल संस्कृति, जलियावाला बाग एवं गुरुनानक देव जी के जीवन पर आधारित जीवंत प्रदर्शनी शामिल है।

न्यायालय नजूल जांच अधिकारी दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./06/अ-20(3) वर्ष 2019-20

आवेदक आनंद श्रीकृष्ण कोलवाडकर आ. स्व. श्रीकृष्ण कोलवाडकर निवासी प्लाट नं. 204 जयताला रोड के पास शीतला माता मंदिर नाईक ले आउट सुभाष नगर राणा प्रताप नगर नागपुर महा. एवं अन्य 04 धारकगण की ओर से आम मुख्तयार द्वारा अधिवक्ता श्री राकेश यादव ने इस आशय का आवेदन प्रस्तुत किया है कि आमदी नगर हुडको भिलाई में स्थित भूमि खसरा नं. 1/2, 2/2 का टु. प्लाट नं. एम.आई.जी. 1/35 रकबा 150-00 वर्गमीटर भूखंड/ मकान, धारकगण/ आवेदकगण जी.एस. कोलवाडकर, शरदचंद्र, आनंद पिता स्व. श्रीकृष्ण कोलवाडकर, शशिकांत पि. स्व. श्रीकांत एस कोलवाडकर, राजेश अरविंद पिता अरविन्द कोडवाडकर के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। आवेदकगण द्वारा उक्त भूखण्ड को क्रेता श्रीमती लालीदेवी पति बाबूनंद निवासी एम.आई.जी 1/35 हुडको आमदी नगर भिलाई के पास विक्रय करने का सौदा कर बयाना की राशि प्राप्त कर चुकी है। आवेदकगण द्वारा उक्त भूखण्ड के विक्रय की अनुमति बाबत् आवेदन मय शपथ पत्र प्रस्तुत की है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन हे।

अतएव एतद् द्वारा सर्वसाधारण एवं आम जनता को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति/ संस्था को आपत्ति हो तो प्रकरण की सुनवाई दिनांक 13.01.2020 को या इसके पुर्व इस न्यायालय में स्वतः या किसी अधिकृत व्यक्ति अथवा अधिवक्ता के द्वारा जिसे भूखण्ड संबंधी जानकारी हो प्रस्तुत किया जावे अथवा करवाया जावे। इसके पश्चात् प्राप्त आक्षेप/आपत्ति पर कोई कार्यवाही नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 12.12.2019 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा से जारी किया गया।

मुहर — नजूल जांच अधिकारी दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./अ-06/वर्ष 2019-20

एतद् द्वारा सर्वसाधारण आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदिका सरिका मेश्राम पति शैलेष मेश्राम निवासी शंकर नगर दुर्ग मौजा उरला प.ह.नं. 07 रा.नि.मं. दुर्ग 02 तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नंबर 590/3 रकबा 0.006 हे. भूमि को विक्रेता/ आम मुख्तयार उपासना राहुलकर पति सुरेन्द्र कुमार से दिनांक ... को क्रय कर रजिस्ट्री बैनामा निष्पादित किया है आवेदक द्वारा उक्त बैनामा के आधार पर नामांतरण करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा/आपत्ति करना हो तो नियत पेशी दिनांक 10.01.2020 अथवा प्रकाशन तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से कार्यालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 23.12.2019 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुहर के साथ जारी किया गया।

मुहर — नायब तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./362/अ-2/2019-20

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदिका श्रीमती राधा मल्होत्रा पति श्री महेन्द्र पाल मल्होत्रा निवासी लुचकी पारा दुर्ग द्वारा अपने स्वामित्व की ग्राम दुर्ग प.ह.न. 16/24 तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 737/102 रकबा 0.013 हें/ 1426 वर्गफीट के आवासीय प्रयोजन हेतु डायवर्सन के लिए छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 59 (2) के प्रस्तुत प्रस्तुत किया है। जिसके संबंध में प्रकरण विचाराधीन है।

अतएव इस संबंध में आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का दावा -आपत्ति हो तो प्रकरण में उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस तक स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 31.12.2019 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी दुर्ग जिला, दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./361/अ-06/वर्ष 2019-20

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका शेफाली मुखर्जी पति गोकुलानंद मुखर्जी निवासी ग्राम ए/103 ईकुना अपार्टमेंटस तहसील शंकरपुर जिला दिल्ली के द्वारा ग्राम जुनवानी तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 462/36 रकबा 0.020 हें भूमि को विक्रेता एम के वासु पिता मनोरंजन वासु निवासी ग्राम स्मृति नगर जुनवानी से रजिस्टर्ड बैनामा दिनांक 26.08.2019 को क्रय किया गया है। उक्त आवेदित भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर क्रेता के पक्ष में प्रमाणीकरण किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 10.01.2020 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 23.12.2019 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./361/अ-06/वर्ष 2019-20

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका श्रीमती अनिता बाई पति नारायण दास कसेर निवासी ग्राम शिक्षक नगर दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम दुर्ग तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 1004/7 शामिल 1005/4 रकबा 1125 वर्गफीट, 0.010 हें भूमि को विक्रेता अम्बा लाल पिता रामजी चौहान निवासी ग्राम शंकर नगर दुर्ग से रजिस्टर्ड बैनामा दिनांक 09.03.1999 को क्रय किया गया है। उक्त आवेदित भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर क्रेता के पक्ष में प्रमाणीकरण किये जाने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 17.01.2020 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 31.12.2019 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय नजूल जांच अधिकारी दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./12/अ-20(3) वर्ष 2019-20

आवेदिका श्रीमती संतोषी अहीर पति स्व. किशोर कुमार निवासी बैगापारा दुर्ग द्वारा इस आशय का आवेदन प्रस्तुत किया है कि दुर्ग में स्थित नजूल शीट क्रमांक 28 डी प्लाट नंबर 184 रकबा 54 वर्गमीटर भूमि धारक किशोर कुमार आ. बन्धुलाल मो. बैगापारा दुर्ग के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। धारक किशोर कुमार की मृत्यु दिनांक 11.06.2011 को हो चुकी है। मृतक धारक के वारिसान उनकी पत्नि श्रीमती संतोषी अहीर, पुत्र घनिष्ठ, पुत्री पायल है। इसके अतिरिक्त अन्य वारिसान नहीं है। आवेदिका द्वारा मृतक धारक का नाम प्रश्नाधीन भूखण्ड से विलोपित कर मृतक धारक के वारिसानों का नाम दर्ज किए जाने हेतु आवेदन मय शपथ पत्र प्रस्तुत की है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन हे।

अतएव एतद् द्वारा सर्वसाधारण एवं आम जनता को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति/ संस्था को आपत्ति हो तो प्रकरण की सुनवाई दिनांक 13.01.2020 को या इसके पुर्व इस न्यायालय में स्वतः या किसी अधिकृत व्यक्ति अथवा अधिवक्ता के द्वारा जिसे भूखण्ड संबंधी जानकारी हो प्रस्तुत किया जावे अथवा करवाया जावे। इसके पश्चात् प्राप्त आक्षेप/आपत्ति पर कोई कार्यवाही नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 12.12.2019 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा से जारी किया गया।

मुहर — नजूल जांच अधिकारी दुर्ग (छ.ग.)

आम-सूचना

मैं Smt. Chandana Bose W/o Shri Partha Pratim Bose निवासी Orchid-22, Chouhan Green Velley, Junwani Motilal Nehru Nagar Bhilai Durg (C.G.) की निवासी हूं। मेरे आधार कार्ड नं. 4723 9046 1055, पैन कार्ड AHNPB1990Q एवं मेरे सर्विस रिकार्ड में मेरा नाम Chandana Bose दर्ज है। जो कि सही एवं सत्य है। मेरे नाम से पासपोर्ट बना है जिसका पासपोर्ट नं. J7128176 है जिसमें मेरा नाम Chandna Bose दर्ज है जो कि लिपिकीय त्रुटि के कारण हुआ है मेरा वास्तविक व सही नाम Chandana Bose है। मैं अपने पासपोर्ट में अपना नाम Chandana Bose दर्ज करवाना चाहती हूं तथा पासपोर्ट में दर्ज Chandna Bose तथा मेरे अन्य दस्तावेजों में दर्ज Chandana Bose दोनों नाम मेरा ही स्वयं का नाम है दोनों नाम एक ही महिला का है। पासपोर्ट में दर्ज Chandna Bose का नाम विलोपित कर सही नाम Chandana Bose दर्ज किए जाने एवं गजट में प्रकाशन हेतु यह शपथ पत्र श्रीमान कार्यपालिक दण्डाधिकारी महोद्य के समक्ष प्रस्तुत करना हैं।

शपथकर्ता
Chandana Bose

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा

रा.प्र.क्र./149/अ-06/वर्ष 2019-20

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका उषा सिंह पति विश्व मोहन नारायण सिंह निवासी ग्राम स्मृति नगर भिलाई तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम जुनवानी तह. व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 417/39 रकबा 0.020 हें भूमि जो कि आवेदक/ शामिलात सहखातेदार के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदक द्वारा मूल ऋण पुस्तिका गुम हो जाने पर डुप्लीकेट ऋण पुस्तिका प्रदाय करने हेतु आवेदन पत्र चालान की मूल प्रति, बैकों द्वारा प्रस्तुत अनापत्ति प्रमाण पत्र, थाना की रिपोर्ट व राजस्व अभिलेख सहित इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 21.01.2020 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 27.12.2019 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार दुर्ग जिला दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा-पत्र

मा.क्र./11/अ-27/ वर्ष 2019-20

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक 1. नंदकुमार आ. स्व. श्री भुरवा राम यादव, 2. खमेन्द्र कुमार पिता स्व. श्री भुरवाराम यादव दोनों निवासी बैजनाथपारा दुर्ग वार्ड 38 तहसील व जिला दुर्ग द्वारा मा. चतुर्थ व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-2 जिला दुर्ग छ.ग. (पीठासीन अधिकारी श्रीमती अर्पूवा दांगी) के सिविल वाद क्रं. 62/2018 आदेश दिनांक 17.12.2019 के आधार पर मौजा कसारीडीह प.ह.नं. 25 अ रा.नि.मं. दुर्ग 01 तह. व जिला दुर्ग में स्थित भूमि खसरा नबर 97/7 रकबा 0.015 हे./ भूराजस्व 43.75 रुपए को आवेदकगण के मध्य हुए समझौता नामा अनुसार खाता विभाजन करते हेतु अलग-अलग ऋण पुस्तिका प्रदाय किए जाने का आवेदन प्रस्तुत किया है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतः जिस किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था उक्त भूमि के संबंध में आपत्ति दावा या उजर पेश करना हो तो दिनांक 21.01.2020 तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति दावा या उजर प्रस्तुत कर सकते है। बाद में प्राप्त आपत्ति आवेदन पर कोई कार्यवाही नही किया जावेगा।

आज दिनांक 31.12.2019 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के पद मुद्रा से प्रकाशन हेतु जारी किया जाता है।

मुहर — तहसीलदार दुर्ग (छ.ग.)

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग जिला - दुर्ग (छ.ग.)

उद्घोषणा-पत्र

रा.प्र.क्र.	पक्षकार का नाम	ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन नं.
337/अ-2 /2019-20	संतोष साहू	20191210040015

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता हैं कि आवेदक संतोष साहू आ. किशोर साहू निवासी मॉडल टाउन म.नं. 406 सड़क 10 जुनवानी भिलाई तहसील व जिला दुर्ग छ.ग. द्वारा द्वारा नीचे अनुसूची में दर्शित भूमि को उसके सम्मुख दर्शित प्रयोजन के लिए व्यपवर्तन/पुर्ननिर्धारण हेतु आवेदन पत्र छ.ग.भू.रा.सं. 1959 की धारा 172 सहपठित धारा 59(2)(5) तहत् आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया हैं, जिसके संबंध में इस न्यायालय में प्रकरण विचाराधीन हैं।

अनुसूची

ग्राम/प.ह.नं.जहां भूमि स्थित है	खसरा नंबर	रकबा	प्रयोजन
ग्राम जुनवानी प.ह.न. 21 तह.व जिला दुर्ग	841	0.07 हें 7630 वर्गफीट	आवासीय

अतएव उपरोक्त वर्णित आवेदित भूमि के संबंध में जिस किसी व्यक्ति, संस्था, शासकीय विभाग, सार्वजनिक या अर्धसार्वजनिक उपक्रम को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो वे इस उद्घोषणा के प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस के भीतर अपनी लिखित आपत्ति/दावा स्वयं अथवा अधिकृत अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत कालावधि के बाद प्राप्त आपत्ति/दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह उद्घोषणा आज दिनांक 27.12.2019 को मेरे हस्ताक्षर तथा न्यायालय की पदमुद्रा के साथ जारी किया गया।

मुहर — अनुविभागीय अधिकारी दुर्ग, जिला दुर्ग

छत्तीसगढ़ शासन वन विभाग

भानुप्रतापपुर काष्ठागार (पूर्व भानुप्रतापपुर वनमंडल) के नीलाम का संक्षिप्त विवरण

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि पूर्व भानुप्रतापपुर वनमंडल अंतर्गत काष्ठागार भानुप्रतापपुर में संग्रहित ईमारती काष्ठ/बल्ली/जलाऊ चट्टा/औद्योगिक/व्यापारिक बांस निम्न दर्शाए गए स्थल में भण्डारित है। जिसका निर्वतन नीलाम तिथि 08.01.2020 को किया जावेगा तदानुरूप इच्छुक बोलीदारों से अनुरोध है, कि घोष विक्रय में भाग लेवें।

नीलाम में प्रस्तावित मात्रा कम या अधिक हो सकती है। बोली लगाने के पूर्व कृपया वनोपज का निरीक्षण कर लेवें। घोष विक्रय की शर्तों एवं अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में संबंधित वनमंडल से प्राप्त की जा सकती है।

वनमंडल का नाम	काष्ठागार का नाम	स्थान/नीलाम दिनांक व समय
पूर्व भानुप्रतापपुर वनमंडल	काष्ठागार भानुप्रतापपुर	काष्ठागार भानुप्रतापपुर नीलाम भवन दिनांक 08.01.2020 प्रातः 09.00 बजे से

अनुमानित मात्रा काष्ठ एवं बल्लियां

अ.क्र.	प्रजाति	नये काष्ठ की मात्रा		पुराने काष्ठ की मात्रा		योग	
		काष्ठ घ.मी.	बल्ली	काष्ठ घ.मी.	बल्ली	काष्ठ घ.मी.	बल्ली
1	सागौन	36	1560	121	338	157	1898
2	साल	318	658	266	234	584	892
3	बीजा	36	694	48	88	84	782
4	साजा	103	670	88	533	191	1203
5	शीशम	0	12	2	0	2	12
6	हल्दू/मुंडी	6	241	34	150	40	391
7	सलिहा/मोदे	2	95	20	12	22	107
8	तिन्सा	5	94	12	10	17	104
9	धावड़ा	31	1523	67	561	98	2084
10	तेन्दु	83	535	129	266	212	801
11	अन्य	145	2981	277	1329	422	4310
	योग :-	**765**	**9063**	**1064**	**3521**	**1829**	**12584**

जलाऊ चट्टा नया (सागौन)- 39 चट्टा

नीलाम हेतु प्रस्तावित औद्योगिक /व्यापारिक बांस

क्र.	वनमण्डल	बांसागार का नाम	बंडल	नो.टन	रिमार्क
1	पूर्व भानुप्रतापपुर	औद्योगिक बांसागार अंतागढ़ (पुराना बांस)	1727	27.509	काष्ठ नीलाम के पश्चात औद्योगिक का नीलाम भानुप्रतापपुर नीलाम हॉल में किया जावेगा।
2	पश्चिम भानुप्रतापपुर	व्यापारिक बांस (बांसागार बांदे) — व्यापारिक बांसागार बांदे(पुराना बांस)	2400	5.500	

दूरभाष क्रमांक- पूर्व भानुप्रतापपुर वनमंडल (07850-252223)

1. प्रत्येक क्रेता को नीलाम में बोली लगाने के पूर्व प्रत्येक लाट के संबंध में जिस सीमा तक वह बोली लगाना चाहता है, उसके 10 प्रतिशत के बराबर राशि या 1,000/- रुपए इसमें जो भी अधिक हो, जमा करना अनिवार्य है।
2. क्रेता द्वारा नीलाम में बोली लगाने के पूर्व कलेण्डर वर्ष 2019 का पंजीयन आयकर, पेन कार्ड की छायाप्रति एवं जी.एस.टी. पंजीयन का प्रमाण पत्र ई.एम.डी. कक्ष में जमा करना अनिवार्य है।
3. विनिर्माता/उपभोक्ता/व्यापारी लायसेंस/ जी.एस.टी. पंजीयन नंबर की छायाप्रति एवं आयकर पेन कार्ड की छायाप्रति अनिवार्य रूप से जमा करने पर ही कार्य आदेश जारी किया जावेगा।
4. नीलाम में क्रय किए गए लाटों का विक्रय मूल्य सहित पूर्ण विवरण ई.एम.डी. जमा पर्ची के पीछे अनिवार्य रूप से दर्ज करना होगा।
5. वनोपज उपरांत डिमाण्ड ड्राफ्ट स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया का ही स्वीकार किया जावेगा।
6. अन्य जो भी जानकारी जो आवश्यक हो वनमंडल कार्यालय से संपर्क स्थापित कर प्राप्त कर सकते हैं।

जी-76034/5

वनमंडलाधिकारी
पूर्व भानुप्रतापपुर वनमंडल
भानुप्रतापपुर

एक्सिस बैंक लिमिटेड
स्ट्रक्चर्ड असेट्स ग्रुप-ईस्ट
1, शेक्सपियर सरानी, चतुर्थ तल, कोलकाता-700071

अचल संपत्ति की बिक्री हेतु बिक्री नोटिस

वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण व पुनर्निर्माण और प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम, 2002, जिसमें प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के भाव निहित हैं, के तहत अचल संपत्ति की बिक्री हेतु ई-नीलामी ब्रिकी नोटिस

चूंकि एक्सिस बैंक के प्राधिकृत अधिकारी द्वारा वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण व पुनर्निर्माण और प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के तहत व धारा 13(12), जिसमें उक्त अधिनियम के नियम 3 का भाव निहित है के तहत प्रदत्त अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए डिमांड नोटिस जारी किया गया था। इस नोटिस के जरिए कर्जदारों/गारंटरों/गिरवी रखने वालों को नोटिस में उल्लेखित राशि का ब्याज सहित भुगतान करने के लिए कहा गया था।

लिहाजा अब जनता के लिए आम व कर्जदारों/गारंटरों/गिरवी रखने वालों को खास तौर पर यह नोटिस जारी किया जा रहा है कि एक्सिस बैंक (सुरक्षित लेनदार) की ओर गिरवी/प्रभारित रखी गई निम्नलिखित अचल संपत्ति को एक्सिस बैंक के प्राधिकृत अधिकारी द्वारा अपने अधिपत्य में लिया जा चुका है और अब इन संपत्तियों की बिक्री 11.2.2020 'जैसी है जहां हैं', 'जैसी है जो है' और 'जो कुछ भी है' के आधार पर की जाएगी।

स. क्र.	अ. उधारकर्ता का नाम ब. जमानतदारों/बंधककर्ताओं का नाम	अचलसंपत्तियों का विवरण	अ. दावा-सूचना की तिथि ब. बकाया देय राशि	अ. आरक्षित मूल्य (रु. लाखों में) ब. ईएमडी राशि (रु. लाखों में)
1.	अ. **ए.व्ही. इंटरप्राइजेस,** प्रथम तल, जीएफ पैलेस, काशीराम नगर, रिंग रोड नं. 1, रायपुर छत्तीसगढ़-492001 ब. 1. श्री राम दत्त शर्मा, एच.डब्ल्यू.सी./109, शैलेन्द्र नगर रायपुर छत्तीसगढ़-492001, 2. श्री रामकुमार साहू, मकान-4, वार्ड-1, चिचोला चौकी, पटपर,राजनांदगांव छत्तीसगढ़-491445, 3. ओमकार क्रोम प्रा.लि.,सी-52, अशोक मिलेनियस, रिंग रोड नं. 1, रायपुर छत्तीसगढ़-492001, 4. श्री विदित शर्मा, एचआईजी सी/109ए, शैलेन्द्र नगर, रायपुर छत्तीसगढ़-492001, 5. श्री सुभाष शर्मा, एचआईजी सी/109ए शैलेन्द्र नगर, रायपुर छत्तीसगढ़-492001, 6. श्रीमती सुमन शर्मा एचआईजी सी/109ए शैलेन्द्र नगर, रायपुर छत्तीसगढ़-492001, 7. श्री सुखदेव राम, मकान नं. 18/केएच, रामनगर जुगेरा बालोद छत्तीसगढ़-491226, 8. श्री कमल किशोर तिवारी, आदिवासी होटल के पास, लोहारा रोड, बालोद छत्तीसगढ़-491226, 9. श्री सुनील कुमार माहेश्वरी, 42, शाला मार्ग, चौबे कालोनी रायपुर छत्तीसगढ़- 492001, 10. शर्मा विनट्रेड सर्विसेस प्रा.लि., तृतीय तल गुरसुख टावर, कटोरा तालाब रायपुर छत्तीसगढ़-492001	परिवर्तित अचल संपत्ति न्याय संगत बंधक प.ह.नं. 113, ख.नं. 82/1भाग, मौजा-पुरैना वार्ड-45, आरएनएम, रायपुर, तह. एवं जिला-रायपुर छत्तीसगढ़। जिसका एक क्षेत्र 720 वर्गफीट+ 540 वर्गफीट जिसका मालिक श्री विदित शर्मा है।	अ. 03.11.2015 ब. रु.2,79,46,434.00 (रु. दो करोड़ उन्यासी लाख, छयालीस हजार चार सौ चौतीस) एक्सिस बैंक लिमि. देय राशि (सुरक्षित लेनदार) 3.11.2015 तक (इस राशि में 30.06.2015 तक ब्याज दर शामिल है)	अ. 34.00 ब. 3.40
2.	अ. **हैप्पी इंटरप्राईजेस,** प्रथम तल जीएफ पैलेस, काशीराम नगर, रिंग रोड नं.1, रायपुर छत्तीसगढ़-492001 ब. शशि कुमार सिंह पिता रामकृपाल सिंह, महल्ला नवागांव, रींवा मध्यप्रदेश-486111, 2. श्रीमती त्रिवेणी बाई यादव पति खूबलाल यादव, म.नं. 76, पाकड़ीभाट, बालोद छत्तीसगढ़-491226, 3. श्री छगनलाल यादव म.नं.103, पाकड़ीभाट बालोद छत्तीसगढ़-491226, 4. श्री अशोक प्रसाद पिता यमुना साव म.नं. 148ए, मोहन बिघा डालमिया नगर, रोहतास बिहार-8213005, 5. श्री सुभाष शर्मा, एचआईजी सी/109ए शैलेन्द्र नगर रायपुर छत्तीसगढ़-492001, 6. श्री विदित शर्मा एचआईजी सी/109ए शैलेन्द्र नगर रायपुर छत्तीसगढ़-492001, 7. श्री कमल किशोर तिवारी आदिवासी होटल के पास, लोहारा रोड बालोद छत्तीसगढ़-491226, 8. श्री महेन्द्र कुमार शाह, एचआईजी सी/109ए शैलेन्द्र नगर रायपुर छत्तीसगढ़-492001, 9. श्री लोभान सिंह पिता श्री फगुवा राम म.नं. 297, कुंदरू पारा बालोद छत्तीसगढ़-491226, 10. रॉयल हेरिटेड हॉस्पिटल एवं टूरिज्म प्रा.लि., प्रथम तल, जीएफ पैलेस काशीराम नगर, रिंग रोड नं. 1, रायपुर छत्तीसगढ़-492001, 11. कास्मोस स्पंज एण्ड पावर लिमि. गुरसुख टावर, मेन रोड कटोरा तालाब रायपुर छत्तीसगढ़-492001.	संयुक्त भूमि का भाग ख.नं. 7/14, 7/15, 7/16, 7/83, प्लाट नं. 12 कुल क्षेत्रफल 2400 वर्गफुट (223.04 वर्गमीटर, प्लाट साईज 40'60') मौजा सड्डू, कुशाभाउ ठाकरे वार्ड-26,प.ह.नं. 109, आरआईसी, रायपुर, तहसील एवं जिला- रायपुर (छ.ग.)- श्री विदित शर्मा निवासी-एचआईजी-सी 109, शैलेन्द्र नगर रायपुर, तहसील एवं जिला-रायपुर छत्तीसगढ़ के नाम पर है।	अ. 03.11.2015 ब. रु.5,31,94,261.00 (रु. पांच इक्तीस लाख चौरानबे हजार दो सौ इकसठ) एक्सिस बैंक लिमि. देय राशि (सुरक्षित लेनदार) 3.11.2015 तक (इस राशि में 30.06.2015 तक ब्याज दर शामिल है।)	अ. 10.00 ब. 1.00

ई नीलामी बिक्री के नियम व शर्तें: 1. बंधक संपत्ति की बिक्री बैंक के अनुमोदित सर्विस प्रोवाइडर एम/एस ई-प्रोक्योरमेंट टेक्नोलॉजिस लिमिटेड (ऑक्शन टाइगर) के जरिए ई-नीलामी से की जाएगी, जो बैंक के प्राधिकृत अधिकारी को ऑनलाइन नीलामी पूर्ण करने में मदद कर रही है। 2. उपरोक्त बंधक संपत्ति **'जैसी है जहां है'**, **'जैसी है जो है'** और **'जो कुछ भी है'** व **'बगैर मदद मध्यस्थता'** के आधार पर होगी। 3. नीलामी बिक्री/बोली 'ऑनलाइन इलेक्ट्रानिक बिडिंग' प्रक्रिया से ही संपन्न होगी। यह प्रक्रिया वेबसाइट http://axisbank.auctiontiger.net पर 11.2.2020 को **दोपहर 2 बजे से 3 बजे** तक चलेगी। इसके साथ ही नीलामी के अंतिम पांच मिनट में बोली लगने की स्थिति में प्रत्येक को 5 मिनट का अमर्यादित अवधि विस्तार दिया दिया जाएगा। 4. अग्रिम जमा धन (अधिसूचित आरक्षित मूल्य का 10 फीसदी) को डिमांड ड्रॉफ्ट के जरिए देना होगा, जो एक्सिस बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के पक्ष में तैयार होगा। अग्रिम जमा राशि के साथ बोली जमा करने की अंतिम तिथि व समय **10.2.2020** को **दोपहर 3 बजे** तक है। डिमांड ड्राफ्ट (ईएमडी) के पीछे बोली लगाने वाले का पूरा नाम, पता, कॉन्टैक्ट नंबर व ई-मेल एड्रेस लिखना अनिवार्य है। 5. बोली को सादे कागज पर बोली के मूल्य साथ जमा कर सकते हैं। इसके साथ बोली लगाने वाले का विस्तृत ब्योरा (केवाईसी डाक्यूमेंट, जैसे कि फोटो आईडी प्रूफ, पैन कार्ड व एड्रेस प्रूफ व इमेल आईडी) देना होगा, जो कि एक सीलबंद लिफाफे में अग्रिम जमा राशि के साथ होगा। इसे भेजने का पता एक्सिस बैंक लिमिटेड, स्ट्रक्चर्ड असेट्स ग्रुप, चतुर्थ तल, एसी मार्केट बिल्डिंग, 1 शेक्सपियर सरानी कोलकाता-700071 होगा। 6. उक्त उल्लेखित संपत्ति को आरक्षित मूल्य से कम पर नहीं बेचा जाएगा। बोली लगाने वालों को अपने ऑफर में 10 हजार के अपवर्त्य में सुधार का मौका दिया जाएगा। 7. बोली लगाने के इच्छुक व्यक्ति के पास चालू ई-मेल आईडी होना जरूरी है और उसे अपना नाम पोर्टल http://axisbank.auctiontiger.net पर पंजीकृत कराना होगा। इससे वे एम/एस ई-प्रोक्योरमेंट टेक्नोलॉजिस लिमिटेड से अपना यूजर आईडी व पासवर्ड मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं। जिसके बाद वे ई नीलामी की प्रक्रिया में भाग ले सकेंगे। 8. बोली के इच्छुक लोग एम/एस ई-प्रोक्योरमेंट टेक्नोलॉजिस लिमिटेड, (ऑक्शन टाइगर) से ई-नीलामी के बारे में ऑनलाइन ट्रेनिंग भी हासिल कर सकते हैं। इसके लिए श्री के राजू से उनके मोबाइल नंबर +91 9002715034 पर संपर्क किया जा सकता है। इनका ई मेल आईडी wb@auctiontiger.net, support@auctiontiger.net है। टोल फ्री नंबर 18001035342 है। 9. सर्वाधिक ऊंची/सफल बोली लगाने वाले के केस में अग्रिम धन राशि (ईएमडी)को समायोजित कर लिया जाएगा। अन्य बोली लगाने वालों की ईएमडी राशि उनके द्वारा बोली के लिए किए गए आवेदन में उल्लेखित पते पर (बिक्री पूर्ण हो जाने के दो कार्यदिवस में) विफल हो जाने वालों को भेज दी जाएगी। या वे एक्सिस बैंक लिमिटेड, स्ट्रक्चर्ड असेट्स ग्रुप, चतुर्थ तल, एसी मार्केट बिल्डिंग, 1, शेक्सपियर सरानी कोलकाता-700071 में पहुंचकर अपनी ईएमडी राशि प्राप्त कर सकते हैं। ईएमडी पर किसी प्रकार का ब्याज देय नहीं होगा। 10. इच्छुक पक्ष एक्सिस बैंक के दूरभाष क्रमांक 033-66272047 पर कॉल कर संबंधित संपत्तियों का जायजा ले सकते हैं। 11. सर्वाधिक ऊंची/सफल बोली लगाने वालों को बिक्री मूल्य का 25 फीसदी राशि ईएमडी राशि के समायोजन के बाद जमा करानी होगी। यह राशि प्राधिकृत अधिकारी द्वारा उच्च बोली स्वीकार किए जाने के 24 घंटे के भीतर जमा करानी होगी। ऐसा नहीं करने पर अग्रिम जमा राशि जब्त कर ली जाएगी। ऊंची बोली लगाने वाले को संबंधित संपत्ति को खरीदने वाला घोषित कर दिया जाएगा, बशर्ते वह बोली लगाने के लिए कानूनी रूप से पात्र हो। खरीदने वाले को बची 75 फीसदी राशि को प्राधिकृत अधिकारी द्वारा बिक्री सुनिश्चित करने के 15 दिन के भीतर जमा करना होगा। या यह राशि उस बढ़ी हुई अवधि तक भी जमा कराई जा सकती है, जिसके बारे में प्राधिकृत अधिकारी द्वारा लिखित में सहमति दी गई हो। इसका सर्वाधिकार भी प्राधिकृत अधिकारी के विवेक पर ही निर्भर होगा। 12. सफल बोली लगाने वाले के द्वारा बची राशि के जमा नहीं करने पर उसके द्वारा जमा किया गया पूरा पैसा जब्त कर लिया जाएगा। इसके लिए उसे कोई पूर्व नोटिस भी नहीं दिया जाएगा और प्रापर्टी फिर से बेची जाएगी। सुरक्षित लेनदार (बैंक) द्वारा लिखित में राशि जमा करने की अवधि न बढ़ाए जाने की स्थिति में ये होगा और संपत्ति दोबारा बेच दी जाएगी। राशि का भुगतान बैंकर्स चेक/डिमांड ड्राफ्ट के रूप में होना चाहिए जो कि एक्सिस बैंक के प्राधिकृत अधिकारी के पक्ष में तैयार किया गया हो। राशि इनके समकक्ष को भी अदा की जा सकती है। 13. सफल बोली लगाने वाले द्वारा नीलामी बिक्री की शर्तें व नियम नहीं मानने पर अग्रिम जमा राशि बिना नोटिस के जब्ती योग्य हो जाएगी। 14. उक्त उल्लेखित संपत्ति को आरक्षित मूल्य के नीचे नहीं बेचा जाएगा। 15. संपत्ति को लेकर सरकार या किसी अन्य पक्ष को देय प्रापर्टी टैक्स, अन्य किसी चार्ज, तीसरे पक्ष के दावे या ग्रहणाधिकार के लिए बैंक जिम्मेदार नहीं रहेगा। बैंक ने बिक्री के लिए ऑफर की गई संबंधित बंधक संपत्ति को लेकर कोई अनुमति, लाइसेंस आदि हासिल करने की जिम्मेदारी नहीं ली है। 16. सर्वाधिक ऊंचे/ या सभी प्रकार के ऑफर स्वीकार करने या अस्वीकार करने के सभी अधिकार एक्सिस बैंक के पास सुरक्षित रहेंगे। बैंक चाहे तो नीलामी को स्थगित या आगे के लिए भी टाल सकता है। इसके लिए बैंक को किसी पूर्व सूचना व कारण देना अनिवार्य नहीं है। इसी तरह बिना किसी पूर्व नोटिस के किसी भी शर्त व नियम में सुधार भी हो सकता है। 17. सर्वाधिक ऊंची बोली को स्वीकार करना बैंक के उच्च सक्षम प्राधिकारी का विषय होगा। बैंक के पास यह अधिकार भी सुरक्षित है कि वह संबंधित प्रापर्टी को एसएआरएफएईएसआई रुल्स, 2002 में उल्लेखित किसी भी व्यवस्था के तहत बेच सकता है। 18. सफल बोली लगाने वाले को हस्तांतरण के लिए आने वाले खर्च, फीस आदि को वहन करना होगा। जैसे कि स्टॉम्प ड्यूटी रजिस्ट्रेशन फीस, टैक्स, आकस्मिक खर्च आदि, जो कुछ भी कानून सम्मत है। यदि कोई कानूनी ड्यू हो तो वो भी सफल बोली लगाने वाले को ही चुकाना होगा। 19. इस नोटिस का कोई भी बिंदु बैंक की ओर से उक्त प्रापर्टी बेचने की प्रतिबद्धता या अभिवेदन स्थापित नहीं करता और न ही इसे प्रतिबद्धता या अभिवेदन समझा जाएगा। बैंक या प्राधिकृत अधिकारी, उसे जो भी कारण उचित लगे, के आधार पर बिक्री रद्द करने का अधिकार रखता है। या यहां तक कि कोई कारण चिह्नित किए बगैर भी ऐसा कर सकता है। इस प्रकार से बिक्री रद्द करने के फैसले पर बोली लगाने वाले सवाल खड़े नहीं कर सकते। 20. यह टेंडर भरने वालों की जिम्मेदारी है कि वे बोली में शामिल होने से पूर्व उक्त संपत्ति व उसके विवरण की पड़ताल कर उसके बारे में खुद को संतुष्ट करें। 21. संपत्ति पर कोई भी कानूनन बकाया राशि होने पर उसे खरीदार की ओर से चुकाया जाएगा। 22. सेल सर्टिफिकेट बोली का पूरा पैसा व अन्य शुल्क (यदि कोई हो तो) जमा करने के बाद ही दिया जाएगा। 23 विशेष निर्देश व सावधानीः बोली लगाने वाला व्यक्ति अंतिम मिनट/सेकंड में बोली प्रक्रिया को अपनी इच्छा पर त्याग सकता है। वेंडर की ओर से किसी भी नुकसान या फेल्योर (बिजली, इंटरनेट खंडित होना आदि) की स्थिति में न तो बैंक न ही सर्विस प्रोवाइडर कंपनी जिम्मेदार होगी। ऐसी आकस्मिक प्रतिकूल परिस्थितियों से बचने के लिए बोली लगाने वालों से अपील की जाती है कि वे सभी जरूरी व वैकल्पिक उपायों जैसे- बैक अप पॉवर सप्लाई और जो कुछ भी जरूरी हो की व्यवस्था करें। 24. बिक्री से जुड़ा बिक्री नोटिस नियम व शर्तों के विस्तृत ब्योरे के साथ एक्सिस बैंक लिमिटेड की वेबसाइट पर उपलब्ध है, जिसका लिंक है- www.axisbank.com/auction-notices.

दिनांक: 4-1-2020, स्थान: रायपुर, छत्तीसगढ़ — प्राधिकृत अधिकारी/एक्सिस बैंक लिमिटेड

न्यूज गैलरी

ठंड बढ़ने से ले रहे अलाव का सहारा

तिल्दा-नेवरा। अंचल में पड़ रहे कड़ाके के ठंड बारिश शीतलहर के चलते जनजीवन प्रभावित हुआ है जनमानस सुबह से लेकर शाम तक अलाव का सहारा ले रहे हैं प्रशासन भी इस मामले को लेकर सतर्कता बरत रही है जिलाधीश रायपुर के आदेशानुसार शिक्षा विभाग ने भी शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों छात्राओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर प्राकृतिक कहर से बचाव हेतु दो दिन की विद्यालयों में शासकीय अवकाश की घोषणा की है जिला शिक्षाधिकारी रायपुर जी आर चंद्राकर के प्रेषित पत्र के अनुसार कंपकंपाती ठंड , शीत लहर से बचाव हेतु जिला कलेक्टर रायपुर के आदेशानुसार 03 एवं 04 जनवरी को शासकीय ,अर्धशासकीय , अनुदान प्राप्त विद्यालय, मदरसा, में अवकाश घोषित की गई है । जिला शिक्षाधिकारी के अनुसार छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर द्वारा संचालित कक्षा नवमी एवं कक्षा दसवीं की परीक्षाएं यथावत संपन्न होगी ।

उठाव धीमा, 19 लाख क्विंटल धान जाम

महासमुंद। तेज बारिश के कारण खरीदी केंद्रों की हालत खराब है। इधर, मौसम विभाग की ओर से जारी अलर्ट के बाद जिला विपणन विभाग और खरीदी केंद्र प्रभारियों की हालत खराब है, क्योंकि उठाव की धीमी रफ्तार के कारण केंद्रों में अब भी 19 लाख क्विंटल से अधिक धान जाम है। हालांकि विभागीय अधिकारियों का दावा है कि केंद्रों में धान सुरक्षित रखने के सभी इंतजाम कर लिए गए हैं। धान भीगने जैसी कोई भी परेशानी केंद्रों में नहीं होगी।

130.40 क्विंटल धान जब्त

महासमुंद। धान के अवैध भंडारण और परिवहन पर गुरूवार को छह प्रकरण में 130.40 क्विंटल धान जब्त किए गए। इनमें सेवकराम निषाद, ग्राम मुढ़ेना से 20 क्विंटल, पुरूषोत्तम पटेल, ग्राम नांदगांव से 16 क्विंटल, सुमित्रा डड़सेना ग्राम पझरापाली से 40 क्विंटल, गुलाबसिंह नेताम, ग्राम पझरापाली से 14.40 क्विंटल, लक्ष्मी ट्रेडिंग कंपनी भगतदेवरी से 20 क्विंटल, मितेश साहू, मालती राइस मिल नरसिंगपुर से 20 क्विंटल धान जब्त किया गया।

युवक से मारपीट, जुर्म दर्ज

महासमुंद। नशे में गाली गलौज कर रहे युवक को मना करने पर मारपीट कर दी। चिंगरौद निवासी केशव पटेल (26) के मुताबिक एक जनवरी की सुबह 9 बजे गांव के पुरन पटेल नशे में गाली गलौज कर रहा था। जिसे मना करने पर उन्होने डंडे से सिर पर वार कर दिया। पुलिस ने पुरन के खिलाफ धारा 294, 323, 506 के तहत अपराध दर्ज किया है।

गिट्टी रखने पर विवाद

महासमुंद। गिट्टी रखने की बात पर तीन लोगों ने युवक की पिटाई कर दी। मामला पटेवा क्षेत्र के छुआलीपतेरा का है। परमेश्वरी बंजारा (26) ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है कि उनकी जमीन पर गांव के छबि बंजारा ने गिट्टी रख दिया था। परमेश्वरी के पति नवीन बंजारा ने हटाने के लिए कहा, इससे नाराज छबि पटेल, संतोष बंजारा और ज्ञान सिंह ने मारपीट की व जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने उक्त तीनों के खिलाफ अपराध दर्ज किया है।

युवक से शराब बरामद

महासमुंद। सिरपुर नहर नाली के पास तुमगांव पुलिस ने बुधवार शाम सवा 5 बजे गाड़ाघाट निवासी रामेश्वर ध्रुव के कब्जे से अवैध रूप से बिक्री के लिए रखी 3.480 लीटर देशी प्लेन शराब बरामद की। जिस पर आबकारी एक्ट 34 ए के तहत कार्रवाई की गई।

चार जुआरी पकड़ाए

महासमुंद। फुलवारी कला रेलवे फाटक के पास बागबाहरा पुलिस ने एक जनवरी की रात साढ़े 10 बजे चार लोगों को जुआ खेलते पकड़ा। जिनके कब्जे से नकदी 21 सौ रुपए और ताशपत्ती बरामद की। जुआरियों पर जुआ एक्ट के तहत कार्रवाई की।

कुंए में डूबकर वृद्ध की मौत

महासमुंद। कुंआ में डूबने से वृद्ध की मौत हो गई। कोमाखान पुलिस के अनुसार खेमड़ा में एक जनवरी की सुबह 6 बजे रामनाथ साहू (80) की कुंए में शव मिला। परिजनों की सूचना पर मर्ग कायम कर विवेचना में लिया है।

जनपद सदस्य के लिए फार्म लिया

महासमुंद। जनपद पंचायत महासमुंद के क्षेत्र क्रमांक 15 से जनपद सदस्य के लिए नरेश सारथी ने मंगलवार को नामांकन खरीदा। गौरतलब है कि श्री सारथी क्षेत्र क्रमांक 15 खट्टी क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय हैं। श्री सारथी 6 जनवरी को नामांकन दाखिल करेंगे।

शिक्षक ओमप्रकाश का सम्मान

महासमुंद। ग्राम खरोरा के कॅरियर पाइंट कोचिंग क्लास में नववर्ष पर गांव के क्रियाकलाप में योगदान देने पर मुकेश चंद्राकर और शिक्षकीय क्षेत्र में योगदान के लिए शिक्षक ओमप्रकाश चंद्राकर को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कुणाल चन्द्राकर, लक्ष्मी वर्मा, अरूण चन्द्राकर आदि मौजूद थे।

देवकर नगर के नवनिर्वाचित पार्षद अज्ञातवास में गए

- पार्षदों की खरीद फरोख्त के डर से पार्टी ने दिया दिशा निर्देश
- एक पार्षद तोड़ने की डर से भाजपा चौकन्ना

नवप्रदेश संवाददाता

साजा। नगर पंचायत देवकर मे नगरी निकाय चुनाव की मतगणना एवं वार्ड क्रमांक पन्द्रह की जीत हार की फैसला बहूत ही गहमा-गहमी तनावपूर्ण और कांग्रेस एवं भाजपा पार्टी के उम्मीदवारों कार्यकर्तोओ एवं जनप्रतिनिधियो के बीच आपस मे टकराव संघर्ष के बीच फैसला हुआ था। ज्ञात हो कि देवकर नगर मे नगर पंचायत की पन्द्रह वार्डो के चुनाव परिणाम मे 8 सीटो पर भाजपा, 6 सीटों पर कांग्रेस और 1 सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार विजयी हुआ है। विजयी

निर्दलीय प्रत्याशी कांग्रेस पार्टी के पक्ष में जा सकता है। इसे देखते हुऐ कांग्रेस पार्टी को देवकर नगर पंचायत मे अध्यक्ष बनाने के लिये एक पार्षद की और जरूरत पड़ेगी, जो भाजपा पार्टी के प्रत्याशी को तोड़कर किया जा सकता है। जिसे देखते हुऐ डर और भय के कारण भाजपा पार्टी के आला नेताओ, पदाधिकारियों ने नव निर्वाचित भाजपा पार्टी के पार्षदों को देवकर से बाहर बुलाकर एकांत वास मे रखा है।

देवकर नगर पंचायत अध्यक्ष पद पिछड़ा वर्ग महिला आरक्षित है। जिसमें भाजपा पार्टी के एक ही महिला उम्मीदवार जंत्री बाई साहू वार्ड क्रमांक 4 से विजयी होकर आई है। जो अब देवकर नगर की बागडोर उनकी हाथ मे जायेगी। कांग्रेस पार्टी मे नवनिवार्चित 6 पार्षदों मे 4 महिला और दो पुरूष पार्षद है। पचासों सालों बाद पहली बार भाजपा पार्टी की पूर्ण बहूमत का आकंडा आया है। अब तक के कार्यकालों पर नजर डाले तो देवकर नगर मे ग्राम पंचायत से नगर पंचायत तक की सफर में नगर की बागडोर कांग्रेस पार्टी के ही उम्मीवारो के पास रहीं हैं। यह पहला अवसर होगा की भाजपा पार्टी अपने दम पर सरकार बनायेगी या फिर.....? देखते है आगे क्या जोड़तोड़ की गणित बैठता है। क्या यहां भाजपा पार्टी की सपना साकार होगी या फिर बीच मझधार में ही अटक जायेगी। यह सब कुछ नवनिर्वाचित भाजपा पार्टी के पार्षदों के हाथो मे संयम और एकता की बल पर निर्भर करता है ।

ऐसा लगता है कि विपक्ष पार्टी की अन्तिम समय तक कोशिश तो जारी रहेगी कि देवकर नगर का बागडोर उनके हाथों मे आ जाये जिससे भाजपा को नगर मे सरकार बनाने से रोका जा सके। देवकर नगर पंचायत साजा विधानसभा क्षेत्र की एक अहम राजनैतिक क्षेत्र है। जो एक कुरुक्षेत्र से कम नहीं हैं। यहाँ के विधायक और दबंग नेता छत्तीसगढ़ शासन के कैबिनेट मंत्री रविन्द्र चौबे है। जिनके सामने अच्छे अच्छे लोगों को नतमस्तक होते देखे गये है। साजा विधानसभा क्षेत्र के साथ साथ पुरे छत्तीसगढ़ मे जिनका नाम और दिशा निर्देश चलता है।

अब देखना होगा की भाजपा पार्टी अपनी नैय्या डूबने से बचा पाती है या फिर ?

जो भी हो पर अगर देवकर नगर मे साहू समाज की एक महिला के हाथों बागडोर जाती है तो पुरे साहू समाज के लिऐ यह गौरव और शान की बात होगी। नगर सहित क्षेत्र, जिला व प्रदेश स्तर मे साहू समाज का सम्मान और कद बढ़ेगा और महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा और ताकत मिलेंगी। साथ ही नगर मे पहली बार किसी महिला के हाथों में नगर की कमान जा रही है यह एक स्वागत योग्य है। नगर वासी भी देखना चाहते है की भाजपा पार्टी की नेतृत्व में देवकर का विकास किस दिशा में जायेगी। इसी लिये इन्हे आम जनता, मतदाताओं ने अपना मत, आर्शीवाद और बहूमत देकर मौका दिया है। आम जनता पचास साल की विकास और पांच साल की कार्यकाल का हिसाब भी करेंगे। इसी लिऐ होना चाहिये जो जीता ओ सिकन्दर। इस पर किसी भी प्रकार का राजनैतिक और उलट फेर नहीं होना चाहिये। तभी लोगों का विश्वास और आस्था राजनिती और जनप्रतिनिधियो पर बनी रहेगी।

गृहे-गृहे दीप यज्ञ आयोजित कर संकल्प दिवस मनाया

- आगामी पांच माह में मनाए जाने वाले दिवसों के लिए लिया संकल्प

नवप्रदेश संवाददाता

महासमुंद। गायत्री परिवार ने एक जनवरी को संपूर्ण जिले में अन्तर्राष्ट्रीय नव वर्ष को गृहे-गृहे दीप यज्ञ आयोजित कर संकल्प दिवस के रूप में मनाया। इसी क्रम में सामूहिक दीप यज्ञ का आयोजन स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में किया गया जिसमें गायत्री परिवार के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

नववर्ष में आगामी पांच माह में किए जाने वाले कार्यों, मनाए जाने वाले दिवसों के लिए संकल्प लिया और कार्ययोजना पर चर्चा की। इस वर्ष आयोजित होने वाले प्रमुख दिवसों में 12 जनवरी युवा चेतना दिवस, 14 जनवरी मकर संक्रांति पर्व, 23 जनवरी युवा गौरव दिवस सुभाषचंद्र बोस जयंती के संदर्भ में, 26 जनवरी गणतंत्र दिवस, 30 जनवरी को वसंत पंचमी देव संस्कृति पुनरुत्थान दिवस के संदर्भ में, 30 जनवरी पीड़ा निवारण दिवस महात्मा गांधी का बलिदान दिवस के संदर्भ में, 28 फरवरी राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, आठ मार्च नारी सशक्तिकरण दिवस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के संदर्भ में, 9 मार्च होलिका दहन दिवस अश्लीलता दहन दिवस के संदर्भ के रूप में, 22 मार्च विश्व जल दिवस, 25 मार्च विक्रम संवत्सर आरंभ चैत्र नवरात्र के संदर्भ में, एक से सात अप्रैल स्वास्थ्य संवर्धन सप्ताह विश्व स्वास्थ्य दिवस के संदर्भ में, 25 अप्रैल परशुराम जयंती के संदर्भ में 30 अप्रैल गंगा सप्तमी गंगाजी के जन्म दिवस पर कार्यक्रम के संदर्भ में चर्चा की गई। भगत राम साहू ने बताया कि गुरुदेव के कार्यों को आगे बढ़ाने का आह्वान उपस्थित जन से किया गया। साथ उन्होंने दीप यज्ञ का संचालन संगीतमय रूप से किया। इस अवसर पर परिजनों ने संकल्प का दीप जलाया और सबके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। अंत में मिष्ठान वितरण कर कार्यक्रम की समाप्ति की गई। आभार प्रदर्शन ललित कुमार मेश्राम ने किया।

परीक्षा की समय सारिणी में कोई बदलाव नहीं

महासमुंद। शीत लहर की संभावना को देखते हुए कलेक्टर सुनील कुमार जैन ने जिले के सभी शासकीय-अशासकीय और अनुदान प्राप्त स्कूलों में अवकाश घोषित किया है। जिला शिक्षा अधिकारी बीएल कुर्रे ने बताया कि शीत लहर के चलते शुक्रवार और शनिवार को स्कूलों में अवकाश रहेगा, लेकिन माशिमं की ओर से आयोजित नवमीं और दसवीं की परीक्षाएं समयानुसार संपन्न कराई जाएगी इसमें किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है।

झांकी के साथ हुआ दही लूट

महासमुंद। वार्ड 23 सुभाष नगर में श्रीमद् भागवत महापुराण ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। कथावाचक पंडित बलदाऊ महाराज और परायणकर्ता पंडित प्रवीण कृष्ण महाराज हैं। श्रीमद् भागवत के पंचम दिवस वामन अवतार और कृष्ण जन्मोत्सव की कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन कर झांकी के माध्यम से जीवंत स्वरूप का आनंद श्रोताओं ने लिया। छठवें दिवस वृंदावन में भगवान श्री कृष्ण के बाल लीला की झांकी के माध्यम से वर्णन करते हुए दही लूट हुआ।

कृषि मंत्री के गृहग्राम मौंहाभाठा में समाधान महाविद्यालय के विद्यार्थियों का विस्तृत सर्वेक्षण

नवप्रदेश संवाददाता

साजा/बेमेतरा। छत्तीसगढ़ के कृषि और जल संसाधन मंत्री रविन्द्र चौबे के गृह ग्राम मौंहाभाठा (साजा) में समाधान महाविद्यालय बेमेतरा के बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर के 100 विद्यार्थियों और प्राध्यापकों ने मानव के जीने के 5 आयामों शिक्षा संस्कार योजना, स्वास्थ्य संयम योजना, न्याय सुरक्षा योजना, उत्पादन विनिमय योजना और विनिमय कोष योजना के साथ पूरे गाँव के कुल 150 परिवारों की सभी सामान्य जानकारी के साथ विस्तृत सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के लिए महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने बी एड द्वितीय सेमेस्टर के सभी 100 विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिये थे। यह सर्वेक्षण प्रपत्र मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के प्रणेता श्रद्धेय ए नागराज द्वारा लिखित पुस्तक आवर्तनशील अर्थशास्त्र में ग्राम व्यवस्था सुधार के लिए सुझाये गए उपायों के आधार पर बनाया गया है। जिसमें सर्वेक्षण पश्चात गाँव की वास्तविक स्थिति का पता चल जाता है। इस प्रपत्र में कुल 70 प्रश्नों का संकलन है। एक घर में सर्वेक्षण के लिए लगभग 40 मिनट का समय लगता है। सर्वेक्षण परिणामों के आधार पर गांव की उपलब्धि व समस्या को ध्यान में रखते हुए इसके आधार पर समाधान केंद्रित कार्यक्रम प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में तैयार करवाया जाएगा।

सरकार की घोषणा, मजदूरों के साथ धोखाधड़ी : चोपड़ा

महासमुंद। पूर्व विधायक डॉ विमल चोपड़ा ने मुख्यमंत्री द्वारा निर्माण स्थल पर कार्यरत मजदूरों को मृत्यु के दौरान दी जाने वाली राशि की घोषणा को नई बोतल में पुरानी शराब की कहावत को चरितार्थ करने वाला बताते हुए इसे छत्तीसगढ़ के मजदूरों के साथ धोखाधड़ी बताया है। डॉ चोपड़ा ने कहा कि श्रम विभाग के संबंध में पूर्व सरकार द्वारा चलायी जा रही योजना में घर से निकलकर कार्यस्थल तक जाने और वहां से आने के दौरान होने वाली दुर्घटना में मृत्यु के दौरान चार लाख रुपए का प्रावधान था। जिसे वर्तमान सरकार ने 75 प्रतिशत कम कर एक लाख किया है।

विद्युतकर्मी दिनेश तिवारी के सेवानिवृत्ति पर दी गई विदाई

राजनांदगांव। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड के एसटीएम संभाग कार्यालय राजनांदगांव में परिचारक श्रेणी एक लाईन के पद पर पदस्थ दिनेश कुमार तिवारी के सेवानिवृत्त होने पर क्षेत्रीय प्रशासनिक भवन के सभाकक्ष में भावभीनी बिदाई दी गई। इस विदाई कार्यक्रम में कार्यपालक निदेशक संजय पटेल ने सेवानिवृत्त तिवारी को शॉल, श्रीफल, एवं प्रतीकात्मक भेंट प्रदान कर शुभकामनायें दी। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री पटेल ने कहा कि सेवानिवृत्त होना एक स्वभाविक प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया से हम सबको गुजरना होगा। मृदुभाषी, सहज एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी श्री तिवारी अपने 30 वर्षो की सेवाकाल की अवधि में बिजली कंपनी में अमिट छाप छोड़ गये।

राज करही मजदूर किसान यात्रा को छुरिया क्षेत्र में भारी समर्थन

नवप्रदेश संवाददाता

राजनांदगांव। बारी-बारी से कांग्रेस भाजपा की सरकारें से ठगे जाने के दुष्चक्र से मुक्ति पाने जनता द्वारा विकल्प दिये जाने के अभियान को प्रेरित करने के उद्देश्य से जारी राज करही मजदूर किसान यात्रा गुरूवार को छुरिया पहुंची। 30 दिसंबर को राजनांदगांव से प्रारंभर होकर ये यात्रा ठेलकाडीह, पेन्ड्री, मुसरा, डोंगरगढ़, कल्याणपुर, अंडी, बोरतलाव, पीटेपानी, मोहनपुर, बागरेकसा, चारभाठा होते हुए चिरचारी, खोभा, भर्रीटोल होते भेजराटोला में बुधवार रात्रि विश्राम किया। क्षेत्र में यात्रा को भारी समर्थन मिल रहा है। यात्रा के आह्वान पर आगामी पंचायत चुनाव में जनता द्वारा प्रत्याशी देने का विचार सभी को बहुत भा रहा है।

यात्रा गुरूवार को छुरिया पहुंची एवं पत्रवार्ता करते हुए सुदेश टीकम ने कहा कि पिछली सराकर ने भी 2100 रूपये समर्थन मूल्य एवं 5 साल बोनस के नाम से छका अब कांग्रेस सरकार आधा अधूरा कर्जमाफी कर ढिंढोरा पीट रहा है। एक साल 2500 रू. में धान खरीदा अब 1815 व 1835 में धान खरीदी कर रही है। देरी से धान खरीदी चालू कर दैनिक खरीद सीमा को कम कर दिया है जिससे किसानों का धान सोसायटी में नही बिक पा रहा है। गांव के छोटे कोचियों को छापामारी, जब्ती कर परेशान किया जा रहा है। जिससे अंततः किसान ही परेशान हो रहा है।

उपभोक्ताओं के हितों पर चर्चा की गई

राजनांदगांव। मातृछाया परिसर अनुपम नगर चौक वीआईपी रोड़ में अखिल भारतीय उपभोक्ता उत्थान संगठन द्वारा राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस मनाया गया। राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस पर खाद्य एवं संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत से मुलाकात कर उन्हें संगठन के उद्देश्यों से अवगत कराया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से संगठन के राष्ट्रीय प्रवक्ता बिमलेश पांडे, महासचिव शशि श्रीवास्तव, छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष चितरंजन कुमार पर्वत, प्रदेश महामंत्री खुलेश वर्मा, प्रवक्ता राजकुमार साहू, उपाध्यक्ष शैलेष चौधरी, रायपुर जिला प्रभारी टिकेन्द्र कुमार साहू, जिला अध्यक्ष देवेन्द्र जांगड़, राजनांदगांव जिला उपाध्यक्ष अजय आर्या (दद्दू) एवं जिला सचिव प्रहलाद रुचंदानी (बल्ली) आदि उपस्थित थे। इन्होंने उपभोक्ताओं के हितों पर अपने अपने विचार मंच पर व्यक्त किए। राष्ट्रीय प्रवक्ता बीके पंडित ने कहा कि वैश्वीकरण एवं बढ़ते ई-कामर्स के किस दौर में भारत में उपभोक्ताओं के हितों पर पुराने कानून को संशोधित कर नया उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 लाया गया। इस कानून का मकसद उपभोक्ताओं को अनुचित व्यापार व्यवहारों से होने वाले नुकसान से बचाना और व्यवस्था को सरल बनाना है।

जायजा स्वास्थ्य सुविधाओं की सराहना की, बीस अधिकारियों का दल दो दिवसीय दौरे पर

प्रशिक्षु आईएएस अधिकारियों ने शासकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बांधाबाजार का किया भ्रमण

राजनांदगांव। आईएएस अधिकारी प्रशिक्षण केन्द्र मसूरी से आए 20 प्रशिक्षु आईएएस अधिकारियों ने आज जिले के अंबागढ़ चौकी विकासखंड के राज्य स्तर पर पुरस्कृत शासकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बांधाबाजार पहुंचकर वहां की स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया। प्रशिक्षु आईएएस अधिकारियों ने कम स्टॉफ के बाद भी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में उपलब्ध कराई जा रही बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की प्रशंसा की। उल्लेखनीय है कि मसूरी से आए अधिकारियों का दल दो दिवसीय 2 और 3 जनवरी को राजनांदगांव जिले के भ्रमण पर है। अधिकारियों ने 2 जनवरी को एकलव्य आवसीय विद्यालय पेण्ड्री राजनांदगांव, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बांधाबाजार, आंगनबाड़ी केन्द्र जरहाटोला, रैनूटोला, शासकीय कन्या परिसर अंबागढ़ चौकी, आदर्श गौठान पीपरखार तथा उचित मूल्य दुकान एवं धान उपार्जन केन्द्र कौड़ीकसा अंबागढ़ चौकी का भ्रमण एवं अवलोकन किया। 3 जनवरी को जिला कार्यालय राजनांदगांव के सभाकक्ष में वनधन योजना का प्रस्तुतिकरण देखेंगे। उसके बाद मोहला के मजियापार में डंडा नृत्य के कलाकारों की प्रस्तुति देखने के बाद उनसे चर्चा करेंगे। मानपुर विकासखंड के एसएचजी महिला समूह तोलूम का भ्रमण एवं सामुहिक चर्चा के बाद आदर्श गौठान नवागांव विकासखंड मानपुर में नरवा, गरवा, घुरवा और बाड़ी योजना का अध्ययन करेंगे। उनका 3 जनवरी को ही आईटीबीपी कैम्प खड़गांव विकासखंड मानपुर, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मानपुर तथा हेल्थ एण्ड वेलनेस सेन्टर एवं हाट बाजार स्वास्थ्य शिविर कमानसुर विकासखंड मानपुर का अवलोकन एवं अध्ययन भ्रमण का कार्यक्रम है।

जूनियर को एसडीओ की कमान, मची हड़कंप

नवप्रदेश संवाददाता

कांकेर। ग्रामीण यांत्रिकी विभाग काँकेर के सब डिवीजन में 10 से 20 साल के अनुभवी रेगुलर एसडीओ को अटैच कर मुख्यालय में रखा गया है। और जनप्रतिनिधियों की नाराजगी का हिस्सा बने शर्मा एसडीओ को हटाकर शासन के नियमों व माननीय न्यायालय की अवमानना कर जूनियर उप अभियंता का पद देकर विभाग की किरकिरी करने वालों की खबर को हमने 3 जनवरी को बड़ी ही प्रमुखता से प्रकाशित किया गया था।खबर के बाद जूनियर उप अभियंता विकास श्रीवास्तव से लेकर जूनियर को एसडीओ की कमान सौपने वालों में जबरदस्त हड़कंप मचने की जानकारी मिली है। और जिस रेगुलर एसडीओ जिन्हे शिकवे शिकायत के आधार पर हटाकर मुख्यालय में अटैच करने वाले एसडीओ में खुशी साफ देखी जा सकती है।

क्या कहता है नियम किसे दिया जाना होता है

मिली जानकारी के अनुसार विभागीय बायलॉज की बात किया जाए तो जब मौजूदा हालत में अगर विभाग में रेगुलर एसडीओ है।तो बिना अपने मुख्य अभियंता ग्रामीण यांत्रिकी सेवा अधिकारी को पत्र व्यवहार किया जाता है।तब उनकी अनुमति के बाद ही जिसे लायक समझा जाएगा उसे ही इसकी कमान सौपी जाती है।अगर किसी रेगुलर एसडीओ की विभागीय जांच चल रही है और उन पर बड़ी अनियमितता का आरोप हो जो माननीय न्यायालय के समक्ष लंबित होता है उस स्थिति में किसी ज़िम्मेदार और सीनियर कर्मचारी को ही यह जगह दिया जा सकता है ।इसके अलावा उक्त पद के लिए जिले के प्रभारी मंत्री से भी अनुमोदन किया जाना बेहद ज़रूरी होता है। यह तो बिना किसी उच्च अधिकारी के अनुमति और ना ही प्रभारी मंत्री से अनुमोदन किया गया ।बस फटाफट फैसला लेकर सबसे जूनियर के हाथों एसडीओ जैसी ज़िम्मेदारी की कमान सौप दिया गया है।

नवप्रदेश लगातार

- जूनियर को चार्ज देने से पहले ना तो विभागीय अफ़सरों और ना ही प्रभारी मंत्री से लिया गया अनुमोदन
- माननीय न्यायालय के आदेशों की भी उड़ा रहे धज्जियाँ

सवालो के घेरे में जूनियर एसडीओ की नियुक्ति

बता दें की ग्रामीण यांत्रिकी विभाग के द्वारा जनपद पंचायत काँकेर में सब डिवीजन में जूनियर उप अभियंता विकास श्रीवास्तव को एसडीओ बनाया गया है। अब यह एक अबूझ पहेली की तरह बन रहा है। बिना उच्च अधिकारियों को अवगत किए बिना माननीय न्यायालय की अवमानना के अलावा प्रभारी मंत्री के अनुमोदन किए बिना ही एक जूनियर को एसडीओ की कमान कैसे सौप दिया गया है।

माननीय उच्च न्यायालय के आदेश की अवहेलना

बता दे की 27 मार्च 2008 को छत्तीसगढ़ शासन पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग को माननीय उच्च न्यायालय के पत्र क्रमांक 3649 में जिले के समस्त कलेक्टर व मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत के अलावा कार्यपालन अभियंता ग्रामीण यांत्रिकी सेवा को निर्देशित किया गया था की ग्रामीण यांत्रिकी सेवा विभाग में अन्य विभागों के अभियंताओ को वरिष्ठ पदों पर प्रभारी ना बनाया जाए ।तथा विभागीय अभियंताओ में से ही वरिष्ठ को प्रभार दिया जाए ।लेकिन माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देश को दरकिनार कर 3 रेगुलर एसडीओ की मौजूदगी व सीनियर कर्मचारी के होने के बावजूद जूनियर कर्मचारी को एसडीओ बनाए जाने का मामला तूल पकड़ता नज़र आ रहा है।

इनका कहना है

आरईएस के ईई को इस मामले पर रिपोर्ट मांगता हूं ।इस प्रकार जूनियर को बनाए जाने की जानकारी मुझ तक नही है। जांच कराई जाएगी।

-कलेक्टर,
के एल चौहान

मौसम बदला ठिठुरन बढ़ी

- स्कूलों की 2 दिन की अवकाश घोषित
- अलावा का लेना पड़ रहा सहारा

नवप्रदेश संवाददाता

कांकेर। बीते 2 दिनों से मौसम की आंखमिचौली के बाद गुरुवार दोपहर बाद से मौसम बुरी तरह बिगड़ चुका है।दोपहर बाद काँकेर सहित आसपास के इलाकों में हल्की बारिश होने के बाद से ही ठिठुरन और बढ़ गई है ।मौसम बदलने के बाद से ही लोग अलाव का सहारा लेने मजबूर दिखाई दे रहे है।गुरुवार देर रात हुई तेज बारिश से ठंड और बढ़ गई है। जिससे पहले से ही ठंड से ठिठुर रहे लोगों की परेशानियां और बढ़ा दी हैं। लगातार मौसम विभाग की चेतावनी व बिगड़ते मौसम को देखते काँकेर कलेक्टर ने मौसम के लिहाज से पूरे जिले में दो दिन के लिए स्कूलों की छुट्टी घोषित कर दी गई है। जिले में दो दिनों से काले घने बादल छाए हुए थे. गुरुवार देर रात झमाझम बारिश हुई, जिससे ठंड और बढ़ गई. बढ़ी हुई ठंड को देखते हुए कलेक्टर के.एल. चौहान ने सभी स्कूलों में दो दिनों का अवकाश घोषित कर दिया है।

ट्रेक्टर पर काम कर रहे युवक की करंट लगने से मौत

कांकेर। कच्चे चौकी क्षेत्र के ग्राम हिरगे में गुरूवार को सुबह करीब 10.30 बजे ट्रेक्टर में काम कर रहे एक युवक की करंट में झुलसने से दर्दनाक मौत हो गई। रिपोर्ट के आधार पर मर्ग कायम कर मामले की जांच पुलिस कर रही है।

जानकारी के अनुसार ग्राम हिरगे निवासी दिनेश्वर नरेटी ने पुलिस को जानकारी दिया कि गुरूवार को सुबह करीब 10.30 बजे मै अपने भाई रामाधीन नरेटी (19)पिता अमलूराम नरेटी के साथ गांव के सिमरन चनाप के ट्रेक्टर में जलाऊ लकड़ी लाने के लिए ग्राम पर्रेकोड़ो गए हुए थे। वहां से लकड़ी भर कर अपने घर वापस आकर घर बाड़ी में लकड़ी खाली कर रहे थे। ट्रेक्टर हाइड्रोलिक होने के कारण लकड़ी खाली करने के लिए उसे उपर उठाया तो वहां से हाई टेंशन तार गुजरा हूआ था जिसे ट्रेक्टर चालक नहीं देखा और ट्राली को उठा दिया । उपर से गई हाईटेंसन तार से ट्राली टकरा गई और लकड़ी खाली कर रहे युवक रामाधीन उसके चपेट में आ गया। करंट से गंभीर रूप से जले युवक को अस्पताल पहूंचाया गया जहां पर ईलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। सूचना के आधार पर पहूंची पुलिस मर्ग कामय कर मामले कि विवेचना में जूट गई है।

बिजली संसोधन बिल को लेकर डीएसपीएम के सामने धरना

नवप्रदेश संवाददाता

कोरबा। छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल अभियंता संघ में एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि मई 2003 में विद्युत अधिनियम 2003 लागू किया गया कहा गया कि 55 साल में बिजली बोर्डो का शकल घाटा एक लाख करोड़ पहुंच गया है इसलिए कानून में बदलाव जरूरी है इसके तहत बिजली बोर्ड भंग कर दिए गए कंपनियां बना दी गई निजी घराने बिजली के क्षेत्र में कूद पड़े बिजली की दरें बढ़ाई गई खर्च कम करने के नाम पर विभागीय भर्तियां कम होती गई और ठेके बढ़ते गए पर नतीजा क्या रहा मात्र 15 साल में बिजली कंपनियों का शकल घाटा दस लाख करोड़ पार कर गया बैंकों का 5 लाख करोड़ बिजली क्षेत्र में फस गया इसमें से ढाई लाख करोड़ तो केवल निजी घरानों को पावर हाउस लगाने के लिए दिए गए लोन है जिनका भुगतान नहीं हो रहा है और यह सब हुआ जब पिछले 15 साल में बिजली की दरों में जो वृद्धि हुई हो उसके पहले के किन्ही भी 15 सालों में बहुत ज्यादा थी यानी ÷मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की÷ ऐसे में होना तो यह था कि समीक्षा की जानी थी कि लाल बुझक्कड़ नमूना सुधारों के नाम पर जो गलत हुई है उसे कैसे और कितनी जल्दी सुधार आ जाए होना यह चाहिए था ।

सुने मकान का ताला तोडक़र नगदी समेत डेढ़ लाख के गहनों की चोरी

नवप्रदेश संवाददाता

कांकेर। कोतवाली थाना क्षेत्र में बिती रात अज्ञात चोरों ने सुने मकान का ताला तोडक़र घर के आलमारी में रखे नगदी समेत करीब डेढ़ लाख रूपये गहनों को चोरी कर फरार हो गए । सुबह किरायेदार के द्वारा फोन पर घर का ताला टुटने की सूचना देने पर घर पहूंचे मकान मालिक ने थाना में चोरी होने की रिपोर्ट दर्ज कराई है।

जिला पुलिस की तमाम कोशिशों के बावजूद भी जिले में चोरी की घटनाओं पर अंकुश नहीं लग रही है। लगातार एक के बाद एक चोरी की घटनाएं सामने आ रही है और जिला पुलिस मामला दर्ज कर विवेचना में जूटी हुई है। चोरों के द्वारा दिन में रेकी कर रात में सुने मकान का ताला तोडऩे की कई घटनाएं सामने आने के बाद भी चोर पुलिस के गिरफ्त से बाहर घुम रहे हैं । ऐसे ही एक घटना फिर से सामने आई जब एक परिवार घर पर ताला लगाकर परिजनों से मिलने गए इधर चोरों ने ताला तोडक़र पुरा घर साफ कर दिया । जानकारी के अनुसार एकता नगर निवासी विष्णुप्रसाद सोनी ने थाना में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि गुरूवार को शाम करीब 7.30 बजे मै अपने बेटी दामाद के साथ छोटी बहन से मिलने के लिए चारामा गए हूए थे। शुक्रवार को सुबह करीब 8 बजे किराएदार शिल्पी ठाकुर ने फोन कर बताई कि जब मै बोर चालु करने के लिए सुबह नीचे आई तो घर के सामने का चैनल गेट का ताला टुटा हूआ है और घर का दरवाजा खुला है। सूचना मिलते ही मै तत्काल अपने घर पहूंचा और आकर देखा तो चैनल गेट का ताला आरी से काटा गया था और अंदर जाकर देखा तो दरवाजा का ताला भी टुटा हुआ था । बेडरूम में गया तो वहां पर सभी सामान इधर से उधर बिखरा पड़ा हुआ था।

नवनिर्मित ओपीडी का उद्घाटन

- मरीजों को मिलेगी बेहतर सुविधा

नवप्रदेश संवाददाता

अम्बिकापुर। छत्तीसगढ़ शासन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री टीएस सिंहदेव ने आज यहां मेडिकल कॉलेज संबंद्ध जिला अस्पताल में नव निर्मित द्वितीय ओपीडी कॉउन्टर का उद्घाटन फित्ता काटकर किया। इस ओपीडी कॉउन्टर के बन जाने से द्वितीय पाली के ओपीडी हेतु मरीजों को सुविधा होगी। स्वास्थ्य मंत्री के पहल से प्रदेश के स्वास्थ्य केन्द्रों में सुबह एवं शाम को ओपीडी बीते 1 जनवरी 2020 से प्रारंभ हो गया है। स्वास्थ्य मंत्री श्री सिंहदेव ने ओपीडी काउन्टर का निरीक्षण करते हुए उपस्थित कर्मचारियों को मरीजो के साथ सहानुभुतिपूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने की समझाइश दी। उन्होने काउन्टर में रखे गये कम्प्यूटर एवं अन्य उपकरणों का भी अवलोकन किया। ततपश्चात श्री सिंहदेव ने गंगापुर में निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज भवन की प्रगति का जायजा लिया और अधिकारियों को शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण निर्माण के लिए आवश्यक निर्देश दिए।

एनआरसी निकली हिंदुस्तान के संविधान की कातिल : हम्माद रज़ा बरेलवी

कांकेर। हिंदुस्तान के सबसे बड़े सूफी प्रचारक व धर्म गुरु आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खां फाज़िले बरेलवी के खानदान से हज़रत मौलाना हम्माद रज़ा कादरी ने अपने एक बयान में कहा कि एनआरसी ने हिंदुस्तान के भविष्य को चकनाचूर कर के रख दिया है कॉलेज के बच्चों पर जो हिंदुस्तान का भविष्य है उन पर जुल्म ज़्यादती के पहाड़ तोड़े गए लाठियां बरसाई गई जिसमें कई लोगों की जानें गई सिवाए हिंदुस्तान की संपत्ति के नुकसान के कुछ हासिल ना हो सका! हम्माद मियां बरेलवी ने कहा कि अब इस सूरत में सवाल यह पैदा होता है कि जो हिंदुस्तान को जानी व माली नुकसान हुआ है उसका जिम्मेदार किसको ठहराया जाए ? उन लोगों को जिन्होंने हिंदुस्तान में बड़े पैमाने पर आर्थिक तंगी के चलते एन आर सी जैसे बिल को लाने की नाकाम कोशिश कर डाली या किसी और तीसरे को?हम्माद मियां बरेलवी के निजी सचिव मौलवी अबरार रज़ा सिब्तैनी ने कहा कि हिंदुस्तान की आवाम को इस पर खास तवज्जो देने की जरूरत है हुकूमत के किसी बहकावे में आने से बचें और आपस में भाईचारे का माहौल पैदा करें हमें मिल जुलकर अपने हिंदुस्तान को आगे बढ़ाना है ।

शीत लहर और ठंड से बचने के तरीको पर रखें ध्यान

कवर्धा। कबीरधाम जिले में शीत लहर, कड़ाके की ठंड और बारिश होने के कारण छात्र-छात्राओं को ठंड से बचाव के लिए कलेक्टर अवनीश कुमार शरण के निर्देश पर जिले के समस्त विद्यालय जिसमें

शासकीय, अशासकीय,अनुदान प्राप्त और मदरसा विद्यालयों को बंद करते हुए 4 जनवरी तक अवकाश घोषित किया गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर द्वारा इन दिनों में संचालित कक्षा नौवीं एवं दसवीं की परीक्षाएं यथावत संपन्न होंगी। स्कूलों का समय परिवर्तन - तापमान सामान्य से कम होने की स्थिति में प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय तथा संस्थाओं के समय में परिवर्तन किया जाना है। शीतलहर के दौरान आवश्यक उपाय- शीतलहर से बचने के लिए जितना संभव हो घर के भीतर रहकर आवश्यक उपाय करने की समझाईश दी गई है। घर से बाहर निकलने पर गर्म कपड़ो का उपयोग करे। मौसम से संबंधित समाचार व आपातकाल के संबंध में जारी समाचारों को ध्यान से सुनने तथा उसके अनुसार आवश्यक उपाय करने कहा गया है।

शीतलहर के साथ हल्की बारिश, ठिठुर रहे हैं लोग

नवप्रदेश संवाददाता

लवन। नये साल के स्वागत के साथ ही ठंड के बड़े प्रकोप से तापमान में काफी गिरावट आई है। गुरूवार-शुक्रवार को साल का सबसे ठंड दिन रिकार्ड किया गया। शुक्रवार को रात में न्यूनतम तापमान 7 डिग्री व अधिकमत 17 डिग्री रिकार्ड की गई। सर्द हवाओं से जन-जीवन खासा प्रभावित रहा। ठंड के कारण लोग परेशान रहे। शीतलहर के चलते लोग घरों व सड़कों किनारे दिन में भी अलाव का सहारा लेते हुए दिखें। हल्की बारिश से शासकीय स्कूल के स्कूली छात्र-छात्राएं भी पानी से भिगते हुए परीक्षा दिलाने स्कूल पहुंचे। नव वर्ष के स्वागत के दिन बुधवार से ही बदली और ठंडी हवाओं से हुआ। दूसरे दिन गुरूवार को काली घटा के साथ दिनभर हल्की बारिश होते रही, जो देर रात तक जारी रही। शीतलहर के

चलते दिन में बीच-बीच में हल्की-हल्की बारिश होते रही। जिससे लोग ठिठुरते हुए दिखाई दिए। पिछले सालों की अपेक्षा इस वर्ष सर्द हवाओं के साथ हल्की बारिश से जन-जीवन प्रभावित हो रहा है। लोगों का जन-जीवन पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया है। हालात बिगड़ते ही जा रहे है बुधवार की सुबह से शुरू हुई हल्की बारिश का सीतम समय-समय पर जारी है। बारिश की वजह से धान खरीदी केन्द्रों में किसानों के धान की बिक्री प्रभावित हो रही है। मौसम को देखते हुए शासन द्वारा धान खरीदी पर रोक लगा दिए है। पिछले चार दिनों से हो रही हल्की बारिश की वजह से ठंड से लोगों का काम प्रभावित हो रहा है। रोज कमाने खाने वालों को इस बारिश ने परेशान कर दिया है। जहां एक ओर उनकों मजदुरी नहीं मिल पा रही है वही दूसरी ओर सर्दी के चलते उनकी हालत खराब हो रही है।

छात्रावास के मरम्मत के लिए 6 लाख देने की सैद्धांतिक सहमति

नवप्रदेश संवाददाता

कवर्धा। पंडरिया विकासखण्ड के अकास्मिक निरीक्षण के दौरान कलेक्टर अवनीश कुमार शरण ने कुकूदर में संचालित प्रीमैट्रिक बालक छात्रावास पहुंचे। वहां उन्होने भवन का निरीक्षण किया और छात्रावास के बच्चों के साथ बैठकर भोजन भी किया। कलेक्टर ने वहां बच्चों से चर्चा करते पढ़ाई के बारे में जानकारी ली तथा वहां उपलब्ध संसाधनां के बारे में विस्तार से जानकारी ली। उन्होने चर्चा के बाद भवन के साज-सज्जा तथा मरम्मत कार्य के लिए 6 लाख रूपए के अंदर कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए।

निरीक्षण | **आश्रम, छात्रावास ,धान खरीदी केन्द्र का किया निरीक्षण**

कलेक्टर ने किया मैनपुर क्षेत्र में अचानक दौरा, मची हड़कम्प

नवप्रदेश संवाददाता

मैनपुर। गरियाबंद जिले के कलेक्टर श्याम धावडे आज बुधवार को शाम चार बजे के आसपास अचानक मैनपुर क्षेत्र के आश्रम छात्रावासों के निरीक्षण करने पहुचे तो हडकम्प मचा रहा मैनपुर से तीन किलोमीटर दुर भाठीगढ स्थित आदिवासी बालक आश्रम का निरीक्षण करने पहुचे कलेक्टर ने आश्रम मे साफ सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया साथ ही आश्रम अधिक्षक ने बताया कि भवन ठेकेदार द्वारा भवन निर्माण कार्य अभी तक पुरा नही किया है और रेलिंग की व्यवस्था नही होने से हमेंशा बच्चो के दुर्घटना होने की संभावना बनी रहती है साथ ही आश्रम के पीछे जमीन पर बागवानी करने के लिए जमीन उपलब्ध कराने की मांग किया

जिस पर आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दिया है साथ ही मैनपुर से दो किलोमीटर दुर नवमुडा स्थित प्री मैट्रिक आदिवासी कन्या छात्रावास का निरीक्षण करने पहुचे जंहा भवन के खिडकी दरवाजों को मजबूत लगाने का निर्देश सहायक आयुक्त को दिया है और आश्रम परिसर में उद्यमी विभाग व मनरेगा योजना के तहत बागवानी तैयार करने को कहा है जनपद पंचायत मैनपुर के मुख्यकार्यपालन अधिकारी को छात्रावास परिसर में बागवानी तैयार करने दिशा निर्देश दिया है और जल्द ही इसका प्रस्ताव भेजने को कहा है इस दौरान आश्रम अधिक्षिका व ग्रामीणों ने बताया कि यह छात्रावास भवन लगभग 97 लाख रूपये की लागत से तीन वर्ष पहले लोक निर्माण विभाग द्वारा निर्माण किया गया था लेकिन भवन निर्माण में भारी लापरवाही के चलते भवन के सभी कमरों में बारिश के दिनों में पानी सिपेज होने के साथ साथ आधा अधुरे शौचालय निर्माण कर छोड देने की शिकायत किया गया जिस पर कलेक्टर ने नाराजगी जताते हूए संबधित विभाग के अधिकारियों को व्यवस्था ठीक करने का निर्देश दिया है पश्चात कलेक्टर श्याम धावडे अचानक मैनपुर धान उर्पाजन केन्द्र का निरीक्षण करने पहुचे जंहा खरीदी केन्द्र के बाहर कुछ किसान अपने धान की बोरियों की रखवाली करते दिखे इन किसानों से कलेक्टर ने हालचाल पुछा तो किसानो ने बताया कि कल बारदाना नही होने के कारण तौल नही हो पाया जिस पर कलेक्टर ने बारदाने के सबंध में जानकारी लिया तो बारदाना पहुंचने की बात खरीदी केन्द्र में बताई गई।

कपरीगोडान समिति प्रबंध पर कलेक्टर का फूटा गुस्सा

नवप्रदेश संवाददाता

कवर्धा। पिछले दिनों से चल रहे शीतलहर और बेमौसम बारिश के बीच कबीरधाम जिले के बैगा आदिवासी बाहुल पंडरिया विकासखण्ड के सुदूरू और दुर्गम वनांचल क्षेत्रों में संचालित कुकदूर, पंडरीपानी, बदना के स्वास्थ्य केन्द्र, आश्रम, छात्रावास, स्कूल और कपरी गोडान, ककदूर, और चांटा के धान खरीदी उपर्जान केन्द्रों का कलेक्टर ने अकास्मिक रूप से निरीक्षण किया।

कलेक्टर ने समिति प्रबंध पर जताई कड़ी नाराजगी

कलेक्टर अवनीश कुमार

शरण ने कपरीगोडान धान उर्पाजन केन्द्र का निरीक्षण में वहां मिली अव्यवस्था पर कड़ी नाराजगी जाहिर की। उन्होने कहा कि धान खरीदी शासन की सर्व प्राथमिकता में शामिल है। किसानों से खरीदी की गई धान को बेमौसम बारिश से बचाने की हम सबकी जिम्मेदारी हैं। लगातार निर्देशों के बाद धान को सुरक्षा प्रदान नहीं करना समिति की लापरवाहीं को प्रदर्शित करती है। उन्होने जिला नोडल अधिकारी व एसडीएम को समिति प्रबंधक के उपर कडी कार्यवाही करने और समिति के सभी अधिकारी-कर्मचारियों को शोकॉज नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान पंडरिया एसडीएम प्रकाश टण्डन, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक जिला नोडल अधिकारी बद्री चन्द्रवंशी,जनपद सीईओ और बीएमओ सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

नवप्रदेश

प्रतिबंध के बाद भी बेखौफ चला रहे अवैध ईंट कारोबार

नवप्रदेश संवाददाता

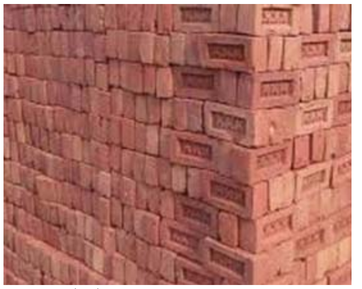

कवर्धा। प्रतिबंध के बाद भी नगर पंचायत पिपरिया और आसपास के गांवो में लाल ईट के अवैध भट्ठे संचालित हो रहे है। बेखौफ चल रहे इस अवैध कारोबार की जानकारी स्थानीय अधिकारियों को भी है, लेकिन कोई कार्यवाही नही की जा रही है। कार्यवाही के अभाव में ईट भट्ठा संचालको के हौसले बुलंद है। ईट बनाने के आसपास नदी और वृक्षो को भी नुकसान पहुंचाया जा रहा है। शासन ने लाल ईट निर्माण पर रोक लगा दी है।

खनिज विभाग को ईट भट्ठा संचालित करने वालों पर कार्यवाही करने का निर्देष भी दिया है। लेकिन अधिकारी इसका पालन नहीं कर रहे है। जिले मे बडी संख्या मे भट्ठा संचालित है उनके पास किसी तरह का परमिषन नही है। इससे षासन को हर महीने लाखो की राजस्व क्षति पहुंचा रहे है। अवैध ईट भट्ठा संचालको द्वारा पूरा कारोबार बडे सुनिष्चित ढंग से किया जा रहा है। इसमें गरीब किसान के नाम पर औने-पौने रकम देकर जमीन लीज पर ली गई है। एक-दो वर्षो के नाम पर जमीन लेकर उसका बरसों से उपयोग किया जा रहा है। नगर पंचायत पिपरिया व आसपास गांव परसवारा, खाम्ही, गांगपुर, छांटा, मोहगांव में ईट के अवैध भट्ठे चलाए जा रहे है। बिना किसी पैमाने के ईट का कारोबार ग्रामीणों की आड में ठेकेदारों द्वारा किया जा रहा है। ईट के इस अवैध कारोबार का सिलसिला क्षेत्र में लंबे समय से चल रहा है। ईट भट्ठा संचालक नियमकायदों की खुलेआम धज्जियां उडा रहे है। इसके बाद भी अब तक किसी भी ईट भट्ठा संचालक पर कार्यवाही नही हुई है।

राष्ट्रीय सेमिनार में प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे कवर्धा के संत थवाईत

नवप्रदेश संवाददाता

कवर्धा। छत्तीसगढ़ के एक मात्र पूर्व छात्र संतराम थवाईत जो महात्मा गांधी की कर्मस्थली सेवाग्राम में इंस्टिट्यूट ऑफ गांधियन स्टडीज की पढ़ाई कर गांधियन फिलासफी पर कार्यरत है ,को तमिलनाडु के ऐतिहासिक शहर मदुराई में गांधी स्मारक निधि के राष्ट्रीय सेमिनार में शिरकत के लिए आमंत्रित किया गया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए श्री थवाईत ने बताया कि गांधी स्मारक निधि का गठन गांधी जी की हत्या के बाद हुआ जिसका उद्देश्य महात्मा गांधी से जुड़ी यादों को सहेजना,संजोना ,उसका प्रचार प्रसार करना तथा सतत रूप से महात्मा गांधी के विचार दर्शन को पुष्पित पल्लवित करते हुए शांति सहिष्णुता और सामाजिक उत्थान के कार्य करते रहना है। श्री थवाईत के साथ जांजगीर चाम्पा जिले के प्रोफेसर भूपेंद्र पटेल भी साथ जाएंगे । श्री पटेल और थवाईत दोनो ने मिलकर विगत वर्ष महात्मा गांधी के 150 वी जयंती के उपलक्ष्य में खरसिया, चाम्पा खरौद, अकलतरा आदि स्थानों पर नेशनल सेमिनार का आयोजन कर छत्तीसगढ़ प्रदेश में गांधी चेतना को फैलाने का कार्य किया । इसी को देखते हुए नई दिल्ली स्थित गांधी स्मारक निधि के राष्ट्रीय कार्यालय से इन दोनों का चयन छत्तीसगढ़ प्रतिनिधि के रूप में किया गया है। श्री थवाईत 6 जनवरी को रायपुर एयरपोर्ट से मदुराई के लिए प्रस्थान करेंगे वहां 2 दिवसीय सेमिनार में भाग लेकर 11 जनवरी तक वापस लौटेंगे ।

स्टेशन के बाहर मिला अज्ञात का शव

भाटापारा। रेलवे स्टेशन टिकट घर प्रतीक्षालय के बाहर एक अज्ञात पुरुष का शव जी आर पी को मिला है। मृतक की उम्र लगभग 40 साल के आस पास बताई जा रही है। मृतक के पास से कोई भी पहचान लायक कागजात नही मिलने से उसके बारे में पता साजी में पुलिस को परेशानी हो रही है। मृतक कब से यहाँ आया हुआ है कोई बता भी नही पा रहा है। मृतक के मुँह से झाग निकलने की बात भी सामने आई है, बहरहाल पोस्टमार्टम रिपोट के बाद ही समझ आएगा की मृतक की मौत कैसे हुई ?

डॉ एन. के. यदु हुए सेवानिवृत्त

कवर्धा। स्थानीय जिला चिकित्सालय में नाक कान गला रोग विशेषज्ञ पद पर कार्यरत डॉ एन. के. यदु 41 वर्षो की सेवा करने के बाद 31 दिसंबर को सेवानिवृत्त हो गए । डॉ यदु 41 वर्ष पूर्व बस्तर जिला के बकावंड प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से अपनी सेवा प्रारंभ किये थे । डॉ यदु कवर्धा ,बेमेतरा गरियाबंद में सिविल सर्जन रहे । बेहतर अनुभव और कार्य को देखते हुए बेमेतरा जिला के मुख्यचिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी पद पर भी पदस्थ किये गए।

10वीं और 12वीं ओपन परीक्षा की समय सारणी जारी

कवर्धा। छत्तीसगढ राज्य ओपन स्कूल की दसवी व बारहवीं परीक्षा का टाइम-टेबल जारी हो गया है। परीक्षाएं 27 मार्च से षुरू होकर 27 अप्रैल को समाप्त होगी । परीक्षा का समय सुबह 8 से 11:30 बजे तक निर्धारित किया गया है। परीक्षा 10 वी और 12 वी के ही पाठ्यक्रम अनुसार होगी। प्रायोगिक परीक्षांए 27 अप्रैल के पहले पूरी कराई जाएगी। इधर नगरीय निकाय चुनाव की वजह से स्थगित हुए अर्धवार्षिक परीक्षा के पेपर गुरूवार से षुरू हो गया है। माषिमं ने चुनाव के मद्देनजर 9 वीं और 10 वीं के 4 पेपर की तिथियों में संषोधन किया था। कक्षा 9 वीं हिन्दी सामान्य का पेपर 21 दिसंबर को रखा गया था। जो षुक्रवार को सम्पन्न हुआ। कक्षा 9 वी और 10 वीं के विद्यार्थियों की दोबारा परीक्षा ली जाएगी। परीक्षाओं के प्रष्नपत्र स्कूलो को पहुंचा दिए थे। इसलिए अब सिर्फषेष दो चार पेपर ही कराने होंगे।

सुआ नृत्य का शुभारंभ 5 को

खरोरा। ग्राम सकलोर में प्रथम वर्ष हिरमी में सुआ नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन जीवन अर्पण रक्तदान संघ एवं समस्त ग्रामवासी के सहयोग से 5 जनवरी रविवार को सुआ नृत्य का शुभारंभ होगा । इसके उपरांत आयोजक व ग्रामवासियों द्वारा वृक्षारोपण 11:00 बजे शनि मंदिर के पास रोपण किया जाएगा।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

प्रमोद बेहतर प्रबंधन...

मेयर की रेस में तीन नए डार्क हॉर्स के नाम भी सियासी रफ्तार में हैं। हालाकि रेसकॉर्स में डार्क हॉर्स अचानक ही बाजी मारता है, लेकिन यहां पहले ही चेंपियन दौड़ में जीतने के लिए तैयारी कर चुके हैं। ऐसे में डार्क हॉर्स के लिए फिलहाल रेस जीतना उतना ही मुश्किल है जितना कि 6 जनवरी से पूर्व किसी को मेयर घोषित करना। फिलहाल शहर के मेयर की कुर्सी पर कौ बैठेगा, किसके सिर पर जीत का ताज होगा और सबसे अहम यह कि वह शहरी लिहाज से कैसा होगा इस पर लोगों की जिज्ञासाएं ज्यादा हैं। नवप्रदेश ने राजधानी के चर्चित सियासी ठियों में जब लोगों से मेयर के तीन नामों प्रमोद दुबे, एजाज ढेबर और ज्ञानेश शर्मा के संबंध में पूछा तो उन्हों ने क्या कहा। कईयों ने सीधे नाम का ही ऐलान किया पर हम यहां उसका उल्लेख किये बिना आप पर छोड़ते हैं कि राजधानी रायपुर का मेयर कैसा होगा।

बदली-बारिश ने...

सिस्टम के असर से पश्चिमी मध्यप्रदेश तक एक द्रोणिका बनी जो कि बिहार से उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी तक जा रही है। इसी सिस्टम के असर से प्रदेश में कल दोपहर से ही मौसम का मिजाज बदला और दोपहर में राजधानी रायपुर सहित प्रदेश के अन्य प्रमुख शहरों, बिलासपुर, कोरबा, कवर्धा, बेमेतरा, दुर्ग-भिलाई, जांजगीर-चांपा, राजनांदगांव तथा उत्तरी छत्तीसगढ़ के अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश रिकार्ड की गई। इधर बीती रात राजधानी रायपुर में रूक-रूककर बारिश का सिलसिला जारी रहा। इससे रात में न्यूनतम तापमान का ग्राफ और कम हो गया था। मौसम विभाग से जुड़े सूत्रों की माने तो आज से मौसम का मिजाज सुधरने लगेगा। लेकिन बदली-बारिश की आशंका अभी बनी रहेगी। बारिश थमने के बाद ठंड में और इजाफा होगा और इसके साथ ही कोहरा छाना शुरू हो जाएगा। आज सुबह राजधानी रायपुर में 14.6 डिग्री न्यूनतम तापमान रिकार्ड किया गया है। इस तरह अंबिकापुर में 11.8, बिलासपुर में 14.2, पेण्ड्रारोड में 11.8 तथा जगदलपुर में 16.5 डिग्री न्यूनतम तापमान रिकार्ड किया गया है।

बीएसपी के...

से एक डीजीएम व 5 कर्मी सहित 6 कर्मी प्रभावित हुए हैं। जिनमें से 3 कर्मी गंभीर रुप से प्रभावित बताए जा रहे हैं। यह घटना संयंत्र के ब्लास्ट फर्नेस 8 मे हुई है। सभी घायल कर्मियों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जबकि 3 गंभीर घायल कर्मियों का ढ्रष्ट मे उपचार चल रहा है। गैस से आहत सभी 5 राइट्स के कर्मचारी बताए गए हैं। गंभीर रुप से घायल कर्मचारी - लोको चालक अभिषेक आनंद 26 साल निवासी नेहरू नगर पूर्व, सिग्नल मेन बालकृष्णा 27 साल निवासी खुर्शीपार, लोको चालक खुर्शीपार निवासी के.नागराज 33 साल, गैस से ज्यादा आहत हुए है। वहीं राइट्स के कर्मचारी संतोष कुमार व कालीदास का उपचार 1 में चल रहा है। मौके पर सुबह-सुबह पहुंचे ब्लास्ट फर्नेस के ष्ठत्तरूराजेश कुमार भी गैस रिसाव से प्रभावित हुए। उनका उपचार भी सेक्टर 09 चिकित्सालय मे चल रहा है।

जंगल वनवासियों का है...

बदलाव पर राज्य स्तरीय परिचर्चा का आयोजन वन विभाग की ओर से नया रायपुर के आरण्य भवन में किया गया था।

हत्या का बदला...

इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स के कुद्स बल के कमांडर मेजर जनरल कासिम सुलेमानी को मार गिराया। श्री खमनेई ने कहा, सुलेमानी की शहादत के बावजूद बावजूद ईश्वर की कृपा से उनका काम और उनके दिखाये रास्ते बंद नहीं होंगे। जिन गुनहगारों ने अपने गंदे हाथ उनके और अन्य शहीदों के खून से रंगे हैं उनसे हम हर हाल में बदला लेकर रहेंगे। शहादत इतने वर्षों तक उनके द्वारा निरंतर किये गये कार्यों का पुरस्कार है। इससे पहले ईरान के विदेश मंत्री मोहम्मद जावेद जरीफ ने अमेरिका को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी। श्री जरीफ ने ट्वीट कर कहा, अमेरिका द्वारा आईएसआईएस, अल नुसरा और अल कायदा जैसे आतंकवादी संगठन से सबसे प्रभावी लड़ाई लड़ने वाले जनरल कासिम सुलेमानी को निशाना बनाना और उनकी हत्या करना बेहद खतरनाक और मूर्खतापूर्ण हरकत है। अमेरिका के इस कदम के अंजाम की जिम्मेदारी उसकी खुद की होगी। इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस कार्रवाई का स्वागत करते हुए अपने ट्विटर अकाउंट पर अमेरिका के झंडे की तस्वीर पोस्ट की।

पूरा विपक्ष...

बोला। शाह ने कहा, 'वीर सावरकर जैसे इस देश के महान सपूत और बलिदानी का भी कांग्रेस पार्टी विरोध कर रही है। कांग्रेसियों शर्म करो-शर्म करो। वोट बैंक के लालच की भी हद होती है। वोट बैंक के लिए कांग्रेस ने वीर सावरकर जैसे महापुरुष का अपमान किया है।' शाह ने कहा, 'शरणार्थियों पर जो प्रताड़ना हुई है, इससे बड़ा मानवाधिकार का उल्लंघन कभी नहीं हुआ। वहां ये शरणार्थी भाई करोड़पति थे और आज उनके पास रहने की जगह नहीं है। हम इस कानून के द्वारा उन्हें राहत दे रहे हैं। जो शरणार्थी अत्याचार झेलकर भारत आए हैं, जिनकी संपत्ति, रोजगार छीन लिया गया।

जिसका परिवार छिन गया, और उनके लिए विपक्षी कहते हैं कि इन्हें नागरिकता नहीं दी जाए। उन देशों से जो शरणार्थी आए हैं वो भारत के ही हैं।

टोल फ्री नंबर पर मिस्ट कॉल की अपील

रैली के दौरान अमित शाह ने लोगों से मोबाइल निकालकर बीजेपी के द्वारा नागरिकता संशोधन अधिनियम के समर्थन जताने के लिए जारी किए गए टोल-फ्री नंबर 8866288662 पर मिस कॉल करने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि राहुल बाबा, ममता दीदी, केजरीवाल की टोली को जवाब देने के लिए अपने मोबाइल से 88662-88662 पर मिस्ट कॉल करके नरेन्द्र मोदी को नागरिकता संशोधन कानून के लिए अपना समर्थन दीजिए।

धर्म के आधार पर कानून नहीं करता भेदभाव: शाह

शाह ने कहा कि विपक्ष के लोग देश को गुमराह कर रहे हैं कि इससे भारत के मुसलमानों की नागरिकता चली जाएगी, लेकिन मैं आप सबको आश्वस्त करना चाहता हूं कि ये क़ानून नागरिकता देने का है, किसी की नागरिकता छीनने का नहीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी गुमराह कर रही है कि ये कानून धर्म के आधार पर भेदभाव करेगा। हमने किसी भी धर्म को बाकी नहीं रखा है, इन 3 देशों जो अल्पसंख्यक हैं, चाहे वे हिन्दू हों, सिख हों, जैन, बौद्ध, पारसी या ईसाई हों इन सभी को हम नागरिकता दे रहे हैं।

राजनांदगांव की मेयर बनीं ..

8 निर्दलीयों के साथ ही भाजपा के एक पार्षद ने भी वोट दे दिया। क्योंकि उन्हें कुल 31 वोट मिले। कुल 51 सदस्यीय निगम में बहुमत के लिए 26 पार्षदों की जरूरत थी। कांग्रेस प्रत्याशी को 31 व भाजपा प्रत्याशी को 20 वोट मिले।

गुमशुदा डोनेश की तलाश में लगा है पुलिस विभाग

कवर्धा। सहसपुर लोहारा थाना क्षेत्र के ग्राम बिडोरा के नौ वर्ष के बालक डोनेश पिता कुषलराम राणा 26 दिसंबर शाम लगभग 5 बजें से गायब है। इस मामले को लेकर पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ अपहरण का मामला दर्ज किया है। लेकिन एक सप्ताह बाद पुलिस इस मामले में कोई सुराग नही मिल पाया है। बच्चे के बारे में अभी तक कोई जानकारी हासिल नही हो सकी है। घटना क्रम को देखते हुए दुर्ग व रायपुर से टीम भी बुलाया गया है। ये वो टीम है जो रायपुर, दुर्ग में कई अपहरण के मामले का खुलासा कर चुके है। एक हफ्ते बीत जाने के बाद पूरे मामले की कमान खुद दुर्ग डीआईजी रतनलाल डांगी देख रहे है। कुछ भी सुराग नही मिलने के कारण पुलिस अब आमजन से मद्द की गुहार लगाई है। पुलिस ने अपने फेसबुक पेज पर बच्चे की फोटो अपलोड कर लोगों को जानकारी देने की अपील कर रहे है। इसके साथ ही जानकारी देने वाले को 10 हजार रूपय का ईनाम भी रखा है। फेसबुक पर पोस्टर जारी करने के बाद अब तक 40 से ज्यादा लोगो ने इसे षेयर किया है।इसके साथ ही स्थानीय वाट्सअप ग्रुपो में भी बच्चे के संबंध में पुलिस विभाग द्वारा जारी की गई तस्वीर को प्रेषित किया गया है जिससे इस बच्चे के विषय में जानकारी मिल सके।

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा के न्यायालय में मामला क्रमांक
201912211100017/18
विषय-अ20(3) मामले की श्रेणी-राजस्व सन् 2019-20
भाटापारा प.ह.नं. 00011 (हे.)
पक्षकारों का विवरण-
आवेदक पक्षकार - सुशीला गोविन्दानी
अनावेदक पक्षकार - प्रीति गोविन्दानी

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्वसाधारण जनता ग्राम भाटापारा प.ह.नं. 11 रा.नि.मं. व तहसील भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा को सूचित किया जाता है कि आवेदिका सुशील गोविन्दानी पति ओमप्रकाश गोविन्दानी निवासी भगत सिंह वार्ड भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा छ.ग. ने नामांतरण हेतु आवेदन पत्र पेश कर निवेदन किया है कि नगर भाटापारा स्थित नजूल भूमि शीट क्रमांक 17-बी प्लाट नं. 71/38 क्षेत्रफल 74.72 वर्गमीटर निर्धारण 13.50 रुपए धारकगण सुशीला पति ओमप्रकाश, प्रीति पति ईश्वर गोविन्दानी के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। अनावेदिका प्रीति गोविन्दानी ने आवेदिका सुशील गोविन्दानी के पक्ष में पंजीकृत हकत्याग दिनांक 17/09/2019 को उप पंजीयक कार्यालय भाटापारा के समक्ष निष्पादित कर हक व हिस्सा प्रदान कर दिया है, जिसके आधार पर उक्त भूमि पर अनावेदिका का नाम विलोपित कर आवेदिका का नाम नजूल अभिलेख में दर्ज किए जाने का लेख किया है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतएव हकत्याग विलेख के आधार पर आवेदिका का नाम नजूल अभिलेख में दर्ज किए जाने जिस किसी को आपत्ति दावा हो तो अपना आपत्ति दावा पेशी दिनांक 15/01/2020 तक न्यायालयीन अवधि में मेरे न्यायालय में स्वयं या वैध प्रतिनिधि के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। उक्त नियत अवधि के पश्चात प्राप्त आपत्ति दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से आज दिनांक 30/12/2019 को जारी किया जाता हैं।

सील
MAHESH SINGH RAJPUR
अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा के न्यायालय में मामला क्रमांक
201912211100015/16
विषय-अ20(3) मामले की श्रेणी-राजस्व सन् 2019-20
भाटापारा प.ह.नं. 00011 (हे.)
पक्षकारों का विवरण-
आवेदक पक्षकार - राजेश गोविन्दानी
अनावेदक पक्षकार - ओमप्रकाश गोविन्दानी

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्वसाधारण जनता ग्राम भाटापारा प.ह.नं. 11 रा.नि.मं. व तहसील भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा को सूचित किया जाता है कि आवेदक राजेश गोविन्दानी पिता हेमनदास गोविन्दानी निवासी भगत सिंह वार्ड भाटापारा जिला बलौदाबाजार- भाटापारा छ.ग. ने द्वारा फौती नामांतरण हेतु आवेदन पत्र पेश कर निवेदन किया है कि नगर भाटापारा स्थित नजूल भूमि शीट क्रमांक 17-बी प्लाट नं. 71/47 ख.नं. 324/1 क्षेत्रफल 50.47 वर्गमीटर धारक ओमप्रकाश गोविन्दानी पिता हेमनदास गोविन्दानी के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। उक्त भूमि को धारक ओमप्रकाश गोविन्दानी द्वारा अपने भाई आवेदक राजेश गोविन्दानी के पक्ष में पंजीकृत दान पत्र दिनांक 17/09/2019 उप पंजीयक कार्यालय भाटापारा में निष्पादित कराए हैं, अत: पंजीकृत दान पत्र के आधार आवेदक अपना नाम नजूल अभिलेख में दर्ज किए जाने का लेख किया है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतएव पंजीकृत दानपत्र के आधार पर आवेदक का नाम नजूल अभिलेख में दर्ज किए जाने जिस किसी को आपत्ति दावा हो तो अपना आपत्ति दावा पेशी दिनांक 15/01/2020 तक न्यायालयीन अवधि में मेरे न्यायालय में स्वयं या वैध प्रतिनिधि के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। उक्त नियत अवधि के पश्चात प्राप्त आपत्ति दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से आज दिनांक 30/12/2019 को जारी किया जाता हैं।

सील
MAHESH SINGH RAJPUR
अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा के न्यायालय में मामला क्रमांक
201912211100016/17
विषय-अ20(3) मामले की श्रेणी-राजस्व सन् 2019-20
भाटापारा प.ह.नं. 00011 (हे.)
पक्षकारों का विवरण-
आवेदक पक्षकार - अशोक कुमार
अनावेदक पक्षकार - जगदीश,भूपेन्द्र, चन्द्रकांत

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्वसाधारण जनता ग्राम भाटापारा प.ह.नं. 11 रा.नि.मं. व तहसील भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा को सूचित किया जाता है कि आवेदक अशोक कुमार पिता शादीलाल सेठी निवासी भगत सिंह वार्ड भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा छ.ग. ने नामांतरण हेतु आवेदन पत्र पेश कर निवेदन किया है कि नगर भाटापारा नजूल भूमि शीट क्रमांक 17-बी भूखंड क्रमांक-31/1 क्षेत्रफल 315 वर्गमीटर निर्धारण 227.80 रुपए धारकगण जगदीश, इन्द्रजीत, भूपेन्द्र, चन्द्रकांत, अशोक पिस. शादीलाल सेठी के नाम पर नजूल अभिलेख में दर्ज है। सहखातेदार इन्द्रजीत पिता शादीलाल की मृत्यु दिनांक 13/10/2019 को हो चुकी है। सहखातेदार इन्द्रजीत ने अपने जीवनकाल में आवेदक के पक्ष में वसीयतनामा दिनांक 29/08/2019 को पब्लिक नोटरी रायपुर के समक्ष निष्पादित कराया है। उक्त वसीयतनामा के आधार पर आवेदक उक्त भूमि पर अपना नाम नजूल अभिलेख में दर्ज किए जाने का लेख किया है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतएव उक्त वसीयतनामा के आधार पर आवेदिका का नाम नजूल अभिलेख में दर्ज किए जाने जिस किसी को आपत्ति दावा हो तो अपना आपत्ति दावा पेशी दिनांक 15/01/2020 तक न्यायालयीन अवधि में मेरे न्यायालय में स्वयं या वैध प्रतिनिधि के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। उक्त नियत अवधि के पश्चात प्राप्त आपत्ति दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से आज दिनांक 30/12/2019 को जारी किया जाता हैं।

सील
MAHESH SINGH RAJPUR
अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा

कार्यालय संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल संपदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02 सड्डू रायपुर
कामर्शियल कॉम्पलेक्स, सेक्टर-08, द्वितीय तल, सड्डू रायपुर
Phone No. 9685585693 Email ID-emzoneii@yahoo.com

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल के आवासीय भू-खण्डों /आवासीय भवनों को फ्री-होल्ड के रूप में परिवर्तन करने के संबंध में छत्तीसगढ़ शासन आवास एवं पर्यावरण विभाग मंत्रालय रायपुर के आदेश क्रमांक एफ 1-100/2009/32 रायपुर दिनांक 30.12.2011 एवं सम संख्यक आदेश दिनांक 13.03.2012 के परिपालन में सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मण्डल के निम्नलिखित हितग्राहियों के द्वारा जिनके नाम व कालोनी का नाम एवं आवासीय भू-खण्ड क्रमांक छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा आबंटित है को फ्री-होल्ड करने के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। अतः इस आम सूचना के प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस के अंदर यदि कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालयीन दिवस में प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के पश्चात कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं की जावेगी।

क्रमांक	आबंटी का नाम	पिता/पति का नाम	भवन क्रमांक	कॉलोनी का नाम
1	श्री निलेश देवांगन	भरत लाल देवांगन	अटल आवास-08	धनसुली रायपुर
2	श्री मुकेश वर्मा	स्व. श्री एस.पी. वर्मा	एल.आई.जी-372	धनसुली रायपुर
3	श्री पुष्पहास चंद्रवंशी	श्री तिलक राम चंद्रवंशी	अटल आवास-841	सड्डू रायपुर
4	श्रीमती श्याम कुमार महेश्वरी	श्री कृपा राम महेश्वरी	अटल आवास-95	कुंरा धरसींवा
5	मो. रफीक खान	मो. शमदाद खान	अटल आवास-93	कुंरा धरसींवा
6	श्री हेमंत कुमार देवांगन	श्री परसुराम देवांगन	अटल आवास-192	कुंरा धरसींवा
7	मो. हनीफ खान	मो. हमीद खान	अटल आवास-219	कुंरा धरसींवा
8	श्री रमाकांत यादव	श्री रामदास यादव	एल.आई.जी.-742	सड्डू रायपुर
9	श्री महेन्द्र कुमार पारेख	स्व. श्री शांतिलाल पारेख	एल.आई.जी.-1064	सड्डू रायपुर
10	श्री भरत पटेल	स्व. श्री बैकुण्ठ पटेल	एल.आई.जी.-54	सड्डू रायपुर
11	श्री विमल कुमार मिंज	श्री जोसेफ मिंज	एल.आई.जी.-1470	सड्डू रायपुर
12	श्री राजकुमार पात्रे	स्व. श्री पी.आर. पात्रे	एल.आई.जी.-10	सड्डू रायपुर
13	श्री राजकुमार पात्रे	स्व. श्री पी.आर. पात्रे	एल.आई.जी.-876	सड्डू रायपुर
14	श्रीमती विभा देवांगन	श्री प्रदीप कुमार देवांगन	एल.आई.जी.-1050	सड्डू रायपुर
15	श्री कलीराम वर्मा	स्व. श्री अर्जुन लाल वर्मा	एल.आई.जी.-842	सड्डू रायपुर
16	श्री योगेश्वर वर्मा	श्री गोवर्धन प्रसाद वर्मा	एल.आई.जी.-844	सड्डू रायपुर

संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
संपदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02 सड्डू रायपुर

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा के न्यायालय में मामला क्रमांक
201912211100011/30
विषय-अ-2 मामले की श्रेणी-राजस्व सन् 2019-20
अवरेठी प.ह.नं. 00010 (हे.)
पक्षकारों का विवरण-
आवेदक पक्षकार - भावना गोविन्दानी, मोहनलाल गोविन्दानी
अनावेदक पक्षकार -छ.ग. शासन

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्वसाधारण जनता ग्राम अवरेठी प.ह.नं. 10 रा.नि.मं. व तहसील भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा को सूचित किया जाता है कि आवेदिका भावना गोविन्दानी पति मोहन गोविन्दानी एवं अन्य 04 निवासी भाटापारा तहसील भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.) द्वारा ग्राम अवरेठी प.ह.नं. 10 तहसील भाटापारा स्थित अपने भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नंबर 68/7 रकबा 0.445 हेक्टेयर को औद्योगिक प्रयोजन हेतु कर पुर्ननिर्धारण के लिए सहायक संचालक नगर तथा ग्राम निवेश बलौदाबाजार के समक्ष आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है, जो इस न्यायालय को अभिमत सहित प्राप्त हुआ है। जिसका प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अत: उक्त भूमि को औद्योगिक प्रयोजन के भू-परिवर्तित करने एवं पुनर्निधारण करने के संबंध में जिस किसी को आपत्ति/दावा हो तो अपना आपत्ति/ दावा पेशी दिनांक 15/01/2020 तक न्यायालयीन अवधि में मेरे न्यायालय में स्वयं या वैध प्रतिनिधि के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत अवधि के पश्चात प्राप्त आपत्ति/दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से आज दिनांक 30/12/2019 को जारी किया जाता हैं।

सील
MAHESH SINGH RAJPUR
अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा के न्यायालय में मामला क्रमांक
201912211100009/28
विषय-अ-2 मामले की श्रेणी-राजस्व सन् 2019-20
खपराडीह (प.ह.नं. 00009)
पक्षकारों का विवरण-
आवेदक पक्षकार - रूपचंद थारानी, महेश थारानी
अनावेदक पक्षकार - छ.ग. शासन

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्वसाधारण जनता ग्राम खपराडीह प.ह.नं. 09 रा.नि.मं. व तहसील भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा को सूचित किया जाता है कि आवेदकगण श्री रूपचंद थारानी पिता खेमचंद थारानी एवं अन्य 01 निवासी भाटापारा तहसील भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.) द्वारा ग्राम खपराडीह प.ह.नं. 42 तहसील भाटापारा स्थित अपने भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नं. 101/2, 101/3 रकबा क्रमश: 0.431 एवं 0.368 हेक्टेयर कुल रकबा 0.799 हेक्टेयर को औद्योगिक प्रयोजन हेतु कर पुर्ननिर्धारण के लिए सहायक संचालक नगर तथा ग्राम निवेश बलौदाबाजार के समक्ष आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है, जो इस न्यायालय को अभिमत सहित प्राप्त हुआ है। जिसका प्रकरण इस न्यायालय में विचाराधीन है।

अत: उक्त भूमि को औद्योगिक प्रयोजन के लिए भू-परिवर्तित करने एवं पुर्ननिर्धारण करने के संबंध में जिस जिस किसी को आपत्ति/दावा हो तो अपना आपत्ति/दावा पेशी दिनांक 15/01/2020 तक न्यायालयीन अवधि में मेरे न्यायालय में स्वयं या वैध प्रतिनिधि के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत अवधि के पश्चात प्राप्त आपत्ति/ दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पद मुद्रा से आज दिनांक 30/12/2019 को जारी किया जाता हैं।

सील
MAHESH SINGH RAJPUR
अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
भाटापारा

कार्यालय सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-1, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email ID-eocghbzone1@gmail.com

आम सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा फेस-III कबीर नगर रायपुर में निर्मित के.बी.टी. भवन योजना के अंतर्गत दुकानों/भूखंडों/भवनों में से भवन क्रमांक/ भूखंड क्रमांक के.बी.टी. 67 में श्रीमती लीलावती बेन पटेल पति श्री दयाराम पटेल को भाड़ाक्रय/ पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक 03/10/2006 को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया। आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु दिनांक 02/12/2019 को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन श्री दयाशंकर मिश्रा पिता स्व. श्री रामदेव मिश्रा के नाम से निष्पादित को विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्ध शासकीय/वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिन के अंदर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-1, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email ID-eocghbzone1@gmail.com

आम सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा वीरसावरकर नगर हीरापुर कालोनी, रायपुर में निर्मित ढांचा भवन योजना के अंतर्गत दुकानों/ भूखंडों/ भवनों में से भवन क्रमांक/ भूखंड क्रमांक ढांचा-185 में श्री अमरजीत सिंग पिता श्री हरदयाल सिंग को भाड़ाक्रय/ पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक 05/05/12 को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया। आबंटी उक्त भवन के दान हेतु दिनांक 12/12/19 को निष्पादित दान इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन श्रीमती ललिता पंडिया पति श्री अमरजीत सिंग के नाम से निष्पादित को दान करने के लिए दान अनुमति की मांग की है।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्ध शासकीय/ वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन के दान के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिन के अंदर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय, नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)
नगर निगम मुख्यालय नया प्रशासनिक भवन, गांधी चौक, रायपुर के पास
फोन : 0771-25355780, फैक्स:0771-227395
ई मेल : dcrmc@reddiffmail.com

ईश्तहार/आधिपत्य हस्तांतरण की सूचना

नामांतरण प्र.क्र. 346/2018-19
वार्ड का नाम- श्यामा प्रसाद मुखर्जी-63

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी-63 स्थित मकान/ भूमि 63/अवधपुरी नगर भाठागांव जो कि निगम अभिलेख में 1.श्री विजय शंकर पाण्डेय पिता स्व. श्री राम प्रभाव पाण्डेय 2. श्री गौतम कुमार ओझा पिता स्व. श्री राजनारायण ओझा के नाम से दर्ज है, जिसको श्रीमती कादम्बिनी प्रधान पति श्री श्री मेलाराम प्रधान ने रजिस्ट्री/ लिखित द्वारा/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई सुनवाई नहीं की जावेगी।

जोन आयुक्त
जोन क्रमांक-6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय, नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)
नगर निगम मुख्यालय नया प्रशासनिक भवन, गांधी चौक, रायपुर के पास
फोन : 0771-25355780, फैक्स:0771-227395
ई मेल : dcrmc@reddiffmail.com

ईश्तहार/आधिपत्य हस्तांतरण की सूचना

नामांतरण प्र.क्र. 347/2018-19
वार्ड का नाम- रविन्द्रनाथ टैगोर-51

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि रविन्द्रनाथ टैगोर-51 स्थित मकान/ भूमि 51/कृष्णापुरी देवपुरी जो कि निगम अभिलेख में श्री नवजीत सिंह भाटिया पिता स्व. श्री कुलबीर सिंग भाटिया के नाम से दर्ज है, जिसको श्रीमती रेशमा तोलवानी पति श्री महेश तोलवानी ने रजिस्ट्री/ लिखित द्वारा/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई सुनवाई नहीं की जावेगी।

जोन आयुक्त
जोन क्रमांक-6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय, नगर पालिक निगम
जोन क्र. 7, रायपुर
मंगलम काम्पलेक्स, अग्रसेन चौक के पास, रायपुर (छ.ग.)

//ईश्तहार/आधिपत्य हस्तांतरण की सूचना //

नामांतरण प्र.क्र. 386/2019-2020
वार्ड का नाम- पं.जवाहरलाल नेहरू-37

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि पं. जवाहरलाल नेहरू वार्ड स्थित मकान/ भूमि/ 37/नया जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती भारती जगवानी पति श्री मोहन कुमार जगवानी के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती पूनम बैंगानी पति अशोक कुमार बैंगानी ने मृत्यु प्रमाणपत्र/ सहमति पत्र/ शपथ पत्र/ रजिस्ट्री के अनुसार/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर दस्तावेजों के साथ प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/आपत्ति प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि के पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर किसी प्रकार की कोई सुनवाई नहीं की जावेगी, जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जाने।
जोन कमिश्नर
जोन क्र.-07
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय, नगर पालिक निगम
जोन क्र. 7, रायपुर
मंगलम काम्पलेक्स, अग्रसेन चौक के पास, रायपुर (छ.ग.)

//ईश्तहार/आधिपत्य हस्तांतरण की सूचना //

नामांतरण प्र.क्र. 384/2019-2020
वार्ड का नाम- पं.जवाहरलाल नेहरू-37

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि पं. जवाहरलाल नेहरू वार्ड स्थित मकान/ भूमि/ 37/बी 36 मेघदूत काम्पलेक्स जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती आरती वासवानी पति राजकुमार वासवानी के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती राहुल वासवानी पिता राजकुमार वासवानी ने मृत्यु प्रमाणपत्र/ सहमति पत्र/ शपथ पत्र/ रजिस्ट्री के अनुसार/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर दस्तावेजों के साथ प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/आपत्ति प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि के पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर किसी प्रकार की कोई सुनवाई नहीं की जावेगी, जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जाने।
जोन कमिश्नर
जोन क्र.-07
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक यशवंत धोटे* द्वारा बंसल स्कूल कैम्पस, अशोक विहार कॉलोनी, पण्डरी से मुद्रित कर ब्रिस्टल चौक छोटापारा रायपुर से प्रकाशित,
फोन व फैक्स : 0771-4035602, RNI NO.CHHHIN/2012/41806/ डाक पंजीयन क्रमांक सी.जी./आर.वाई.पी. डीएन/40/2019-2021

काम के प्रति इमानदार हैं कार्तिक :दीपिका

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड की डिंपल गर्ल दीपिका पादुकोण का कहना है कि कार्तिक आर्यन अपने काम के प्रति काफी केंद्रित और इमानदार हैं। कार्तिक ने बॉलीवुड में अपनी अलग पहचान बना ली है। सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाले कार्तिक की काफी फैन फॉलोइंग है। कार्तिक की फैन्स की लिस्ट में एक और नाम दीपिका का जुड़ गया है। दीपिका कार्तिक को काफी पसंद करती हैं। दीपिका ने कहा कि उन्होंने कार्तिक को इंस्टाग्राम पर देखा और पाया कि वह वास्तव में क्यूट हैं। उन्होंने कहा कि कार्तिक बहुत मेहनती है। हालांकि उन्होंने कबूल किया कि वह उनसे कई बार नहीं मिली है लेकिन उन्हें लगता है कि वह काम के प्रति बेहद केंद्रित और प्रेरित हैं। दीपिका ने कहा कि कार्तिक वह सब करेंगे जो उन्हें ऊपर ले जा सके, वह इस बारे में ईमानदार हैं।

'तख्त' के लिये कत्थक और उर्दू सीख रही है जाह्नवी

पुराने जमाने की कहानियों में है दिलचस्पी

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड अभिनेत्री जाह्नवी कपूर अपनी आने वाली फिल्म 'तख्त' के लिये कत्थक और उर्दू सीख रही हैं। करण जौहर मल्टीस्टारर फिल्म 'तख्त' बना रहे हैं। फिल्म में जाह्नवी की भी अहम भूमिका है। जाह्नवी ने बताया कि उन्होंने जब से इस फिल्म को साइन किया है तभी से उर्दू भाषा और कत्थक की क्लास लेना शुरू कर दिया है। उन्होंने बताया कि उन्हें हमेशा से ही पुराने जमाने की कहानियों में दिलचस्पी रही है। उन्होंने कहा कि वे आज के मॉडर्न किरदारों नहीं बल्कि पीरियड ड्रामा के किरदारों को ज्यादा अच्छे से समझ सकती हैं।

जाह्नवी ने कहा, ÷इसकी पूरी तरह से तैयारी जल्द ही शुरू होगी। लेकिन मैंने जब यह फिल्म साइन की थी तभी कत्थक और उर्दू सीखना शुरू कर दिया था। मुझे पता था कि हमें इस फिल्म को एक साल बाद शूट करना है, लेकिन मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी रही है। जाह्नवी से छोटी उम्र में रिस्क लेने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि उन्हें पीरियड ड्रामा फिल्में पसंद हैं। जाह्नवी ने कहा कि उन्हें लगता है कि किसी भी मॉडर्न किरदार के मुकाबले वे 'तख्त' के किरदार को बेहतर निभा पाएंगी। जाह्नवी ने कहा, ÷मुझे पुरानी फिल्में देखना पसंद है।

QUIZ TIME

1) भारत का पहला पूर्ण साक्षर एवं डिजिटल साक्षर राज्य है-

(क) केरल (ख) आंध्रप्रदेश (ग) दिल्ली

2) प्रथम क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना किस वर्ष की गई? (1972 / 1975)

3) पिक्नोमीटर नामक उपकरण से किसका माप किया जाता है?

(क) द्रव (ख) घनत्व (ग) आर्द्रता (घ) वायुदाब

4) किस देश ने समुद्र के नीचे पहली अन्तर्महाद्वीपीय रेल प्रारम्भ की?

5) प्रविन्द जगन्नाथ किस देश के प्रधानमंत्री चुने गए ?

Ramaquiz

उत्तरमाला-(1) केरल (2) 1975 (3) घनत्व (4) तुर्की (5) मॉरीशस

डिप्रेशन पर फिल्म बनाएंगे अक्षय

डिप्रेशन विश्व में बहुत बड़ी समस्या

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड के खिलाड़ी कुमार अक्षय कुमार डिप्रेशन पर फिल्म बनाने जा रहे हैं। पिछले साल अक्षय ने कहा था कि वह दहेज की समस्या पर एक अच्छी कहानी ढूढ़ रहे हैं। हाल ही में डिप्रेशन से जूझ रहे टीवी ऐक्टर कुशल पंजाबी की खुदकुशी की खबर से शॉक हुए अक्षय ने तय किया है कि वह डिप्रेशन जैसी गंभीर और बड़ी समस्या पर फिल्म बनाएंगे। अक्षय कुमार ने कुशल पंजाबी के डिप्रेशन और खुदकुशी पर भी बात की और दु:ख व्यक्त किया। अक्षय ने कहा कि पूरा भारत डिप्रेशन की इस समस्या से ग्रसित हो रहा है, इस विषय पर वह फिल्म बनाकर लोगों को जागरूक करेंगे। अक्षय ने कहा, ÷मैंने उनके (कुशल पंजाबी) के साथ काम किया है, दो फिल्मों में वह मेरे साथ थे। सभी लोगों के पास अपनी अलग समस्याएं हैं, कुछ लोग भाग्यवान होते हैं, जो अपनी समस्याओं को समझदारी से सुलझाते हैं, लेकिन कुछ लोग समस्या को संभाल नहीं पाते हैं। परिवार भी मायने रखता है, हम सबको पता नहीं कि लोग इस तरह का कदम (डिप्रेशन के दौरान आत्महत्या) कैसे उठा लेते हैं।

अभिषेक ने 'द बिग बुल' का पोस्टर साझा किया

मुंबई (वार्ता)। बॉलीवुड के जूनियर बी अभिषेक बच्चन ने अपनी आने वाली फिल्म 'द बिग बुल' की एक झलक अपने प्रशंसकों के साथ साझा की है। फिल्म के पोस्टर में अभिषेक बहुत ही गंभीर दिखाई दे रहे हैं और उनके चेहरे पर अंधेरा दिख रहा है। अभिषेक इसमें अपनी अंगुलियों में कई अंगूठियां पहने नजर आ रहे हैं और होंठ पर अपनी अंगुली रखे हुए हैं। पोस्टर के कैप्शन में अभिषेक ने लिखा, ÷द बिग बुल! वह शख्स जिसने सपनों को भारत को बेच दिया!÷ फिल्म के पोस्टर पर खूब रिएक्शन भी आ रहे हैं! ऋषि कपूर ने इसे बहुत अच्छा बताया है। 'द बिग बुल' वर्ष 1992 में कथित तौर पर भारत के सबसे बड़े सुरक्षा घोटाले पर आधारित है। फिल्म में इलियाना डिक्रूज भी हैं। 'द बिग बुल' के अलावा अभिषेक बच्चन 'लूडो' और 'बॉब विश्वास' में भी नजर आएंगे।

अमेरिकी हमलों से शेयर बाजार पर पड़ा असर, सेंसेक्स 168 अंक टूटा

सुबह सेंसेक्स करीब 8 अंकों की मामूली बढ़त के साथ 41,634 पर और 50 शेयरों वाला निफ्टी 21 अंक गिरकर 12,261 पर खुला। सुबह 10.05 बजे करीब 37 अंकों की गिरावट के साथ निफ्टी 12246 पर ट्रेड कर रहा था।

मुंबई। अमेरिकी हमले में ईरानी जनरल के मारे जाने के बाद वैश्विक शेयर बाजार में गिरावट का रुख रहा। इस हमले के बाद टकराव की आशंका बढ़ गई है। साल 2020 के पहले सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का 30 शेयरों वाला सूचकांक सेंसेक्स 162.03 अंकों की गिरावट के साथ 41,464.61 पर और निफ्टी 55.55 अंकों की गिरावट के साथ 12,226.65 पर बंद हुआ।

सुबह सेंसेक्स करीब 8 अंकों की मामूली बढ़त के साथ 41,634 पर और 50 शेयरों वाला निफ्टी 21 अंक गिरकर 12,261 पर खुला। सुबह 10.05 बजे करीब 37 अंकों की गिरावट के साथ निफ्टी 12246 पर ट्रेड कर रहा था। कारोबारियों के मुताबिक, अमेरिकी हमले में ईरान के विशेष कुद्स सेना के प्रमुख जनरल कासिम सुलेमानी के मारे जाने के बाद एशियाई बाजारों में गिरावट का रुख रहा। इसका असर घरेलू शेयर बाजार में भी देखने को मिला। शंघाई, हॉन्ग-कॉन्ग और सियोल के शेयर बाजारों में गिरावट का रुख रहा जबकि तोक्यो का शेयर बाजार नए साल की वजह से बंद रहा।

कारोबारियों के मुताबिक, अमेरिकी हमले में ईरान के विशेष कुद्स सेना के प्रमुख जनरल कासिम सुलेमानी के मारे जाने के बाद एशियाई बाजारों में गिरावट का रुख रहा। इसका असर घरेलू शेयर बाजार में भी देखने को मिला। शंघाई, हॉन्ग-कॉन्ग और सियोल के शेयर बाजारों में गिरावट का रुख रहा जबकि तोक्यो का शेयर बाजार नए साल की वजह से बंद रहा। सेंसेक्स पर सनफार्मा, टीसीएस, एचसीएलटेक, इन्फोसिस, टेक महिंद्रा, भारती एयरटेल, ओएनजीसी, हीरो मोटो कॉर्प, रिलायंस, इंडसइंड बैंक को छोड़कर अन्य सभी शेयर लाल निशान में रहे।

सेंसेक्स पर सनफार्मा, टीसीएस, एचसीएलटेक, इन्फोसिस, टेक महिंद्रा, भारती एयरटेल, ओएनजीसी, हीरो मोटो कॉर्प, रिलायंस, इंडसइंड बैंक को छोड़कर अन्य सभी शेयर लाल निशान में रहे। निफ्टी पर टीसीएस, सन फार्मा, गेल, एचसीएल टेक, इन्फोसिस के शेयर टॉप गेनर्स थे तो निफ्टी पर जी लिमिटेड, इन्फ्राटेल, एशियन पेंट, एक्सिस बैंक, आयशर मोटर के शेयर टॉप लूजर्स रहे।

10 साल में 1600% की तेजी, बाटा इंडिया पर ऐनालिस्ट फिदा

बीते 10 सालों में 1600 पर्सेंट से ज्यादा रिटर्न देने वाली कंपनी बाटा इंडिया की लीडरशिप पोजिशन देखते हुए इसके और चढ़ने की उम्मीद जता रहे ऐनालिस्ट्स। हर टाइमफ्रेम में कंपनी ने बेंचमार्क इंडेक्स को आउटपरफॉर्म किया है।

मुंबई। पिछले एक दशक में लगातार बेहतर परफॉर्मेंस दे रही इस कंपनी के शेयरों से निवेशकों को 1,600त्र रिटर्न मिला है। इंडस्ट्री की स्ट्रॉन्ग पोटेंशल और सेक्टर में लीडरशिप पोजिशन को देखते हुए ऐनालिस्ट इसके प्रॉस्पेक्ट्स पर अब भी बुलिश हैं। यह कंपनी कोई और नहीं 'बाटा इंडिया' है। जूते-चप्पल बनाने वाली इस कंपनी के शेयरों ने पिछले एक दशक में लगभग 1,661त्र का रिटर्न दिया है। इसका रिटर्न पिछले पांच साल में 168.12त्र, तीन साल में 290त्र और एक साल में 54.44त्र रहा है। इसने हर टाइमफ्रेम में बेंचमार्क इंडेक्स को आउटपरफॉर्म किया है। इसका शेयर गुरुवार को 0.31त्र बढ़कर 1751.00 रुपये पर बंद हुआ।

कॉम्पिटिटर रिलैक्सो का परफॉर्मेंस

बाटा इंडिया की कॉम्पिटिटर रिलैक्सो फुटवेयर का परफॉर्मेंस स्टॉक मार्केट पर दमदार रहा है। इसने पिछले एक साल में 67.64त्र, तीन साल में 206.33त्र, पांच साल में 336.60त्र जबकि 10 साल के टाइमफ्रेम में 6,311त्र का रिटर्न दिया है। हालांकि इसकी दूसरी कॉम्पिटिटर खादिम इंडिया का शेयर पिछले एक साल में 67.27त्र टूटा है। रायटर्स ऐकॉन के डेटा के मुताबिक, बाटा इंडिया के शेयरों में पिछले 12 महीने के ईपीएस के मुकाबले 62.20 गुना पर ट्रेड हो रहा है। 1 जनवरी 2020 को कंपनी के शेयरों पर एक 'स्ट्रॉन्ग बाय', 'चार बाय', तीन 'होल्ड' और दो 'सेल' रेटिंग थी।

एयर इंडिया कर्मचारियों को बकाया भुगतान का आश्वासन

नागरिक उड्डयन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सरकारी विमान सेवा कंपनी एयर इंडिया के कर्मचारियों को बकाया वेतन-भत्तों के जल्द भुगतान का आश्वासन देते हुये गुरुवार को कहा कि एयरलाइन के निजीकरण में उनके हितों की रक्षा की जायेगी।

नई दिल्ली (वार्ता)। श्री पुरी ने आज एयर इंडिया के विभिन्न कर्मचारी संघों के प्रतिनिधियों को बातचीत के लिए आमंत्रित किया था। एविएशन इंडस्ट्री इम्प्लाइज गिल्ड के महासचिव जॉर्ज एब्राहम ने 'यूनीवार्ता' को बताया कि कर्मचारी संगठनों ने सरकारी विमान सेवा कंपनी के निजीकरण को गलत बताते हुये इसे रोकने की माँग की जिस पर श्री पुरी ने कहा कि यह उनके वश में नहीं है। हालाँकि उन्होंने कर्मचारियों की अन्य चिंताओं पर सकारात्मक आश्वासन दिया।

नागरिक उड्डयन मंत्री ने कहा कि वह यह सुनिश्चित करेंगे कि किसी को जबरन नौकरी से न निकाला जाये। कर्मचारियों ने निजीकरण के बाद सेवा शर्तों में बदलाव न करने और चिकित्सा बीमा आदि पूर्ववत बनाये रखने की माँग की। इस पर श्री पुरी ने कहा कि कर्मचारियों के हितों का पूरा ध्यान रखा जायेगा। एक साल से ज्यादा समय का 25 प्रतिशत बकाये वेतन-भत्ते के भुगतान की माँग पर केंद्रीय मंत्री ने आश्वासन दिया कि इसका जल्द से जल्द भुगतान किया जायेगा। एयर इंडिया ज्वाइंट फोरम के अध्यक्ष श्री विलास ने बताया कि श्री पुरी ने 10 दिन बाद एक बार फिर कर्मचारियों को मिलने के लिए बुलाया है। इस बीच वह सरकार के समक्ष कर्मचारियों की माँग रखेंगे।

सुस्त मांग से सीसी वायदा कीमतों में आई गिरावट

नई दिल्ली। । कमजोर मांग के कारण सटोरियों ने अपने सौदों की कटान की जिससे वायदा कारोबार में शुक्रवार को सीसा की कीमत 3.8 प्रतिशत की गिरावट के साथ 147 रुपये प्रति किलोग्राम रह गयी। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में, दिसंबर माह में डिलीवरी वाले सीसा के अनुबंध के भाव 5.80 रुपये या 3.8 प्रतिशत की हानि के साथ 147 रुपये प्रति किलोग्राम रह गये जिसमें 10 लॉट के लिए कारोबार हुआ।बाजार विश्लेषकों ने कहा कि हाजिर बाजार में उपभोक्ता उद्योगों (बैटरी निर्माताओं) की कमजोर मांग के कारण कारोबारियों द्वारा अपने सौदों की कटान करने से मुख्यतः यहां वायदा कारोबार में सीसा कीमतों में गिरावट आई।

अमेरिका स्ट्राइक से सोना-चांदी 755 रुपये महंगा

इराक की राजधानी बगदाद में अमेरिकी एयर स्ट्राइक में ईरान का सबसे ताकतवर जनरल कासिम सुलेमानी मारा गया जिसके बाद शुक्रवार को सोना-चांदी और कच्चा तेल की कीमत में भारी उछाल आया। वायदा कारोबार में चांदी आज 755 रुपये तक महंगा हो गया।

नई दिल्ली। अमेरिका एयर स्ट्राइक में ईरान के सबसे ताकतवर जनरल कासिम सुलेमानी मारा गया, जिसके बाद एकबार फिर से वैश्विक परिस्थिति बदल गई। इस कार्रवाई का असर वैश्विक बाजार पर साफदिखाई दे रहा है और सोना-चांदी के भाव में शुक्रवार को काफी उछाल आया। वायदा कारोबार में चांदी 755 रुपये चढ़कर 47,777 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई, जबकि सोना 589 रुपये उछलकर 39,866 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया। एमसीएक्स पर दोपहर 2.45 बजे मार्च महीने में डिलिवरी वाली चांदी 755 रुपये उछलकर 47,777 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच चुकी है। कारोबार के दौरान यह 47924 तक पहुंची थी। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में, फरवरी महीने में डिलीवरी वाला सोना 589 रुपये यानी 1.5 प्रतिशत बढ़कर 39,866 रुपये प्रति दस ग्राम पर पहुंच गया। इसमें 4,723 लॉट का कारोबार हुआ। गुरुवार देर रात इराक की राजधानी बगदाद में अमेरिका ने एक अप्रत्याशित घटनाक्रम में हवाई हमला करके ईरान के अत्यंत प्रशिक्षित कुद्स फोर्स के प्रमुख मेजर जनरल कासिम सुलेमानी को मार डाला। कहा जा रहा है कि सुलेमानी का काफिला बगदाद एयरपोर्ट की ओर बढ़ रहा था।

कच्चे तेल के बाजार में खलबली

हांगकांग। अमेरिकी हमले में ईरानी कमांडर जनरल कासिम सुलैमानी की मौत की खबरों के बाद शुक्रवार को कच्चे तेल की कीमतों में चार प्रतिशत से अधिक की तेजी दर्ज की गई। इस हमले के बाद ईरान और उसके आस - पास के क्षेत्रों में संघर्ष की आशंका बढ़ गई है। अमेरिका ने शुक्रवार सुबह बगदाद के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हमला किया। इस हमले में ईरान की सैन्य इकाई कुद्स के प्रमुख जनरल कासिम सुलैमानी मारे गए। हमले के बाद , ब्रेंट कच्चा तेल 4.4 प्रतिशत बढ़कर 69.16 डॉलर प्रति बैरल जबकि वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट कच्चा तेल 4.3 प्रतिशत उछलकर 63.84 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया था।

तीन दिवसीय महाधिवेशन में व्यापारी करेंगे अपनी समस्याओं पर चर्चा

नई दिल्ली (वार्ता)। देश के करीब 10 हजार व्यापारी प्रतिनिधि सोमवार से यहां तीन दिवसीय महाधिवेशन में ई-कॉमर्स कंपनियों से व्यापारियों को होने वाली दुश्वारियों और व्यापारी वर्ग की अन्य समस्याओं पर चर्चा करके उनके समाधान के तरीके निकालेंगे। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स(कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल ने शुक्रवार को यहां संवाददाताओं को बताया कि रामलीला मैदान में आयोजित होने वाले इस महाधिवेशन में देश के कोने-कोने से व्यापारी प्रतिनिधि शामिल होंगे और खुले सत्रों में अपनी विभिन्न समस्याओं और सुझावों को पेश करेंगे। महाधिवेशन के अंत में दिल्ली घोषणा पत्र जारी किया जायेगा जिसमें देश भर के करीब सात करोड़ व्यापारियों से जुड़ी समस्याओं और सुझावों का विवरण होगा। जायेगा। उन्होंने बताया कि महाधिवेशन में डिजिटल भुगतान पर लगने वाले शुल्क को समाप्त करने, व्यापारियों को बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं से कर्ज मिलने में सहूलियत, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना को प्रभावी बनाने के लिए उसमें आवश्यक सुधार,व्यापारी पेंशन योजना में सुधार,व्यापारियों के लिए सस्ती दर पर बीमा योजनायें, देश में कोआपरेटिव मॉडल अपनाने पर बातचीत, महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने आदि विषयों पर चर्चा की जायेगी। खंडेलवाल ने बताया कि महाधिवेशन में दिल्ली के व्यापारियों को लेकर एक विशेष सत्र होगा जिसमें दिल्ली में चल रही लगातार सीलिंग, गुजरात की तर्ज पर दिल्ली किराया कानून बनाने और स्मार्ट सिटी कार्यक्रम के अंतर्गत व्यापारी बाजारों को स्मार्ट बनाने पर चर्चा होगी।

तांदुला नदी के किनारे शराब दुकान के संचालन से पसर रही गंदगी

नवप्रदेश संवाददाता

बालोद। मुख्यालय में कालेज की ओर से गुजरने वाले बीच रास्ते पर तांदुला नदी के किनारे देशी एवं अंग्रेजी दुकान का संचालन हो रही है। इसके ठीक पहले अवैध रूप से चखने की दुकान का संचालन किया जा रहा है। जानकारी के अनुसार शासन द्वारा गठित कार्पोरेशन के माध्यम से शराब विक्रय किए जाने के साथ ही शासन द्वारा शराब दुकान के परिसर में संचालित सभी चखना दुकानों एवं अहातों को भी निरस्त किया गया था। लेकिन देशी एवं अंग्रेजी दुकान के आसपास अवैध चखना दूकान का संचालन किया जा रहा है। आबकारी पुलिस विभाग द्वारा चखना दुकान के संचालन के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की।

हो रहा पर्यावरण प्रदूषित

जिस स्थान पर चखना दुकान संचालित होता है वहां आसपास डिस्पोजल व पॉलीथिन बिखरे पड़े हैं जिसके कारण पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है तो वही तांदुला नदी के तट पर बसें शराब दुकान तांदुला नदी की शोभा बिगाड़ रही है।

संबंधित विभाग नहीं दे रहा ध्यान

जानकारी के अनुसार आबकारी विभाग द्वारा भी संबंधित दुकान संचालन करने वाले को मौखिक मौन स्वीकृति प्राप्त हुई है। संबंधित विभाग द्वारा कार्रवाई ना करना मिलीभगत को इंगित करता है। इस शराब भट्टी के मार्ग के समीप चखने के दुकान के पास शाम होते ही मेला का माहौल रहता है। और चखना दुकान शराब दुकान के खुलने से लेकर बंद होने तक खुलेआम चलाया जाता है। इन चखना दुकानों पर मिक्चर, डिस्पोजल, पानी पाऊच सहित अन्य खाद्य सामाग्री की बिक्री भी की जाती है।

नि:शुल्क योग शिविर आयोजित

खरोरा। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के तत्वधान में 1 जनवरी से 5 जनवरी तक में गुरु घासीदास मंदिर के आंगन में ग्राम पंचायत खपरी, तहसील व विकासखंड तिल्दा,नि:शुल्क योग शिविर का आयोजित हुआ है जिसमें योगाचार्य जय प्रताप साहू जिला योग प्रचारक रायपुर के द्वारा नि:शुल्क परीक्षण दिया जा रहा है जिसमें ग्रामीण महिलाएं एवं बच्चे भाग लेकर सर्दियों के दिनों में होने वाले रोगों के लिए जैसे अस्थमा, एलर्जी ,सर्दी ,खांसी एवं जोड़ों के दर्द से गठियाहमारे शरीर को तीन रोगों में वात ,पित्त, कफ इस सारे रोगों के बारे में उपचार योग और जिसमें योग शिविर के दूसरे दिन में सबसे पहले मंत्रों का उच्चारण करके के यौगिक जोगिंग, सूर्य नमस्कार ,सूक्ष्म व्यायाम एवं प्राणायाम का जनकारी दिया गया।

सर्वेश्वरी समूह के सदस्यों ने गरीब परिवारों को 400 कम्बल का किया वितरण

नवप्रदेश संवाददाता

कसडोल। श्री सर्वेश्वरी समूह के सदस्यों ने शुक्रवार को कसडोल विकासखंड के ग्राम बोरसी के आश्रित ग्राम बकला, डाढ़ाखार, कटवाझर, खुड़मुड़ी, भींभोरी, बपरा, गुढ़ागढ़, अर्जुनी, महाराजी, खोसडा, महाकोनी, दलदली, गिंदोला, कुकरीकोना, सलीहा, मलहवा, प्रतापगढ़, झरनी, पचपेडिया और केरिझर सहित अन्य गांवो के 400 से ऊपर गरीब परिवारों को साल, कंबल, इनर और कोटसुल वितरण किया गया। इस मौके पर मंत्री दीपक ठाकुर ने कहा की सर्वेश्वरी समूह सेवा के भाव से ही जाना जाता है। सर्वेश्वरी समूह के जहां-जहां भी आश्रम हैं वहां पर भी गरीब एवं असहायों के लिए हमेशा ही सेवा देने का कार्य किया जाता है। उन्होंने कहा कि भाटापारा आश्रम के द्वारा समय-समय पर गरीबों की सेवा हेतु आवश्यक कदम उठाए जाते है। इसी तरह हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कड़ाके की ठंड को देखते हुए सर्वेश्वरी समूह के सदस्यों द्वारा कसडोल विकासखंड की कई ग्रामों में आज भ्रमण कर गरीब परिवारों को गर्म कपड़ा सहित जरूरत की सामग्री बांटी जा रही है। जिससे गरीब परिवारों को किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े। साथ ही हमेशा समहू द्वारा जनहित के कार्यो पर अग्रणी भूमिका निभाती है।

सर्वेश्वरी मतलब सेवा कई वर्षो से लगातार असहाय लोगों की मदद में आगे आकर सहयोग देने वाली समूह के वरिष्ठ सदस्य शंकर ने कहा की श्री सर्वेश्वरी समूह का मतलब ही सेवा है, जो गरीबों को मदद के लिए हमेशा तत्पर रहता है। उल्लेखनीय है कि परम पूज्य अघोरेश्वर भगवान राम जी द्वारा 1961 में मानवता के कल्याण के लिए स्थापित इस अघोर पीठ पर बिना किसी भेदभाव के सभी जाति-धर्म के पीड़ित, उपेक्षित, असहाय रोगी लोगों के अलावा युवाजन, किसान भाई, शासन-प्रशासन के अधिकारी , पदाधिकारी गण, चिकित्सक, अभियंता, पत्रकार, वकील एवं पुलिस तथा अन्य बंधुओं का आगमन निरंतर होता रहता है।

कु. चंचल गोदावरी वर्मा ने अपना नामांकन किया जमा

नवप्रदेश संवाददाता

साजा। पंचायती स्तर के चुनावी बिगुल बजते ही कांग्रेस ने अपने इरादे जाहिर कर दिया है। सबसे पहले प्रत्याशी चयन करते हुये अपने विरोधी दलों से आगे निकलते हुए अब नामांकन रैली की भीड़ को देखते हुए यही अंदाजा लगाया जा सकता है कि शक्ति प्रर्दशन के मामले में भी कांग्रेस अपने विरोधी दलों से आगे ही है ,संतोष वर्मा पर पूरी निष्ठा दिखाते हुए कांग्रेस ने संतोष वर्मा की पुत्री चंचल वर्मा को जो की पूर्व में भी निर्वाचित हुए थी को एक बार पुनः टिकट देकर मजबूत प्रत्याशी मैदान में उतार दिया हैं। ाज बेमेतरा के कलेक्ट्रेट में पूरे क्षेत्र से आये हुए समर्थकों की भीड़ देखकर आम जनमानस में यह चर्चा का विषय बना रहा।गाड़ियों में भरकर आये समर्थको में काफी जोश देखा गया। अपर कलेक्ट्रेट के चेम्बर तक ये समर्थक अपने प्रत्यशी के साथ ही नज़र आये। ग्राम मुंगलाटोला से दल बल और शक्ति प्रदर्शन के साथ नामांकन रैली निकाल कर कलेक्ट्रेट पहुँचे। समर्थकों की भीड़ के साथ जिला पंचायत बेमेतरा के साजा विधानसभा अंर्तगत क्षेत्र क्रमांक 10 से कु.चंचल गोदावरी वर्मा ने अपर कलेक्टर संजय दीवान के समक्ष अपना नामांकन फार्म दाखिल किया।

डुड़िया में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

नवप्रदेश संवाददाता

बालोद। अर्जुन्दा डुड़िया में पहली बार एक दिवसीय नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर , नेत्र जाँच, दन्त परीक्षण व विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन छात्र युवा मंच के अर्जुन्दा क्षेत्र के अध्यक्ष विनोद कुमार टंडन व विद्यालय सदस्यता प्रभारी यशवंत कुमार टंडन के नेतृत्व में अपने 18 वें जन्मदिन को रचनात्मक व सकरात्मक रूप से मानते हुए युवाओं में रक्तदान के प्रति फैली भ्रांतियो को दूर करने व युवाओं में रक्तदान के प्रति जागरूक व रक्तदान के पुण्य व परोपकार के नेक कार्य कर लोगों को जनसेवा का संदेश दिया।

जिसमें मुख्य रूप से नांदगांव ब्लड बैंक प्रभारी श्री राजेश जैन, टेक्नीशियन पुष्पा ,ओशिन, नर्स सुनन्दनी, काउंसलर मोहित, समाजसेवी श्री फनेन्द्र जैन, छात्र युवा मंच के संयोजक श्री नागेश यदु जी, प्रधानमंत्री ब्लड बैंक प्रभारी चंद्रभान जंघेल, कर्णकान्त श्रीवास्तव व ग्राम के सरपंच श्रीमती ईश्वरी बाई , उपसरपंच श्री सुरेंद्र देवांगन, ग्राम प्रमुख श्री बरतिया राम देवांगन, कोटवार केजा बाई चौहान, पंच रामावतार टंडन, संतलाल देवांगन,पंकज चौधरी, हुबलाल टंडन, मितानिन सुलोचना कामड़े, लोकेश्वरी सिन्हा, मिथलेश्वरी सिन्हा, आँगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती हर्ष देवांगन व धनेश्वरी ठाकुर व समाज सेविका श्रीमती ललिता ठाकुर व समस्त ग्रामवासी उपस्थित थे।

50 लोगों का नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण हुआ

इस मौके पर रायपुर से पहुंचे डॉ. अशोक साहू नेत्र चिकित्सक व अंजोरा से अवनिकान्त ठाकुर व नितेश कुमार दन्त चिकित्सक ने आँख व दाँत की तकलीफवाले मरीजों को स्थानीय अस्पताल में जल्द ही चेकअप कराने की सलाह दी गई।

युवाओं को करेगें प्रेरित और जागरूक

यशवंत कुमार टंडन ने बताया कि आज के युवा वर्ग प्यार को साबित करने के लिए नसे काटने के लिए तैयार है लेकिन कोई रक्तदान के लिए सूई चुभाने को तैयार नही है और आज के युवा अपनी संस्कृति व सभ्यता को भूल कर जन्मदिन पर केक काटकर, मोमबत्ती बुझा कर, शराब पी कर व पार्टी माना कर ऐसे कार्यों में अपने धन का दुरुपयोग करते है तो इस कुरीतियों को करने, अपने जन्मदिन पर लोगों सेवार्थ हेतु एक दिवसीय नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर व विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन कर युवाओं में रक्तदान के प्रति प्रेरित व जागरूक किया गया।

कमांडर की ठोकर से दो युवकों के पैर टूटे

नवप्रदेश संवाददाता

बोड़ला। नगर के एस डी एम कार्यालय के पास मोहगांव मिलन चैक में कमांडर की ठोकर से मोटरसाइकिल सवार दो युवक घायल हो गए। और उनके पैर में गंभीर चोटे आई है।घटना के विषय में जानकारी देते हुए थाना बोड़ला के एसआई श्री नेताम ने बताया कि मोटरसाइकिल में सीजी 04 डीक्यू 9266 में सवार होकर ग्राम मनोहरी मंगली के दोनों भाई प्रेम सिंह पिता अमर सिंह, परमेश्वर पिता अमर सिंग मध्यप्रदेश के मंगली मनोरी से नेउरगांव अपनी मां से मिलने जा रहे थे, जो कि गन्ना के खेत में काम करती है। उसी दौरान एसडीएम ऑफिस के पास मिलन चौक में कमांडर सीजी 19 टी 0294 ने मोटरसाइकिल सवार युवकों को जमकर टक्कर मार दी जिससे दोनों का पैर टूट गया ,डायल 112 की मदद से घायलों को तुरंत अस्पताल में पहुंचा कर पुलिस ने मामले को जांच में लेकर कार्रवाई शुरू कर दी है।

ऋषि जैविक उत्पाद कृषक अभिरुचि समूह का गठन

नवप्रदेश संवाददाता

बिलाईगढ़। विकासखंड बिलाईगढ़ के अंतर्गत ग्राम बंदारी जैविक उत्पाद की ओर अग्रसर हुआ जो कि क्षेत्र के लिए प्रेरणा दायक बना हुआ है। प्राप्त समाचार के अनुसार विकासखंड बिलाईगढ़ के अंतर्गत ग्राम बंदारी जो की पूर्णता खेती किसानी पर निर्भर है बंदारी ग्राम के युवा किसान पुरनेश साहू कृषि विभाग के अधिकारियों के मार्गदर्शन में खेती-किसानी के साथ-साथ कुछ अलग पहचान बनाने की ठानी और आत्मा योजना के साथ जुड़कर युग ऋषि जैविक उत्पाद कृषक अभिरुचि समूह का गठन किया। समूह के द्वारा वर्मी टांका निर्माण की केचुआ डालकर वर्मी कंपोस्ट का उत्पादन कर अपने स्वता के खेतों में प्रयोग किया। साथ ही व्यवसायिक रूप से करते हुए अन्य टाका का निर्माण भी किया गया ।गौशाला से इकट्ठा किया हुआ गोमूत्र से जैविक उत्पाद जैसे विटामिन एवं कीटनाशक तैयार कर के साथियों के साथ-साथ आस-पास के गांव के किसानों द्वारा प्रयोग कर फसलों की सुरक्षा किया है ।उनके इस प्रयास से लोगों में जैविक उत्पाद की ओर चेतना जागी है ।

संविलियन लेने या नहीं लेने के विकल्प की आखिरी तिथि आज

कवर्धा। एक जनवरी 2020 को आठ साल या उससे अधिक की सेवा अवधि पूर्ण करने वाले शिक्षक पंचायत व नगरीय निकाय संवर्ग के संविलियन प्रकिया के लिए समय सारणी जारी कर दिया गया है। छत्तीसगढ़ टीचर्स एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष रमेश कुमार चन्द्रवंशी ने बताया कि छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग मंत्रलाय नवा रायपुर द्वारा विगत 31 दिसम्बर को जारी पत्र में संविलियन प्रक्रिया को विभिन्न स्तर पर समय सीमा में चरणबद्ध ढंग से कार्य संपादित किये जाने हेतु पूर्व की भांति कार्यवाही करते हुए प्रस्ताव सक्षम अधिकारी को प्रेषित किये जाने का निर्देष समस्त कलेक्टर, जिला शिक्षा अधिकारी व स्थानीय निकाय के अधिकारियों को दिया गया है।

तम्बाकू नियंत्रण टीम ने पान दुकानों पर दी दबिश

नवप्रदेश संवाददाता

भाटापारा। नियंत्रक खाद्य एवं औषधि प्रशासन छत्तीसगढ़ के निर्देश पर उपसंचालक खाद्य एवं औषधि प्रशासन बलौदाबाजार ने शहर में तम्बाकू उत्पाद अधिनयम कोटपा के तहत कार्यवाही किया गया। जिला के लिए गठित टीम ने कोटपा अधिनियम 2003 के अंतर्गत सिगरेट,तंबाकू उत्पादों का सेवन पर प्रतिबंध एवं बिक्री का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के आस पास स्थित दुकानों में बड़ी मात्रा में चलानी कार्यवाही की गई। जिसमें बहुउद्देश्यीय स्कूल के सामने स्थित ऋषभ पान भंडार, श्याम स्वीट भाटापारा, देवांगन पान भंडार, लक्ष्मी पान पैलेस,साई डेली नीड्स उसी तरह शासकीय स्कूल के सामने देवांगन किराना दुकान, देवा पान भंडार भाटापारा सम्मिलित है।इस प्रकार कारवाही के दौरान 10 चालन काटा गया जिसमें कुल नो सौ बीस रुपया जुर्माना लगाया गया है।यह कार्यवाही जारूकता अभियान के तहत किया गया है। जिसमे लोगो एवं सम्बंधित दुकानों को सार्वजनिक स्थलों के आसपास खुले में तम्बाकू उत्पादों का सेवन एवं बिक्री प्रतिबंधित है। कार्यवाही के दौरान टीम में औषधि निरीक्षक श्री किशोर ठाकुर ,कु नीलिमा, नमूना सहायक रूखमणी कवर,जिला कार्यक्रम सलाहकार सुजाता पाण्डेय, एन सी डी अक्षय दीवान व थाना प्रभारी महेश धुव उपस्थित थे।

नवनिर्वाचित पार्षदों का शपथ ग्रहण आज

नवप्रदेश संवाददाता

डौण्डी। नव निर्वाचित पार्षदों का शपथ ग्रहण कार्यक्रम चार जनवरी को नगर पंचायत कार्यालय के सांस्कृतिक भवन में सुबह 8 बजे रिर्टनिंग आफिसर व अनुविभागीय अधिकारी ठाकुर राम सिंह की उपस्थिति में होगा। शपथ ग्रहण समारोह के बाद सभी पार्षदों में से अध्यक्ष व उपाध्यक्ष बनाए जाने की प्रक्रिया सम्पन्न होगी। इसमें दोपहर 12 बजे से 01:30 बजे तक, नाम निर्देशन व सुक्ष्म जांच 01:30 बजे से दो बजे तक, वापसी दो बजे से 02:30 बजे तक, आवश्यकता की स्थिति में मतदान दोपहर तीन बजे से 03:45 बजे तक व मतगणना व परिणाम की घोषणा 03:45 बजे से 04:15 बजे तक किया जाएगा। 24 दिसम्बर को आए परिणाम के बाद से अब तक नगर वासियों के मन में एक ही प्रश्न उठ रहा है। नगर में जहा देखों वहां बस नगर अध्यक्ष कौन बनेगा, इसी बात को लेकर चर्चा हो रही है।

वहीं 13 में से 6 सीट जीतने वाली भाजपा पार्टी व 4 सीट कांग्रेस जीत कर भी पार्षदों को बहलाने-फुसलाने के डर से पिछले 24 दिसम्बर से ही नगर से बाहर रखा गया है।। वहीं यह भी सूचना सामने आ रही है कि अभी तक भाजपा व कांग्रेस में अध्यक्ष और उपाध्यक्ष कौन होगा, इसके लिए एक मत नहीं हो पाया है।

धान उपार्जन केन्द्र में किसानों को नहीं मिल रहा टोकन

नवप्रदेश संवाददाता

भटगांव। एक ओर जहां सरकार जो है किसानो के धान को लेने के लिए अनेक दावा एवं घोषणा कर रही है और अवैध धान परिवहन करने वालो पर लगातार कार्यवाही कर रही है तांकि किसान जो है अपनी धान को उपार्जन केन्द्र मे बेच सके और किसानों को समर्थन मूल्य मिल सके। लेकिन बिलाईगढ़ ब्लांक के नगर भटगांव के उपार्जन केन्द्र में किसानों का टोकन नही काटने का मामला सामने आया है। जहां आज टोकन नही काटने से नाराज किसानों ने भटगांव उपतहसील पहुंच कर नायब तहसीलदार ममता ठाकुर के कार्यालय का घेराव कर समस्याओं का निराकरण करने की मांग को लेकर पहुंचे थे। तो वही कार्यालय मे नायब तहसीलदार की अनुपस्थित होने पर फोन के जरिए सारी बात किया गया जहां किसानों की समस्या को देखते हुए तत्काल निराकरण का आश्वासन दिया। तो वही भड़के किसानो द्वारख समय पर निराकरण नही होने की स्थिति मे रोड पर बैठ कर चक्काजाम करने की चेतावनी भी दी जा रही है। जहां किसानों को हो रही समस्या को लेकर पूछताछ करने जब धान उपार्जन केन्द्र मे पत्रकारों की टीम पहुंचा तो देखा गया कि धान उपार्जन केन्द्र मे कर्मचारी मौजूद नही होना और उपार्जन केन्द्र मे ताला लटका मिला। तो वही गौरतलब हो कि लगातार भटगांव धान उपार्जन केन्द्र हमेशा सुर्खियों पर रहा है और शासन प्रशासन के कड़ी निर्देश के बाद भी किसानो का समस्या का निराकरण नही हो पा रहा है। जहा अब ऐसे मे देखना होगा कि आखिरकार किसानों को हो रही समस्या का निराकरण कब तक हो पाएगा।

छत्तीसगढ़ी अग्रवाल समाज का केंद्रीय अधिवेशन 5 को

भाटापारा। छत्तीसगढ़ी अग्रवाल समाज का 46 वा केन्दीय अधिवेशन 5 जनवरी को भाटापारा में होने जा रहा है। दो सत्र में होने वाले इस अधिवेशन के लिए समाज के द्वारा तैयारी जोर शोर से की जा रही है। गजानंद महाविद्यालय रोड़ स्थित छत्तीसगढ़ी अग्रवाल धर्मशाला में समाज का 46 वा केंद्रीय अधिवेशन 5 जनवरी को होगा। दो सत्र में होने वाले इस अधिवेशन में प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि वरिस्ठ पत्रकार गिरिजा शंकर अग्रवाल होंगे तथा विशिष्ठ अतिथि के रूप में डॉ ब्रिगेडियर एच एस अग्रवाल उपस्थित रहेंगे7 वही दूसरे सत्र में मुख्य अतिथि सांसद सुनील सोनी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में विधायक शिवरतन शर्मा रहेंगे7कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय अध्यक्ष अजय दानी करेंगे और विशेष् आमन्त्रित अतिथि के रूप में डॉ अनुसुइया अग्रवाल महासमुंद, डॉ आरती अग्रवाल भोपाल रहेंगी।

शिविर स्किन रोग, दंत रोग, चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉक्टरों ने दिया परामर्श और दवाइयां

प्रकाश पर्व में स्वास्थ्य शिविर आयोजित, 50 मरीजों को मिला लाभ

नवप्रदेश संवाददाता

कवर्धा। श्री गुरूगोविंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य पर शुक्रवार को स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें डॉक्टर प्रफुल्ल शर्मा ने होम्योपैथिक पद्धति से दाद, खाज, स्किन रोग के मरीजों को जांच उपरांत दवाई दी। डॉक्टर नवल बेस ने दाँत संबंधित रोगियों को उचित परामर्श देते हुए उन्हे दवाइयां दी। जिसमें दांत का दर्द, दांतों का पीला होना आदि बीमारियों की दवाइयां दी गई। डॉक्टर आशीष मिश्रा चाइल्ड स्पेशलिस्ट सीनियर डॉक्टर बाल गोपाल रायपुर आज उन्होंने बच्चों के कई बीमारियों का उचित परामर्श दिया। जिसमें बच्चों को टॉन्सिल होना सर्दी खांसी बुखार आदि बीमारियों के लिए बच्चों को माता पिता को उचित परामर्श एवं सलाह दिया। आज का यह शिविर श्री गुरु गोविंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में रखा गया था। आने वाले महीनों में भी शिविर सभी सहयोगी डॉक्टरों के मदद से रखा जाएगा। यह शिविर जप-जप सेवा समिति के सहयोग से रखा गया। सेवा समिति के द्वारा प्रत्येक माह जिला सरकारी अस्पताल में लंगर की सेवा पिछले ढाई सालों से देते आ रही है। उसी कड़ी में एक कदम यह भी लोगों को उचित परामर्श मिल सके इसके लिए स्वास्थ्य शिविर हर महीने आयोजित किया जा रहा है।

80 विद्यार्थियों को दिए गए गर्म कपड़े

नवप्रदेश संवाददाता

कवर्धा। समनापुर संकुल विकासखंड कवर्धा की बैठक शासकीय आदर्श प्राथमिक उत्कृष्ट विद्यालय सैगोना में आयोजित की गई। मुख्य अतिथि के रूप में स्वयं जिला शिक्षा अधिकारी के. एल. महिलांगे उपस्थित थे।

साथ ही प्राचार्यगण बी. पी. गुप्ता, डी. डी. जोशी, के. एल. चौधरी, घनश्याम चन्द्राकर, प्रमोद शुक्ला, संजय श्रीवास्तव, डी. पी. सी, सतीश यदु, आदित्य श्रीवास्तव एच डी कुरैशी, बी. आर. सी जलेश चन्द्रवंशी, एम के गुप्ता निर्मलकर बड़े बाबू तथा संकुल के समस्त शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थे। प्रधान पाठिका श्रीमती अफसाना कुरैशी,प्रबंध समिति अध्यक्ष रमेशर पटेल, उपाध्यक्ष श्रीमती सुखबाई पटेल तथा संकुल प्रभारी श्रीमती हेमलता सोनी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। रमेशर पटेल का उत्कृष्ट अध्यक्ष के रूप में साल श्रीफल से सम्मान किया गया। साथ ही सैगोना विद्यालय के 80 विद्यार्थियों को अफसाना कुरैशी की प्रेरणा पर सफीउद्दीन कुरैशी के सौजन्य से उनके माता पिता की स्मृति में स्वेटर प्रदत्त किया गया यह अत्यंत अनुकरणीय कृत्य है।अवगत हो कि गत वर्ष यह स्कूल राज्य स्तरीय उत्कृष्ट स्कूल का पुरस्कार एवं श्रीमती अफसाना कुरैशी को राज्यपाल पुरस्कार मिल चुका है। जिले के नवाचारी विद्यालय के तौर पर यह विद्यालय जाना जाता है।

न्यूज गैलरी

हर औद्योगिक घराने को एक खेल गोद लेना चाहिए : गहलोत

जयपुर (वार्ता)। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने औद्योगिक घरानों का खेलों में योगदान देने का आह्वान करते हुए कहा है कि एक औद्योगिक घराने को एक खेल की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। राज्य स्तरीय खेलों के शुभारंभ के अवसर पर गहलोत ने कहा कि औद्योगिक घराने को एक खेल के लिये आधारभूत सुविधाओं की जिम्मेदारी लेने चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने एक करोड़ 25 लाख रुपये के पुरस्कारों की घोषणा भी की। गहलोत ने कहा कि पिछली बार हमने 2013 में खेल नीति बनाई थी, लेकिन बाद में सरकार जाने से इस पर ज्यादा काम नहीं हो पाया।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में प्रतिभाओं की कमी नहीं हैं, उन्हें तराशकर आगे बढ़ाने की जरूरत है। गहलोत ने कहा कि खिलाड़ियों का मनोबल ओलम्पिक खेलों में जाने का होना चाहिए। सरकार खिलाड़ियों को हरसंभव मदद देने के लिये तैयार है।

सुशील की ट्रायल टालने की मांग ठुकराई

नई दिल्ली (वार्ता)। भारतीय कुश्ती महासंघ ने दो बार के ओलम्पिक पदक विजेता पहलवान सुशील कुमार की चोट के कारण पुरुषों के 74 किग्रा फ्रीस्टाइल वर्ग में ट्रायल टालने की मांग ठुकरा दी है। स्टार पहलवान सुशील हाथ की चोट के कारण शुक्रवार को दिल्ली स्थित केडी जाधव कुश्ती स्टेडियम में होने वाले ट्रायल से हट गए हैं और उन्होंने अपने वजन वर्ग में ट्रायल स्थगित करने का आग्रह फेडरेशन को किया था और साथ ही मेडिकल सर्टिफिकेट फेडरेशन को भेजा था। कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष बृज भूषण शरण सिंह ने जोर देकर कहा है कि ट्रायल सभी वजन वर्गों में कराया जाएगा जिसमें पुरुष फ्रीस्टाइल में पांच ओलम्पिक वर्ग और ग्रीको रोमन में छह वर्ग शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि ट्रायल्स टाले नहीं जाएंगे क्योंकि फेडरेशन के पास 74 किग्रा में लड़ने वाले अच्छे पहलवान हैं। सुशील अगर चोटिल हैं तो क्या किया जा सकता है।

रोहित से आगे निकल जाएंगे विराट कोहली

नई दिल्ली (वार्ता)। भारतीय कप्तान विराट कोहली श्रीलंका के खिलाफ पांच जनवरी से शुरू हो रही तीन मैचों की टी-20 सीरीज में अपना पहला रन बनाते ही रोहित शर्मा से आगे निकल जाएंगे। सीमित ओवरों के भारतीय उपकप्तान रोहित को श्रीलंका के खिलाफ सीरीज से विश्राम दिया गया है। टी-20 सीरीज का पहला मैच पांच जनवरी को गुवाहाटी में ,दूसरा मैच सात जनवरी को इंदौर में और तीसरा मैच 10 जनवरी को पुणे में खेला जाएगा। मौजूदा समय विराट और रोहित अंतराष्ट्रीय टी-20 में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। टी-20 में इस समय विराट और रोहित एक बराबरी पर हैं।

वर्ल्ड कप टीम के लिए आईपीएल तक इंतजार करें: रवि शास्त्री

शास्त्री ने कहा कि वह महेंद्र सिंह धोनी समेत किसी प्लेयर को खारिज नहीं करते। आईपीएल में कई अनजाने खिलाड़ी भी प्रभावित कर वर्ल्ड कप की टीम में जगह बना सकते हैं।

- कोच रवि शास्त्री ने टीम इंडिया की क्रिकेट से जुड़े सभी मुद्दों पर रखी बेबाक राय
- शास्त्री बोले- अ20 वर्ल्ड कप में दिख सकते हैं धोनी, किसी को नहीं कर रहे खारिज
- विराट-रोहित में नहीं है कोई प्रतिद्वंद्विता, दोनों एक-दूसरे का करते हैं सम्मान
- 'जब कोई मैच करीब हो या बल्लेबाज अच्छा खेले तो करता हूं अपनी कॉमेंट्री मिस'

नई दिल्ली। टीम इंडिया के हेड कोच रवि शास्त्री नए सीजन की शुरुआत इस आस के साथ करने जा रहे हैं कि इस साल भारतीय टीम के खाते में एक और वर्ल्ड कप जरूर आएगा। शास्त्री मानते हैं कि इस टीम में माद्दा है और उसे सिर्फ अपनी पिछली गलतियों से सीख लेनी है। मानसिक तौर पर थोड़ा और मजबूत होने की जरूरत है। श्रीलंका के खिलाफ साल की पहली सीरीज में उतरने से पहले शास्त्री ने हब्ल्ल से एक्सक्लूसिव बातचीत में कहा कि वर्ल्ड कप के लिए अंतिम तौर पर टीम चुनने में आईपीएल का अहम रोल होगा।

लोगों को आईपीएल तक इंतजार करना चाहिए। मैं किसी को भी खारिज नहीं करता। अगर कुछ इंजरी होती हैं तो आप आईपीएल को ही देखेंगे कि वहां कौन अच्छा कर रहा है। मुझे पूरा यकीन है कि आईपीएल से एक या दो प्लेयर ऐसे मिल सकते हैं, जिनके बारे में आपने सोचा भी न हो और उन्हें खिलाना पड़ सकता है। उस वक्त की फॉर्म बहुत जरूरी हो जाएगी। क्योंकि आईपीएल के बाद वर्ल्ड कप में तीन-चार महीने ही रह जाएंगे। आईपीएल से हमें अंतिम तौर पर 16-17 खिलाड़ी तय करने में मदद मिलेगी।

जिस तरह से टीम ने तीनों फॉर्मेट में कॉन्सिस्टेंसी दिखाई, मेरे हिसाब से भारतीय क्रिकेट के लिए यह सबसे बेहतरीन सालों में से एक रहा। ओल्ड ट्रैफर्ड में 'उन 15 मिनटों' में अच्छा करते तो यह और भी बढ़िया साल होता। विराट में बहुत कुछ है, जो उन्हें सबसे अलग और बेहतर बनाता है। उनका जुनून, रनों की लिए उनकी भूख, हमेशा उत्कृष्टता के लिए उनकी लगन, कुछ हासिल करने के लिए अथक मेहनत और इसके लिए त्याग की भावना। वह हर बार पहले से बेहतर करना चाहते हैं।

स्टेन की अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी

दक्षिण अफ्रीका के तेज़ गेंदबाज़ डेल स्टेन इस वर्ष होने वाले आईसीसी ट्वंटी 20 विश्वकप के मद्देनज़र अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी करने जा रहे हैं और अपनी राष्ट्रीय टीम की ओर से इंग्लैंड के खिलाफसीमित ओवर सीरीज़ में खेलेंगे।

मेलबोर्न (वार्ता)। स्टेन अभी बिग बैश लीग में मेलबोर्न स्टार्स की ओर से खेल रहे हैं। स्टेन ने आस्ट्रेलिया के एक चैनल से कहा,÷मैं यह जानता हूं कि मैं इंग्लैंड के खिलाफटी-20 सीरीज़ का हिस्सा हूं, मेरी बोर्ड के साथ यही आखिरी बातचीत हुई है। मेरे पास दो सप्ताह का ब्रेक है और उसके बाद मैं सीधे अपने खेल का हिस्सा बनूंगा। मैं सच कहूं तो वनडे अंतरराष्ट्रीय का हिस्सा बनूंगा, लेकिन यह नहीं पता कि कितने समय तक खेलूंगा। और वनडे के बाद मैं टी-20 भी खेलूंगा। पिछले कुछ वर्षों से ही स्टेन चोटों से जूझ रहे हैं, खासकर नवंबर 2016 में उन्हें आस्ट्रेलिया दौरे में कंधे में करियर को जोखिम पहुंचाने वाली गंभीर चोट लगी थी। उसके बाद से वह आठ टेस्ट, नौ वनडे और केवल दो टी-20 ही खेल सके हैं। कंधे की चोट के कारण ही वह 2019 के आईसीसी विश्वकप में बिना एक भी मैच खेले ही टूर्नामेंट से बाहर हो गये थे।

हालांकि सात महीने बाद 36 साल के स्टेन मैच अभ्यास कर रहे हैं और उनकी निगाहें अब ट्वंटी 20 विश्वकप 2020 है जो अक्टूबर में आयोजित होना है। गत वर्ष टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले चुके स्टेन ने कहा,÷ट्वंटी 20 विश्वकप मेरे एजेंडे में है।

एशियन चैंपियनशिप के लिये दीपक-रवि क्वालीफाई

नई दिल्ली (वार्ता)। टोक्यो ओलंपिक का कोटा हासिल कर चुके पहलवान दीपक पुनिया और रवि कुमार दहिया ने सीनियर एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप के लिये क्वालीफाई कर लिया है।

राजधानी के केडी जाधव रेसलिंग इंडोर स्टेडियम में शुक्रवार को हुये ट्रायल में दोनों स्टार पहलवानों ने 17-23 फरवरी तक चलने वाली एशियन चैंपियनशिप के लिये अपने अपने वर्गों में क्वालीफाई कर लिया। लगातार शानदार प्रदर्शन की बदौलत विश्व के नंबर एक जूनियर पहलवान बने दीपक ने वर्ष 2020 की जबरदस्त शुरूआत करते हुये 86 किग्रा फ्री स्टाइल वर्ग में क्वालीफाई कर लिया। उन्होंने ट्रायल में 2014 राष्ट्रमंडल खेलों के कांस्य विजेता पवन कुमार को पराजित किया । विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतने वाले रवि कुमार ने अपने 57 किग्रा वर्ग के लिये क्वालीफाई किया और एयरफोर्स के पंकज को एकतरफा अंदाज़ में 10-0 से पराजित किया। विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता बजरंग पुनिया को उनके लगातार अच्छे प्रदर्शन की बदौलत इस ट्रायल से छूट दी गयी थी जबकि 74 किग्रा वर्ग के पहलवान सुशील कुमार हाथ की चोट के कारण ट्रायल से हट गये थे। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता सुशील ने भारतीय कुश्ती महासंघ को मेडिकल सर्टिफिकेट देकर अपने वजन वर्ग का ट्रायल स्थगित करने का अनुरोध किया था लेकिन फेडरेशन ने उनका यह आग्रह ठुकरा दिया था।

न्यूजीलैंड से आगे निकल जाएगा भारत

नई दिल्ली (वार्ता)। भारत पांच जनवरी से श्रीलंका के खिलाफ शुरू होने वाली तीन मैचों की टी-20 सीरीज के गुवाहाटी में होने वाले पहले मैच में उतरते ही न्यूजीलैंड को पीछे छोड़कर सर्वाधिक टी-20 मैच खेलने वाला दूसरा देश बन जाएगा। भारत और न्यूजीलैंड ने एक बराबर 126 टी-20 मैच खेले हैं। पाकिस्तान 149 टी-20 मैच खेलकर सबसे आगे है जिसके बाद भारत और न्यूजीलैंड हैं। गुवाहाटी का मुकाबला भारत का 127वां टी-20 मैच होगा। भारत ने श्रीलंका के खिलाफ अब तक 16 मैच खेले हैं जिसमें से उसने 11 मैच जीते हैं और पांच मैच हारे हैं। दिलचस्प है कि श्रीलंका इस सीरीज के तीनों मैच खेलने के बाद न्यूजीलैंड की बराबरी पर पहुंच जाएगा। श्रीलंका ने अब तक 123 टी-20 मैच खेले हैं।

गुजरात में छाए छत्तीसगढ़ के खिलाड़ी

डॉ मूर्ती, संगीता, मनीषी, दीक्षा, प्रिया ने बढ़ाया छग का मान

रायपुर। गांाधी नगर गुजरात में 27 दिसंबर से 2 जनवरी तक आयोजित सिविल सर्विसेज नेशनल बैडमिंटन टूर्नामेंट में छत्तीसगढ के खिलाड़ियों ने पुरूष और महिला वर्ग में ओवर आल चैम्पियन का खिताब अपने नाम किया । टूर्नामेंट में मनीषी सिंह शिक्षा विभाग कोरबा मिक्स डबल्स में विनर, वोमेन्स डबल्स में रनर रही । डॉ बी प्रसाद मूर्ती आयुष विभाग जगदलपुर को बेस्ट वेटरन्स प्लेयर आफद टूर्नामेंट का खिताब मिला । इसके अलावा डॉ मूर्ती मिक्स डबल्स से विजेता, मेन सिंगल के उपविजता रहे । छग की नामचीन खिलाड़ी संगीता राजगोपालन को बेस्ट वेटरन्स प्लेयर आफद टूर्नामेंट का वूमेन्स का खिताब यद्यपि मिक्स डबल्स में अपने ही छग के डॉ मूर्ती और मनीषी के हाथों पराजित होना पडा । इसके अलावा संगीता विमेन सिंगल, विमेन डबल्स की वीनर रही , मिक्स डबल्स में उन्हें तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा । छग की ही एक अन्य खिलाड़ी डॉ प्रिया विमेन डबल्स की उप विजेता रही । रायपुर वन विभाग की कर्मचारी और भारतीय टीम की सदस्य दीक्षा चैधरी मिक्स डबल्स विजेता रही जबकि विमेन सिंगल ओपन में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ । मंत्रालय के अनील हरदेल मैनेजर और पाटन महाविद्यालय के श्री नामदेव कोच थे।

अमृतसर, चेन्नई एवं वाराणसी विवि की टीमों ने जीते अपने मैच

सोनीपत (वार्ता)। हरियाणा के सोनीपत में स्थित चौधरी दीनबंधु छोटूराम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल में गुरुवार से आयोजित अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय महिला बास्केटबॉल के पहले दिन अमृतसर, चेन्नई और वाराणसी विश्वविद्यालय की टीमों ने अपने-अपने मैच जीतकर अगले दौर में प्रवेश कर किया।

प्रतियोगिता का पहला मैच उत्तरी जोन की विजेता जीएनडीयू, अमृतसर व आईटीएम, ग्वालियर के बीच खेला गया। अमृतसर ने आईटीएम, ग्वालियर की टीम को 87-63 पराजित किया। दूसरे मैच में हिंदुस्तान विश्वविद्यालय,चेन्नई की टीम ने उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर की टीम को 63-44 से पराजित किया। तीसरा मैच एलएनआईपीई, ग्वालियर व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के बीच खेला गया। ग्वालियर ने कुरुक्षेत्र की टीम को 52-42 के अंतर से हरा दिया। चौथा मैच मद्रास विश्वविद्यालय व एमजीकेवी, वाराणसी के बीच खेला गया। दोनों टीमों के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिली। हॉफ टाइम तक एमजीकेवी, वाराणसी की टीम ने मद्रास विश्वविद्यालय की टीम पर 23-14 से बढ़त बना ली थी। हॉफटाइम के बाद मद्रास की टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए मैच में वापसी करते हुए 47-41 के अंतर से जीत हासिल कर अगले दौर में प्रवेश कर लिया।

इससे पहले राई विधानसभा के विधायक मोहनलाल बडौली ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। कुलपति प्रो. राजेंद्र कुमार अनायत एवं खेल निदेशक डॉ वीरेंद्र सिंह ने बडौली का स्वागत किया।

तीरंदाजों से पदक की पक्की उम्मीद : मलिक

नई दिल्ली (वार्ता)। युवा ओलंपिक-2018 में भारत को पहला रजत पदक दिलाने वाले आकाश मलिक ने उम्मीद जताई है कि 2020 टोक्यो ओलंपिक में भारतीय तीरंदाजी दल देश के लिये पदक ज़रूर लेकर आएंगे। मलिक ने कहा-भारतीय तीरंदाजी के लिये खेलो इंडिया ओलंपिक के लिहाज़ से बहुत महत्वपूर्ण है। खेलो इंडिया गुवाहाटी में 10-22 जनवरी तक आयोजित किये जाएंगे। मलिक ने कहा, मुझे पूरा यकीन है कि 2020 टोक्यो ओलंपिक में भारत का तीरंदाजी दल पदक लेकर आयेगा। खिलाड़ियों का चयन ट्रायल से होगा जो वर्ष के शुरूआत में होंगे। खेलो इंडिया की तीसरा संस्करण हमें ट्रायल की तैयारियों में काफी मददगार होगा।

ओलंपिक में अच्छी तैयारियों से ही प्रदर्शन बेहतर होगा: गोपीचंद

भारतीय राष्ट्रीय बैडमिंटन टीम के कोच पुलेला गोपीचंद ने कहा है कि मजबूत तैयारी के साथ ही इस वर्ष होने वाले टोक्यो ओलंपिक में खिलाड़ियों से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद की जा सकती है।

नई दिल्ली (वार्ता)। भारत की दो स्टार और ओलंपिक पदक विजेता सायना नेहवाल तथा पीवी सिंधू को तैयार करने वाले गोपीचंद ने कहा कि उनकी टीम इस बार बैडमिंटन खिलाड़ियों से अच्छे प्रदर्शन की अपेक्षा कर रही है, लेकिन इसके लिये तैयारियों को पक्का करना अहम होगा।

राष्ट्रीय बैडमिंटन कोच ने कहा,÷ हमने पिछले कुछ ओलंपिक खेलों में अच्छा प्रदर्शन दिखाया है। इस बार हम विश्व चैंपियन सिंधू

जैसी खिलाड़ी के साथ ओलंपिक में उतर रहे हैं और यदि हम अपनी तैयारियों को योजनाबद्ध तरीके से अमलीजामा पहना पाते हैं तो टोक्यो में यादगार प्रदर्शन की उम्मीद की जा सकती है। भारत की ओलंपिक कांस्य विजेता सायना और पिछले खेलों की रजत विजेता सिंधू से पदक की सबसे बड़ी उम्मीद है। सिंधू गत वर्ष विश्व चैंपियन बनी थीं, जिसके बाद से वह टोक्यो में देश की सबसे बड़ी पदक उम्मीद भी मानी जा रही हैं। लेकिन विश्व चैंपियन बनने के बाद सिंधू के प्रदर्शन में गिरावट भी आयी और वह लगातार टूर्नामेंटों के शुरूआती दौर में ही हार गयीं। हाल में ग्वांग्झू में दिसंबर-2019 में बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर फाइनल के भी ओपनिंग मैच में सिंधू को हार झेलनी पड़ी थी। विश्व चैंपियनशिप जीतने के बाद से सिंधु लगातार पांच टूर्नामेंटों के शुरूआती दौरों में बाहर हो गयीं।

मुकाबला | **हमारा सामना आईएसएल की सबसे अच्छी टीमों में से एक के साथ होने जा रहा-टाटो**

कांतिरवा स्टेडियम में होगी दिग्गजों की भिड़ंत

हीरो इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) का छठा सीजन साल 2020 में प्रवेश कर चुका है। नए साल का पहला मुकाबला लीग की दो बड़ी टीमों-मौजूदा चैम्पियन बेंगलुरू एफसी और मौजूदा उपविजेता एफसी गोवा के बीच श्री कांतिरवा स्टेडियम में खेला जाएगा।

बेंगलुरू (वार्ता)। एफसी गोवा यह मैच जीतकर टॉप पर अपनी स्थिति मजबूत करना चाहेगी जबकि बेंगलुरू की टीम यह मैच जीतकर अपने और गोवा के बीच के अंतर को दो अंकों तक ले जाना चाहेगी। इस सीजन के पहले मैच में गोवा ने बेंगलुरू को ड्रॉ पर रोका था लेकिन अब बेंगलुरू की टीम अपने घर में अपने हक में परिणाम चाहेगी।

गोवा के सहायक कोच जीसस टाटो ने कहा, ÷हमारा सामना आईएसएल की सबसे अच्छी टीमों में से एक के साथ होने जा रहा है। यह हमारे लिए बड़ा मैच है लेकिन हालात के मुताबिक दबाव बेंगलुरू पर है। हमारे बीच पांच अंकों का फासला है। हम बेंगलुरू से आत्मविश्वास के साथ भिड़ेंगे और अगर हम यह मैच जीत जाते हैं तो हमारे बीच अंकों का फासला आठ का हो जाएगा। गोवा के मुख्य कोच सर्गियो लोबेरा इस मैच में मार्गदर्शन के लिए टीम के साथ नहीं होंगे क्योंकि चेन्नइयन एफसी के साथ हुए मैच के दौरान उनके

टचलाइन पर जाने को लेकर प्रतिबंध लगा हुआ है। गोवा की उम्मीदें स्टार स्ट्राइकर फेरान कोरोमिनास पर टिकी हुई हैं। यह अलग बात है कि जुआनन और अल्बर्ट सेरान के खिलाफ कोरो अपनी लय में नहीं नजर आते हैं। इसके अलावा ब्रेंडन फर्नांडिस गोवा के लिए अहम साबित हो सकते हैं। उनके नाम दो गोल और पांच एसिस्ट हैं।

बेंगलुरू के कोच चार्ल्स कुआडार्ट ने कहा, ÷मुझे लगता है कि इस सीजन में हम अच्छा खेल रहे हैं। बीते सीजन में भी हम अपने स्ट्राइकर मीकू के बगैर नौ मैच खेले थे और इस सीजन में भी ऐसा ही हो रहा है। साथ ही हमें ओनू की भी सेवाएं सात मैचों से नहीं मिल सकी हैं। बेंगलुरू की टीम ने एटीके और मुम्बई सिटी एफसी से हारने के बाद एफसी गोवा के खिलाफ ड्रॉ खेला था। ऐसे में कुआडार्ट को उम्मीद है कि उनकी टीम इस अहम मैच को जीतकर पूरे तीन अंक हासिल करेगी और गोवा तथा अपने बीच के अंतर को कम करना चाहेगी।

गोवा के मुख्य कोच सर्गियो लोबेरा इस मैच में मार्गदर्शन के लिए टीम के साथ नहीं होंगे क्योंकि चेन्नइयन एफसी के साथ हुए मैच के दौरान उनके टचलाइन पर जाने को लेकर प्रतिबंध लगा हुआ है। गोवा की उम्मीदें स्टार स्ट्राइकर फेरान कोरोमिनास पर टिकी हुई हैं। यह अलग बात है कि जुआनन और अल्बर्ट सेरान के खिलाफकोरो अपनी लय में नहीं नजर आते हैं। इसके अलावा ब्रेंडन फर्नांडिस गोवा के लिए अहम साबित हो सकते हैं। उनके नाम दो गोल और पांच एसिस्ट हैं।बेंगलुरू के कोच चार्ल्स कुआडार्ट ने कहा, फ़मुझे लगता है कि इस सीजन में हम अच्छा खेल रहे हैं। बीते सीजन में भी हम अपने स्ट्राइकर मीकू के बगैर नौ मैच खेले थे और इस सीजन में भी ऐसा ही हो रहा है।

बंगाल-गुजरात का मैच पहले दिन बारिश में धुला

कोलकाता (वार्ता)। बंगाल और गुजरात के बीच रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप मैच का पहला दिन शुक्रवार को यहां ईडन गार्डन मैदान पर बारिश के कारण बिना एक भी गेंद खेले रद्द कर देना पड़ा। मैदानी अंपायर और मैच अधिकारियों ने बारिश के कारण पहले दिन का खेल रोकने का फैसला किया। बारिश सुबह चार बजे से ही शुरू हो गयी थी जिससे मेट्रोपोलिस और दक्षिण बंगाल का पूरा क्षेत्र प्रभावित रहा और तापमान में भी गिरावट दर्ज की गयी। मौसम विभाग ने भी अगले 48 घंटे में उत्तर बंगाल से पूर्वी हिमालय में सिक्किम और दार्जिलिंग के क्षेत्रों में भी बारिश की संभावना जताई है। उल्लेखनीय है कि गत सप्ताह भी बंगाल और आंध्र प्रदेश के बीच रणजी ट्रॉफी मैच बेमौसम बारिश से प्रभावित रहा था। चार दिनों तक चलने वाला रणजी ट्रॉफी मैच दो दिन तक ही संभव हो पाया था जिससे बंगाल को आंध्र पर पहली पारी की बढ़त के आधार पर तीन अंक मिले थे।

रात के अंधेरे में चल रहा है रेत का काला कारोबार

नवप्रदेश संवाददाता

बालोद। जिले के बहुचर्चित गोड़पाल रेत खदान में इन दिनों फिर से अवैध रेत खनन की खबरें लगातार सामने आ रही हैं। रात के अंधेरे में चैन माउंटेन के जरिये धड़ल्ले से रेत की चोरी कर सैकड़ों हाइवा रेत भरकर जिला मुख्यालय की सड़कों से होते हुए अन्य जिलों में भेजी जा रही हैं। सबसे बड़ी बात यह कि यह सब जिला प्रशासन के संरक्षण में किया जा रहा हैं। क्योंकि खनिज माफिया प्रशासन के कई अधिकारियों को मुट्ठी व जेब मे रखने की बाते करने लगे है। जिसकी चर्चा हर एक चौक चौराहे में हो रही हैं।

गौरतलब हो कि जिले का सबसे बहुचर्चित गोड़पाल रेत खदान कुछ दिनों से फिर से चर्चाओं में हैं। चर्चाओं में इसीलिए हैं कि एक बार फिर से खनिज माफिया व कुछ छुटभैय्या कांग्रेसी नेताओं के द्वारा गोड़पाल रेत खदान में चैन माउंटेन के जरिये अवैध रूप से लगातार रेत का बेजा दोहन किये जा रहे है। इन खनिज माफियाओं व छुटभैय्या कांग्रेसी नेताओं को जिला प्रशासन का पूरा-पूरा संरक्षण प्राप्त हैं। अवैध रेत खदान संचालित होने की जानकारी होने के बावजूद भी जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा कड़ी कार्यवाही के नाम उल्टा खनिज माफियाओं के साथ देकर खानापूर्ति की जाती हैं।

अक्सर देखा भी गया हैं कि खनिज, राजस्व व थाने के जिम्मेदार पद पर बैठे अधिकारियों को अवैध रेत खनन की सूचना मिलते ही उल्टा मामले से खनिज माफियाओं को अवगत करा दिया जाता हैं। जिससे खनिज माफिया मौजूद हाइवा और चैन माउंटेन मशीन को छुपाने में कामयाब हो जाते हैं, और जब मौके पर अधिकारी पहुचते है तो उन्हें कुछ नही मिलता। फिर बाद में अवैध रेत से भरी एक या दो हाईवा को परिवहन करते हुए पकड़ वाहवाही बटोर लेते है। लेकिन आज तलक मौके पर कार्यवाही नही किये। इसीलिए सबसे बड़ा प्रश्न चिन्ह जिला प्रशासन के जिम्मेदार अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर लग गया हैं।

बारी-बारी से कर रहे 2 गुट काम

गोड़पाल रेत खदान का संचालन दो गुटों के जरिये किया जा रहा हैं। एक गुट को कांग्रेस के पूर्व विधायक का साथ है तो दूसरे गुट को खनिज माफियाओं सहित छुटभैय्ये कांग्रेसी नेताओं का। दोनो ही गुट बारी-बारी से गोड़पाल रेत खदान का संचालन धड़ल्ले से कर रहे हैं। सूत्रों की माने तो दूसरे गुट के द्वारा बीते 2 रात से अवैध रूप से रेत का धड़ल्ले से चैन माउंटेन मशीन के जरिये किया जा रहा हैं। जिसकी जानकारी जिला प्रशासन को भलीभांति हैं। किंतु कार्यवाही के बजाय जिला प्रशासन उल्टा सहभागिता निभा रहा हैं।

उठने लगे हैं कई सवाल, क्या होटल ललित महल में बदइंतजामी था सिर्फ एक बहाना

न्यू ईयर इवेंट का हंगामा था प्री-प्लान!

नवप्रदेश में प्रकाशित खबर

- रिटरिंग डीजे अकीरा और कार्लियो प्रोग्राम पेश नहीं किए
- इंटरनेशनल डीजे के नाम पर 5 से 50 हजार की टिकटें
- हर कैटेगिरी की टिकट के लिए वाइन ब्रांड-पैग तय था

नवप्रदेश संवाददाता

रायपुर। नए साल की शाम के लिए मौज-मस्ती और जश्न के नाम पर लोगों से 5 से 50 हजार रुपए वसूला गया था। जश्न की तैयारियों से पूर्व ही इंटरनेशनल डीजे अकीरा और कार्लियो को हायर भी कर लिया गया था। जश्न के शौकीन रईसजादों से इसके एवज में नाच, गाना, म्यूजिक, मस्ती और फूड के अलावा ब्रांडेड वाइन की पैग का कोटा भी पहले ही तय कर लिया गया था। ऐसे में ऐन न्यू ईयर की शाम 8 बजे महज शराब और खाने के लिए लोगों का यूं बवाल मचाना फिर आयोजकों का मौके से फरार हो जाना सब प्री-प्लान बताया जा रहा है। नए साल के आयोजन के रंग में यूं भंग पैदा करने के पीछे की वजह क्या थी यह तो जांच का विषय है। अपनी जेब से हजारों रुपए आयोजकों को देकर अपनी टिकट व पास बुक करवाने वाले अब खुद को ठगा महसूस कर रहे हैं। कॉरपोरेट टिकट-पास से लेकर बॉक्स कैटेगिरी की टिकटें भी थीं। अब सवाल यह उठता है कि इंटरनेशनल कैटेगिरी की डीजे आईं भी थीं या नहीं, और आई थीं तो प्रोग्राम शुरु ही नहीं हुआ और लोगों पर शराब, खाना मांगने या खत्म होने का आरोप लगाकर आयोजकों ने नाराज करने वाली बात क्यों कि जिससे सब उग्र हो गए। नाम नहीं छापने की शर्त पर न्यू ईयर पार्टी के लिए कॉरपोरेट टिकट वाले ने बताया कि यह सरासर झूठ है कि जश्न मनाने वालों ने हंगामा किया। क्योंकि रात 8 बजे तक इवेंट शुरु ही नहीं हुआ था ऐसे में कोई भी व्यक्ति जश्न के शुरुआत में शराब और खाने के लिए इतना हंगामा क्यों बरपा करेगा। ऐसे में क्यों के सवाल का एक ही जवाब है इस पूरे इवेंट की सख्ती और ईमानदारी से जांच होगी तो लाखों रुपए की ठगी करने वाली इवेंट कंपनी के पूरे आयोजन और हंगामे की सच्चाई से पर्दा भी उठ जाएगा।

होटल संचालक पर कोई केस नहीं

होटल ललित महल के मैनेजर और संचालिक पर पुलिस ने कोई केस दर्ज नहीं किया है। क्योंकि न्यू ईयर की ग्रेंड पार्टी इवेंट कंपनी ईन्फ्रारेड के संजय सिंह राजपूत, राहुल तिवारी के खिलाफ धारा 406 का तो तोड़फोड़ करने वाली अज्ञात भीड़ के खिलाफ धारा 147, 427 के तहत अपराध दर्ज किया है। फिलहाल किसी की गिरफ्तारी नहीं की गई है। वहीं होटल ललित महल के मैनेजर अजय कुमार कर्ष ने भी होटल में तोड़फोड़ करने वाले लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। इससे साफ है कि दोनों ही पक्षों से पर पुलिस कार्रवाई के बाद होटल प्रबंधक क्षतिपूर्ति का केस दायर करेंगे। वहीं इवेंट ऑर्गेनाइजर के खिलाफ विवेक दुबे ने रिपोर्ट दर्ज करवाया है।

टिकट का रेट, वसूली के पैसे और सीसीटीवी फूटेज की जांच

मंदिर हसौद थाना में दर्ज केस के बाद पुलिस ने जांच टीम बनाकर न्यू ईयर की ग्रेंड पार्टी की पूरी कुंडली बनाने में जुट गई है। आयोजनकर्ताओ व्दारा लोगों से वूसली गई पार्टी की कीमत, टिकट का रेट, पीने-खाने के लिए किये गए वादे, उपलब्ध शराब की ब्रांड, तादात भी जांच में शामिल है। इसी तरह तोड़फोड़ कब, कैसे और किसने शुरु की, उनका सीसीटीवी फूटेज व मीडिया से फोटो-फूटेज मंगवाकर पुलिस चेहरों की शिनाख्त कर रही है। बहुत जल्द ही होटल ललित महल में न्यू ईयर में फैलाए गए आयोजकों व मजा लूटने आए लोगों व्दारा न्यू सेंस के खिलाफ सख्त कार्रवाई के मूड में है।

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव का बच गया है बिगुल कांग्रेस-भाजपा अपने-अपने रणनीति के तहत लगा रही है एड़ी चोटी का जोर

नवप्रदेश संवाददाता

डौन्डीलोहारा। डौन्डीलोहारा त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों का बिगुल बजते ही पुरे जनपद क्षेत्र में जनपद पंचायंत जनपद सदस्य व सरपचों सहित जिला पंचायत के पदों में अपने पार्टी समर्थित सदस्यों को चुनावी समर में उतारने दोनों प्रमुख दल कांग्रेस व भाजपा अपनी अपनी रणनिती के तहत काम करते दिखाई दे रहे है लेकिन जमीनी हकीकत पर जाकर अगर देखा जाये तो पंचायत चुनावों में अपने सर्मथकों सहित नामांकन करने में कांग्रेस पार्टी अन्य दुसरों के मुकाबले काफी आगे निकल गई है। कांग्रेस नेताओं ने अपने समर्थित उम्मीदवारो को साथ लेकर अपनी पकड़ जनपद क्षेत्रों में बढ़ाने का काम शुरु कर दिया है। आज जनपद पंचायत कार्यालय में वर्तमान जनपद अध्यक्ष चंद्रप्रभा सुधाकर सहित देवरी ब्लाक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीवन कश्यप व उनकी टीम ने आज देवरी ब्लाक के 6 जनपद सदस्यों को साथ लेकर नमांकन दाखिल किया जिसमें पूर्व सदस्य संजीव चौधरी व केजराम सोनबाईर जाग्रीत सोनकर ठामन साहु जैसे प्रमुख लोगों ने नमांकन किया व शक्ति प्रदर्शन किया। पुर्व में भी इस जनपद पंचायत में कांग्रेस पार्टी का कब्जा रहा है जिसमे दोनों पदों पर उनके सदस्य काबिज रहे है लेकीन भाजपा नेताओं की ढीली कार्यशैली व कमजोर संगठन कार्यवाही को देखते हुय वर्तमान मे यह दिखाई दे रहा है की नामांकन से ही कांग्रेस ने अपना दबाव क्षेत्र में बनाना शुरु कर दिया है। पंचायत चुनावों में इस बार भी महिलाओं की अच्छी भागीदारी रहेगी तथा अधिंकाश सीटों पर वो भी ताल ठोकते नजर आ रहे है। जिला पंचायत की कुल संख्या 14 में से क्षेत्र क्रमांक 7 और 8 में भी कमोबेश यही स्थिति बनी हुई है। जनपद पंचायत क्षेत्र अंतर्गत 4 जिला पंचायत सीट आता है जिसमे पुर्व में 2 सीट पर कांग्रेस तो 2 सीट पर भाजपा के सदस्य जीतकर आये थे वर्तमान आरक्षण से कई लोगों को अपनी सीट छोड़कर दुसरे सीट पर जाकर चुनाव लड़ना पड़ रहा है जिसमे प्रमुख रुप से भाजपा के होरीलाल रावटे का नाम सामने आ रहा है जो कि अपने पुर्व सीट क्रमांक 6 से हटकर जिला पंचायत क्षेत्र क्रमांक 7 में चुनाव लड़ेंगें। ऐसा माना जा रहा है वही वन्य क्षेत्रों से लगे क्षेत्र क्रमांक 7 से वर्तमान सदस्य श्रीमति बुधियारिन कुमेटी के द्वारा भी दुसरी सीट से लड़ने की बात सामने आ रही है तथा इस सीट पर कांग्रेस के तरफसे पूर्व विधायक व कांग्रेस के कद्धावर नेता डोमेन्द्र भेडिया की पुत्रवधु श्रीमति बसंती बाला भेडिया के चुनाव लड़ने की चर्चा बनी हुई है।

निर्दलियों के वोट से बनेगी नगर की सरकार

कांग्रेस और भाजपा नेताओं के द्वारा निर्दलियों का मान मनोव्वल जारी

- 4 जनवरी को होगा नगर पंचायत अध्यक्ष का फैसला

डौन्डीलोहारा। नगरीय निकाय चुनाव में हुये मतदान के बाद मतगणना से आये नतीजों ने नगर पंचायत डौन्डीलोहारा के अध्यक्ष पद पर निर्णायक भुमिका मे निर्दलियों को सामने खड़ा कर दिया है। नगर पंचायत के कुल 15 पदों पर हुये चुनावों में जहां सत्ता दल कांग्रेस को मात्र 3 सीट मिली है वही भाजपा को 5 सीटें मिली है तो निर्दलियों ने सबसे अधिक 7 सीटें जीतकर दोनों दलों के बीच अपनी अहमियत बढ़ा दी है जिससे अध्यक्ष पद चुनावों में इन 7 निर्दलिय पार्षदों का मत काफी मायने रख रहा है अध्यक्ष पद चुनाव के लिये समय सीमा तय होते ही इनको साधने व अपने पाले में लाने दोनो प्रमुख दल कोई कसर नही छोड़ रहे है वैसे डौन्डीलाहारा विधानसभा की इस हाईप्रोफाइल नगर पंचायत सीट पर प्रदेश सरकार की महिला बाल विकास मंत्री श्रीमति अनिला भेंडिया की प्रतिष्ठा भी दांव पर लगी है ऐसी जनचर्चा नगर सहित क्षेत्र में बनी हुई है वही भाजपा नगर पंचायत में फिर से काबिज हो कर नगर की सरकार अपने हाथों में लेने काफी मशक्कत करती दिख रही है सुत्रों की माने तो अध्यक्ष पद चुनावों में महज दो दिन शेष है और अदंरुनी चर्चाओं की माने तो वोटिंग से पहले तीन पार्षदों की संख्या वाली कांग्रेस पार्टी ने अपनी संख्या को बढ़ाते हुये चार निर्दलिय पार्षदों को अपने पाल में लाकर पार्षदों की संख्या 7 कर लीया है वही जीत के लिये उसे महज 1 पार्षद की आवश्यकता है वही भाजपा 5 पार्षद होने के बावजुद 3 निर्दलिय पार्षदों कमशः श्रीमति दशोदा भुआर्य वर्तमान पार्षद व वार्ड 13 कि भाजपा की पुर्व पार्षद रही है व नरायण सिन्हा जो कि वार्ड 14 से निर्दलिय जीत कर आये है वही श्रीमति अनिता साहू वार्ड 15 भी निर्दलिय जीत कर आये है इन्ही तीनों पर अपना दांव खेल रही है व जीत का सारा दरोमदार इन्ही पर मान कर आगे कदम बड़ा रही है निकाय चुनावों के घोषणा के पुर्व अचार संहिता लगने के कुछ ही दिनों पुर्व नगर में करोड़ो रुपये के विकास कार्यों के लोकार्पण व भुमिपुजन का दांव भी कांग्रेस को हार से उबार नही पाया।

पार्षदों को सैर सपाटे पर भेजा गया

निकाय चुनावों में जीतकर आये 7 पार्षदों को दोनो दलों से काफी वजनदार आफर मिलने की चर्चा भी नगर में कुछ दिनों से चल रहा है वही जानकर लोग बता रहे है कि कांग्रेस ने जंहा अपने तीन पार्षदों के साथ साथ 4 निर्दलियों को गिलाकर अनंजान जगह शिप्ट कर दिया है व उनको सैर सपाटे पर ले गये है वही भाजपा अपने 5 पार्षदों को भी नगर से दुर किसी अनजान जगह पर ले जाकर सैर करा रहे है और बचे 3 पार्षद नगर में अपने अपने निवास में रुके हुये है जिनपर दोनो दलों के नेतागण अपनी निगाह लगाये हुये हूं व उनको अपने पक्ष में वोट कराने के लिये काफी कोशिश कर रहे है।

मिलने लगे लुभावने ऑफर

पुर्व अनुमानों के अनुसार नगरीय निकाय चुनावों में नये चुनाव प्रणाली से चुनाव की घोषणा के पश्चात जो बातें सामने आ रही थी की इस तरह से सीधे अध्यक्ष चुनाव न कराकर निर्वाचित पार्षदों के द्वारा अध्यक्ष चुनने की प्रणाली से चुनावों में अप्रत्यक्ष रुप से सीधे सीधे धनबल का खुले आम इस्तेमाल होगा व अध्यक्ष पद में अपने आपको काबिज करने सभी दलों के द्वारा पैसा का खुला उपयोग करने की संभावना बन जायेगी और अदंरुनी तौर पर यह महसूस भी होने लगा है कि अध्यक्ष चुनावों में कही धनबल का उपयोग तो नही होगा क्योंकि पार्षदों को बाहर भेजने व लुभाने के नये नये प्रयास जारी है।

डौन्डीलोहारा सीट पर लग रही ताकत

डौन्डीलोहारा नगर पंचायत की सीट प्रदेश सरकार में केबिनेट मंत्री महिला बाल विकास व समाज कल्याण विभाग श्रीमति अनिला भेंडिया का सीट होने के साथ साथ उनका निवास स्थान भी है जंहा पर उनकी उपस्थिति होने व निकाय चुनावों में नगर में काफी मेहनत करने बैठके करने के बावजुद उनकी पार्टी को मात्र 3 सीट मिला है जिस कारण उनके राजनितिक प्रभाव क्षेत्र में कमी की बात कही जा रही है क्योंकि मंत्री महोदया के क्षेत्र डौन्डीलोहारा विधानसभा के नगर पालिका दल्ली राजहरा में भाजपा को जीत के लिये मात्र 1 पार्षद की कमी है वहां भी कांग्रेस काफी पीछे है वही चिखलाकसा नगर पंचायत में भाजपा ने अपनी बहुमत की संख्या को पा लिया है तो डौन्डी नगर पंचायत में भी कमोबेश भाजपा काफी आगे नजर आ रही है जिस कारण पुरे क्षेत्र में कांग्रेस निकाय चुनावों में काफी कमजोर हुई है और भाजपा नगर सरकार बनाने की दौड़ में अभी आगे बनी हुई है।

निकाय चूनावों में महिलाओं का दबदबा

नगर पचायत चुनावों में कूल 15 पार्षदों में हुये मतगणना के आद आये नतीजो में पहली बार 10 महिला पार्षदों को चुनाव में जनता ने जीताकर नगर पंचायत में भेजा है व नगर पंचायत अध्यक्ष पद भी पिछड़ा वर्ग महिला के लिये आरक्षित है इससे यह तय हो गया है कि आने वाले 5 वर्षों के लिये नगर विकास की सारी जिम्मेदारी नगर की बनने वाली अध्यक्ष महिला नेत्री के हाथों में होगी तथा उनको जनता के विश्वास को पुरा करने की काफी बड़ी चुनौती उनके उपर होगी।

विवादों से मिली सुर्खिया

नगर पंचायत डौन्डीलोहारा गठन के बाद से ही काफी विवादों में बना रहा है पंचायत कार्यकाल में गठन पश्चात ज्ञान उपाध्याय प्रथम नगर पंचायत अध्यक्ष बने वही दुसरे कार्यकाल में श्रीमति पदमावती देंवागन तिसरे कार्यकाल में लाल भूपेन्द्र सिंह टेकाम तो चौथी पारी में प्रेमचंद भंसालो अध्यक्ष पर पर निर्वाचित हुये थें करोड़ो रुपये की सरकारी आंबटन के बाद गी नगर का समुचित विकास न होना व पांच वर्षो के कार्यकाल गें लगातार मुख्य नगर पालिका अधिकारी के पद पर आया राम गया राम वाली कहावत का चरितार्थ होना ही नगर पंचायत की सबसे बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है।